मूल्य - 20

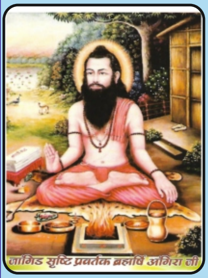


अंगिराऽसि जंगिडः

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा का मासिक पत्र

# जांगिड ब्राह्मण

# JANGID BRAHMIN

वर्षः 119, अंकः 08, अगस्त -2026 ई., तारीख 22-27 प्रति माह

श्री विश्वकर्मणे नमः

POSTED UNDER LICENCE NO. U(DN) 39/2024-26 OF POST WITHOUT PREPAYMENT OF POSTAGE

भारत के 80 वें स्वतंत्रता दिवस एवं भाई - बहिन के अटूट रिश्ते, रक्षा बंधन के पावन पर्व पर आप सभी को मेरी ओर से हार्दिक बधाई एवं मंगलकामनाएँ।

रामपाल शर्मा

प्रधान- श्री रामपाल शर्मा

सम्पादक- रामभगत शर्मा

शुभलाभ
GREEN VALLEY
2&3 BHK LUXURIOUS FLAT
& SHOPS

शुभलाभ
VINTAGE
VILLA
6 BHK Luxurious Villas

THE
VINTAGE
by शुभलाभ
3 BHK Premium Living

शुभलाभ
HERITAGE
3 | 4 BHK Heritage Living
& Penthouse

शुभलाभ
SQUARE
Showrooms | Corporate
Entertainment

शुभलाभ®
GROUP

AHMEDABAD

THE VINTAGE
Naroda- Dehgam Road
Opp. Shyam Valencia Bungalow
New Naroda, A'bad-382230

Nilesh Sharma 96388 00449
Anurag Sharma 83201 68811

शुभलाभ
HEIGHTS
2 | 3 BHK Premium Living

SENTOSA
ROYAL BUNGALOW
4 BHK Royal Living Homes

PALATE
RESTAURANT & BANQUET

GRAND
Neelkanth
banquet & restaurant
100-1000 Capacity Banquet

FITNESS FUEL
365 Days Open, Luxurious Gym

SUZUKI

Shri Dharamveer Ji

Mr. Vipin Kumar
M. 9911402402

Mr. Vikas Sharma
M. 9911141118

# DHARAM SUZUKI

Authorised Dealership Of Suzuki Motorcycle India Private Limited.

**Showroom & Workshop**

A-12, Amanpuri, Najafgarh Road, Nangloi, Delhi-110041

M. 9911401401

**Showroom**

RR-26, Mianwali Nagar, Rohtak Road, Peeragarhi, Delhi-110086

M. 7065711133

BURGMAN STREET Access125 Avenis GIXXER SF

# INTERIO CRAFT

**MERGER OF ROYAL, SG AND KRISHNA INTERIORS**

With its existence over three and half decades,we have carved a niche in the segment of providing complete interior solutions to various corporates houses, retail stores & residences pan India.

## Our Management Team

Rampal Sharma

Deepak Sharma

Jagmohan Sharma

Amith Sharma

**OUR STRENGTHS**

- QUALITY OF WORK
- SERVICE COMMITMENT
- ON TIME COMPLETION
- PRICING

## Our Sister Concerns:

- Krishna Ventures
- Krishna Retails
- SG Ventures
- NR Retails

## Our Franchise Stores

- N R Retails, Uspolo Store, Kammanahalli, BANGALORE
- Uspolo Store, Vega City Mall, BANGALORE
- Krishna Retails, Uspolo Store, USPA-Forum Sujana Mall, HYDERABAD
- Flying Machine, FM-Forum, Sujana Mall, HYDERABAD
- Uspolo Kids, USPA kids-Sarat City Mall, HYDERABAD
- Uspolo Denim, USPA Denim - Sarat City Mall, HYDERABAD
- Flying Machine, FM -Sarat City Mall, HYDERABAD
- Krishna Ventures, Mega Mart, Mega Mart - Kotputli, JAIPUR
- Third Wave Coffee, Bel Road, BANGALORE
- Wrogn Store, L&T Mall, HYDERABAD
- Swish Salon, BANGALORE

## OUR SERVICES

**ON SITE**

- Carpentry
- Painting
- Tiling
- Marble Work
- Electrical & Lighting
- Civil
- Plumbing...

**OFF SITE**

- Production of Furniture
- Metal Works

**WE ARE TURNKEY INTERIOR SOLUTION PROVIDERS**

**WE MAKE THEM LOOK AESTHETICALLY RICH AND BEAUTIFUL**

## Reach us:

**Corporate Office:** No 13/14 Royal Chambers, 3rd Floor, Dodda Banaswadi, Outer Ring Road, Near Vijaya bank Colony, Bengaluru, Karnataka 560043

080 2542 6161

projects@interiocraft.com

www.interiocraft.com

## Some of our Valuable Clients

FLYING MACHINE, U.S. POLO ASSN., AÉROPOSTALE, ARROW, LP LOUIS PHILIPPE, PETER ENGLAND, NAUTICA, GAP, trueblue, GANT, Allen Solly, VAN HEUSEN, lifestyle, max, homecentre, ZOYA, TANISHQ, TANEIRA, TITAN, Helios, fastrack, TITAN eyeplus, Mia, MELORRA, CENTRO, BIRKENSTOCK, THIRD WAVE COFFEE, SWAYAMVAR, SHOPPERS STOP, BLUESTONE, SS BEAUTY, SWISH, TASVA, Manyavar

## ''जांगिड ब्राह्मण महासभा पत्रिका'' के नियम एवं उद्देश्य

1. समाज के सभी वर्ग के व्यक्तियों के सर्वांगीण विकास के लिए नवाचार करना।
2. साहित्य सृजन, आध्यात्मिक चेतना एवं आत्मविश्वास को प्रोत्साहन देना।
3. सामाजिक गतिविधियों के अन्तर्गत केन्द्रीय, प्रादेशिक, क्षेत्रीय एवं स्थानीय समाचारों को प्रकाशित करना।
4. सामाजिक शिक्षा, वैज्ञानिक तकनीकी एवं शिल्पोन्नति संबंधी निबंध तथा लेखों आदि को प्रकाशित करना।
5. समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करना तथा उन्मूलन के लिए विकास की ओर उन्मुख होने का संचरण करना।
6. पत्रिका प्रत्येक अंग्रेजी माह की 22-27 तारीख को प्रकाशित होती है।
7. लेखों व अन्य प्रकाशनार्थ भेजी गयी सामग्री को छापने, न छापने तथा घटाने-बढ़ाने का पूर्ण अधिकार सम्पादक के पास सुरक्षित है।
8. व्यक्तिगत तथा विवादास्पद लेख पत्रिका में प्रकाशित नहीं किए जाएंगे।
9. लेखन सामग्री भेजने वाले स्वयं उसके लिए उत्तरदायी होंगे।
10. नमूने का अंक उपलब्ध होने पर ही भेजा जा सकता है।

## 'जांगिड ब्राह्मण' महासभा की सदस्यता दर

**(01-10-2018 से )**

| सदस्यता | रुपये |
|---|---|
| प्लैटिनम सदस्य | 1,00,000/- |
| स्वर्ण सदस्य | 51,000/- |
| रजत सदस्य | 25,000/- |
| विशेष सम्पोषक | 21,000/- |
| सम्पोषक सदस्य | 11,000/- |
| संरक्षक (पत्रिका सहित) | 2,100/- |
| संरक्षक (पत्रिका रहित) | 500/- |
| वार्षिक पत्रिका शुल्क | 240/- |
| मासिक पत्रिका शुल्क | 20/- |

### विज्ञापन शुल्क की दरें

**टाईटल का अंतिम पृष्ठ (रंगीन)**
मासिक 10000/-,वार्षिक 100000/-

**अन्दर का पूरा पृष्ठ (रंगीन)**
मासिक 6000/-,वार्षिक 61000/-

**अन्दर का आधा पृष्ठ (रंगीन)**
मासिक 4000/-, वार्षिक 41000/-

**अन्दर का पूरा पृष्ठ (साधारण)**
मासिक 3000/-, वार्षिक 31000/-

**अन्दर का आधा पृष्ठ (साधारण)**
मासिक 1500/-, वार्षिक 17000/-

**अन्दर का चौथाई पृष्ठ (साधारण)**
मासिक 750/-,वार्षिक 8500/-

**वैवाहिक विज्ञापन**
मासिक 201/-

स्वामित्व एवं सर्वाधिकार सुरक्षित
पंजीकृत सं. एस.-27/1919

# अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा

**प्रधान कार्यालय**
440, हवेली हैदरकुली, चांदनी चौक, दिल्ली-110006
दूरभाषः- 011-45516719 , 9990070023
Website: www.abjbmahasabha.com
E-mail: jangid.mahasabha@gmail.com

### सम्पर्क सूत्र

प्रधान-पं.रामपाल शर्मा ''जांगिड'' - 09844026161
महामंत्री-पं.सांवरमल ''जांगिड'' - 09414003411
सम्पादक-पं.रामभगत शर्मा ''जांगिड'' - 09814681741
सह सम्पादक-पं.प्रहलाद राय शर्मा ''जांगिड''- 08140229679

UPI ID: akhilbhartiyajangidbrahminmahasabha@sbi

## महासभा बैंक खाता

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा के स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया खाता नं. **61012926182, (IFSC Code: SBIN0006814)** में किसी भी स्थान से बैंक (शाखा-एसबीआई, मुण्डका, नई दिल्ली-41) में 49000/- रू. प्रतिदिन नकद जमा करवाए जा सकते हैं। जमाकर्ताओं से अनुरोध है कि नकद जमापर्ची / चेक /Neft जमापर्ची पर पाने वाले का नाम **"अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा"** अवश्य लिखें तथा जमा राशि का सम्पूर्ण विवरण महासभा को आवश्यक रूप से प्रेषित करें। महासभा को दिया गया दान आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80-G के तहत छूट के लिए मान्य है। दानदाता अपनी आयकर विवरणी दान पर आयकर छूट के लिए दावा कर सकते है।

**अरूण कुमार (अनिल जांगिड)**
**कोषाध्यक्ष महासभा, मो. 9810988553**

**॥ ओ३म् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥**

# अनुक्रमणिका

07. संपादकीय...
09. प्रधान की कलम से...
11. प्रदेशाध्यक्ष एवं प्रभारी की आगामी मीटिंग सूचना-चेन्नई
12. महासभा की आगामी त्रैमासिक मीटिंग सूचना-चेन्नई
13. संविधान संशोधन हेत आवश्यक सूचना
14. जातिगत जनगणना में जांगिड ही हमारी सामूहिक पहचान बने
15. बेंगलूरू में आयोजित महासभा मीटिंग का सार
21. स्वतंत्रता दिवस पर प्रधानजी द्वारा बैंगलूरू मे झण्डारोहण.
22. रक्षा बंधन : भारतीय संस्कृति का सनातन रक्षा-सूत्र
24. हम सबका राष्ट्रीय पर्व - स्वतंत्रता दिवस
25. रामानंदी संप्रदाय की एक प्रमुख पीठ - रैवासा धाम
26. समाज के प्रतिभावान और आर्थिक रूप से कमजोर..
27. जोधपुर के प्रख्यात चित्रकार डॉ. ज्योति स्वरूप शर्मा को.
29. ऋषि अंगिरा फाउंडेशन, बाड़मेर के 30वें शिक्षा भूषण..
30. स्वजातीय इतिहास अध्ययन से सामाजिक संस्कृति...
32. जीवन में सत्संग रूपी वैतरणी से ही संसार रूपी नैया पार
33. जांगिड समाज भवन, नाशिक में स्वतंत्रता दिवस पर..
34. मिशन 1.50 लाख - समाज की एकता, .. का अभियान..
35. दाँतों का स्वास्थ्य : जागरूकता, बचाव और नियमित.
36. महासभा महिला प्रकोष्ठ राज० द्वारा जोधपुर में लहरिया..
37. 'प्रेरणा और प्रयास से परिणाम तक' कार्यक्रम का..
38. चतुर्थ सामूहिक विवाह सम्मेलन - सादगी, संस्कार...
39. विश्वकर्मा मंदिर, पटेलनगर, इंदौर में कार्यालय कक्ष का..
40. इंदौर के लाभ मंडपम ऑडियोटोरिम में आयोजित..
41. परिवार में संयुक्त संवाद ही परिवार की वास्तविक प्रगति..
42. जांगिड विद्यार्थी चैरिटेबल ट्रस्ट ने पूजा जांगिड को ..
43. कुमारी खुशबू जांगिड की उपलब्धि ने बढ़ाया जांगिड...
44. श्री संतोष कुमार चोयल जिला सभा के अध्यक्ष पद पर ..
45. शुभकामना एवं बधाई - NEET-UG
46. सुरभि जांगिड ने पेंटिंग के माध्यम से अपनी प्रतिभा का..
47. आर्थिक तंगी के बावजूद हिमांशी जांगिड ने जर्मनी में हुई
48. नीरज जांगिड ने राजस्थान प्रशासनिक सेवा में 53वां
49. अच्छे कार्यों का सम्मान, समाजसेवा को नई प्रेरणा ..
50. प्लैटिनम सदस्य.. 52.स्वर्ण, रजत सदस्य..
53. वर्तमान प्रधान के कार्यकाल में बने प्लैटिनम सदस्य..
58. यश जांगिड को मिली कॉल्ड टू द बार उपाधि....
59. वैवाहिक विज्ञापन., गुरु पूर्णिमा : भारतीय ज्ञान परम्परा..
60. श्रद्धांजलि सुमन ,
61. बेंगलुरू और मुड़का भवन मे स्वतंत्रता दिवस की झलकियां

**प्रचार सामग्री (विज्ञापन)**

**शुभ लाभ ग्रुप**
**धरम सुजुकी**
**कृष्णा इंटीरियर**
**भारत व्हील**
**शर्मा एंड कंपनी**
**भागीरथ मोटर्स**

## न्यायिक क्षेत्र

सभी न्यायिक मामलों में महासभा के किसी भी पदाधिकारी के विरूद्ध महासभा सम्बन्धी मामले में कानूनी कार्यवाही के लिये न्यायिक क्षेत्र दिल्ली ही होगा।

## विनम्र निवेदन

**(1)** 'जांगिड ब्राह्मण' पत्रिका हर माह की 22 से 27 तिथि तक नियमित रूप से भेज दी जाती है, जो आपको 3-7 दिन में मिल जानी चाहिए।

**(2)** जिन आदरणीय सदस्यों को पत्रिका नहीं मिल पा रही है वे कृपया अपने सम्बन्धित डाक घर में लिखित शिकायत करें और इसकी एक प्रति महासभा कार्यालय में भी भेजें ताकि महासभा कार्यालय भी अपने स्तर पर मुख्य डाकपाल अधिकारी को यह शिकायत आप की फोटो प्रतियों के साथ भेज सके।

हमारे पास बहुत सारी पत्रिकाएं डाक कर्मचारी की इस टिप्पणी के साथ वापिस आ रही है, कि 'पते में पिता का नाम नहीं', 'इस पते पर नहीं रहता', 'पता अधूरा है', 'पिन कोड' बिना भी पत्रिका वापिस आ रही है। यदि आपके पते में उपरोक्त अशुद्धियाँ है तो लिखित रूप में महासभा कार्यालय में भेजें ताकि शुद्ध किया जा सके। हम आपको विश्वास दिलाते है कि प्रत्येक सदस्य को कार्यालय से प्रतिमाह 22 से 27 तिथि को पत्रिकाएं भेज दी जाती है।

**(3)** समाज के प्रबुद्ध लेखकों, विद्वानों से निवेदन है कि रचनाओं की छाया प्रति न भेजें, वास्तविक प्रति ही सुस्पष्ट, सुन्दर लेख में लिखकर या टाइप कराकर भेजें। वैवाहिक विज्ञापन एवं इसका शुल्क, अन्य लेख व प्रकाशन सम्बन्धी सभी प्रकार की सामग्री हर माह की 10 तारीख तक महासभा कार्यालय में अवश्य पहुंच जानी चाहिए।

कृपया ध्यान दें! बार बार निवेदन करने पर भी लेखक अपनी रचनाएँ अस्पष्ट हस्तलिखित तथा छोटे से कागज पर भेज रहे है। जिससे हमेशा पढ़ने में असुविधा हो रही है। ऐसे लेख प्रकाशित नहीं हो पाएंगे।

**(4)** आपसे यह भी निवेदन है कि प्रत्येक रचना के अंत में यह घोषणा अवश्य करें कि यह रचना मेरी मौलिक रचना है और अभी तक कहीं प्रकाशित या प्रसारित नहीं हुई है। यदि किसी अन्य स्रोत से ली गई है - तो उसका संदर्भ अवश्य दे तथा लेख के अन्त में अपना नाम, पता, फोन नम्बर हस्ताक्षर सहित अवश्य लिखें।

**(5)** पत्रिका के विषय में प्रबुद्ध लेखकों के सुझाव सादर आमंत्रित है।

**(6)** अस्वीकरण-पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों के व्यक्तिगत विचार होते हैं। महासभा का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है।

**- सम्पादक**

**इस पत्रिका में अभिव्यक्त विचारों से सम्पादक अथवा महासभा का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। इसमें प्रकाशित सभी रचनाओं में अभिव्यक्त विचारों, तथ्यों आदि की शुद्धता तथा मौलिकता का पूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है।**

# सम्पादकीय-------

## आजादी का अमृत संकल्प : क्या हम स्वतंत्रता के सच्चे अर्थ को जी पा रहे हैं?

15 अगस्त वह पावन दिन है जब सदियों की पराधीनता, संघर्ष, त्याग, बलिदान और अनगिनत देशभक्तों की कुर्बानियों के बाद भारत ने स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में नई यात्रा प्रारम्भ की थी। लेकिन स्वतंत्रता दिवस केवल उत्सव मनाने का अवसर नहीं, बल्कि आत्ममंथन का भी दिन है।

**हर वर्ष हम स्वयं से यह प्रश्न करें कि जिन महान स्वतंत्रता सेनानियों ने जिस भारत का सपना देखा था, क्या आज का भारत उस दिशा में आगे बढ़ रहा है? क्या हम स्वतंत्रता के वास्तविक अर्थ स्वाभिमान, समान अवसर, न्याय, सामाजिक समरसता, ईमानदारी और जिम्मेदार नागरिकता को अपने जीवन में उतार पाए हैं?**

भारत को आजादी आसानी से नहीं मिली थी। असंख्य ज्ञात-अज्ञात वीरों ने अपना सर्वस्व राष्ट्र के लिए समर्पित कर दिया। स्वतंत्रता सेनानियों का उद्देश्य केवल अंग्रेजी शासन को हटाना नहीं था । बल्कि वे एक ऐसे भारत का निर्माण चाहते थे जिसमें नागरिक सम्मान के साथ जीवन जी सकें, जहां न्याय सर्वोपरि हो और जहां व्यक्ति की पहचान उसकी योग्यता और कर्म से हो।

आज 79 वर्षों की स्वतंत्रता के बाद जब हम पीछे मुड़कर देखते हैं तो निश्चित रूप से भारत की उपलब्धियां गौरवपूर्ण हैं। कृषि, उद्योग, विज्ञान, तकनीक, अंतरिक्ष, डिजिटल क्रांति, आधारभूत ढांचे, शिक्षा, चिकित्सा, रक्षा और वैश्विक कूटनीति जैसे अनेक क्षेत्रों में भारत ने उल्लेखनीय प्रगति की है। कभी भोजन के लिए विदेशों पर निर्भर रहने वाला भारत आज दुनिया की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में गिना जाता है। लेकिन विकास की यह कहानी अभी अधूरी है।

**क्या हमने सही मायने में आजादी हासिल कर ली है?** यह प्रश्न किसी निराशावाद से नहीं, बल्कि राष्ट्र के प्रति जिम्मेदारी की भावना से पूछा जाना चाहिए। **राजनीतिक स्वतंत्रता हमें 1947 में मिल गई, लेकिन क्या सामाजिक और आर्थिक स्वतंत्रता प्रत्येक भारतीय तक पहुंची है? क्या हर नागरिक को समान अवसर उपलब्ध है? क्या गरीब व्यक्ति को भी वही न्याय और सम्मान मिलता है जो प्रभावशाली व्यक्ति को मिलता है? क्या हमारी व्यवस्था भ्रष्टाचार से पूरी तरह मुक्त हो पाई है? क्या जाति, क्षेत्र, भाषा और धर्म के आधार पर होने वाले भेदभाव ने पूरी तरह हमारा साथ छोड़ा है?** इन प्रश्नों के उत्तर हमें आत्ममंथन के लिए मजबूर करते हैं।

भ्रष्टाचार आज भी राष्ट्र की प्रगति के मार्ग में बड़ी चुनौती है। भ्रष्टाचार विकास के संसाधनों को कमजोर करता है और आम नागरिक का व्यवस्था पर विश्वास कम करता है।

इसी प्रकार जातिवाद भी हमारे सामाजिक विकास के सामने एक बड़ी चुनौती है। राजनीति का अपराधीकरण लोकतंत्र के लिए गंभीर चिंता का विषय है। राजनीति समाज सेवा और राष्ट्र निर्माण का माध्यम होनी चाहिए। जब राजनीति में धनबल, बाहुबल और आपराधिक प्रवृत्तियों का प्रभाव बढ़ता है तो लोकतांत्रिक संस्थाओं पर जनता का विश्वास प्रभावित होता है।

परिवारवाद भी लोकतांत्रिक व्यवस्था के सामने एक चुनौती है। राजनीति किसी परिवार की निजी संपत्ति नहीं हो सकती। राजनीतिक दलों और समाज दोनों को ऐसी व्यवस्था विकसित करनी होगी जिसमें सामान्य परिवार से आने वाला योग्य, ईमानदार और कर्मठ व्यक्ति भी आगे बढ़ सके।

आज भारत युवा देश है। युवा केवल नौकरी पाने वाला व्यक्ति नहीं है। इसलिए शिक्षा का उद्देश्य केवल डिग्री प्राप्त करना नहीं होना चाहिए। शिक्षा ऐसी हो जो कौशल, चरित्र, विवेक, वैज्ञानिक सोच और जिम्मेदार नागरिकता विकसित करे। नई पीढ़ी को सही मार्गदर्शन की सबसे अधिक आवश्यकता है।

आज इंटरनेट और सोशल मीडिया ने ज्ञान के दरवाजे खोल दिए हैं, लेकिन इसी के साथ गलत सूचना, नशे की प्रवृत्ति, दिखावे की संस्कृति, साइबर अपराध और समय की बर्बादी जैसी चुनौतियां भी सामने आई हैं। हमें ऐसी पीढ़ी चाहिए जो मोबाइल चलाने के साथ-साथ पुस्तक भी पढ़े, अपने अधिकारों के साथ अपने कर्तव्यों को भी समझे, सफलता के साथ संस्कारों को भी महत्व दे

और व्यक्तिगत प्रगति के साथ राष्ट्र की प्रगति को भी अपना लक्ष्य बनाए।

यह स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं होना चाहिए कि भारत ने बहुत विकास किया है। लेकिन यह भी उतना ही सत्य है कि भारत को अभी बहुत विकास करना है। आज भी देश के अनेक ग्रामीण और दूरदराज क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं, रोजगार, पेयजल, परिवहन और आधुनिक आधारभूत संरचना की आवश्यकता है।

स्वतंत्रता की रक्षा केवल सीमा पर तैनात सैनिक नहीं करते। सैनिक हमारी सीमाओं की रक्षा करते हैं, लेकिन देश की आंतरिक मजबूती भी राष्ट्रीय सुरक्षा का महत्वपूर्ण आधार है। सीमाओं पर तनाव, आतंकवाद, साइबर हमले, दुष्प्रचार, आर्थिक प्रतिस्पर्धा और वैश्विक शक्ति संतुलन जैसी परिस्थितियां हमें हमेशा सजग रहने की सीख देती हैं। मजबूत भारत केवल मजबूत सेना से नहीं, बल्कि मजबूत समाज, मजबूत अर्थव्यवस्था और मजबूत लोकतांत्रिक संस्थाओं से बनता है।

स्वतंत्र भारत की सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक है, लोकतंत्र की निरंतरता। विविधताओं से भरे इस विशाल देश में लोकतांत्रिक व्यवस्था को इतने लंबे समय तक सफलतापूर्वक चलाना अपने आप में ऐतिहासिक उपलब्धि है। लेकिन लोकतंत्र केवल चुनाव का नाम नहीं है। लोकतंत्र का अर्थ है, संविधान का सम्मान, कानून का शासन, स्वतंत्र संस्थाएं, नागरिक अधिकारों के साथ नागरिक कर्तव्य और असहमति के प्रति सम्मान।

हमें यह समझना होगा कि राजनीतिक मतभेद लोकतांत्रिक व्यवस्था का हिस्सा हैं, लेकिन राजनीतिक विरोध को व्यक्तिगत शत्रुता में बदलना लोकतंत्र को कमजोर करता है। हमें अपने लोकतंत्र को मजबूत करने के लिए जाति, धर्म, क्षेत्र, व्यक्तिगत लाभ या क्षणिक भावनाओं के आधार पर नहीं, बल्कि उम्मीदवार के चरित्र, योग्यता, कार्य और राष्ट्र के प्रति दृष्टिकोण को देखकर निर्णय लेना होगा।

आजादी की शताब्दी वर्ष 2047 अब दूर नहीं है। आने वाले 21 वर्षों में हमें ऐसा भारत बनाने का संकल्प लेना होगा जो आर्थिक रूप से शक्तिशाली होने के साथ सामाजिक रूप से समरस, वैज्ञानिक रूप से सक्षम, नैतिक रूप से मजबूत और लोकतांत्रिक मूल्यों में दृढ़ हो। **हमें केवल यह नहीं सोचना कि सरकार क्या करेगी। हमें यह भी पूछना होगा, मैं क्या कर सकता हूं?**

सच्ची आजादी का अर्थ केवल विदेशी शासन से मुक्ति नहीं है। जब बच्चा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से वंचित न हो, वह आजादी है। जब युवा अपनी योग्यता के अनुरूप अवसर प्राप्त कर सके, वह आजादी है। जब गरीब व्यक्ति न्याय के लिए किसी प्रभावशाली व्यक्ति का मोहताज न हो, वह आजादी है। जब महिला सुरक्षित और सम्मानित वातावरण में आगे बढ़ सके, वह आजादी है। जब किसान अपने परिश्रम का उचित सम्मान और प्रतिफल प्राप्त कर सके, वह आजादी है। जब समाज जाति और संकीर्णता से ऊपर उठकर मानवता और राष्ट्र को प्राथमिकता दे, वह आजादी है। और जब नागरिक अपने अधिकारों के साथ अपने कर्तव्यों को भी समझे, तभी लोकतंत्र वास्तव में मजबूत होगा।

**इस 15 अगस्त को हमें केवल तिरंगा फहराकर और राष्ट्रगान गाकर अपने कर्तव्य की इतिश्री नहीं करनी चाहिए।** हमें अपने भीतर एक छोटा-सा संकल्प भी जगाना चाहिए। हम भ्रष्टाचार को बढ़ावा नहीं देंगे। हम जातीय और सामाजिक वैमनस्य नहीं फैलाएंगे। हम कानून और संविधान का सम्मान करेंगे। हम अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा और संस्कार देंगे। हम युवाओं को सही दिशा देने में सहयोग करेंगे। हम महिला सम्मान और सामाजिक समरसता को बढ़ावा देंगे। हम पर्यावरण की रक्षा करेंगे। हम सार्वजनिक संपत्ति को अपनी संपत्ति समझेंगे। **हम मतदान को अधिकार के साथ जिम्मेदारी भी मानेंगे और सबसे महत्वपूर्ण - हम भारत की एकता, अखंडता, लोकतंत्र और स्वतंत्रता की रक्षा के लिए सदैव सजग रहेंगे।**

स्वतंत्रता सेनानियों ने हमें एक स्वतंत्र भारत सौंपा था। अब हमारी जिम्मेदारी है कि हम आने वाली पीढ़ी को और अधिक मजबूत, समृद्ध, शिक्षित, सुरक्षित, आत्मनिर्भर और संस्कारित भारत सौंपें।

आइए, इस स्वतंत्रता दिवस पर हम स्वयं से एक प्रश्न करें - **"देश ने मुझे क्या दिया?"** से पहले **"मैंने देश को क्या दिया और आगे क्या दे सकता हूं?"** यही विचार स्वतंत्रता के अमृत को सार्थक करेगा।

आइए, उन ज्ञात-अज्ञात शहीदों को नमन करते हुए हम संकल्प लें कि उनके सपनों के भारत को केवल भाषणों में नहीं, बल्कि अपने कर्मों में साकार करेंगे। तिरंगा हमारी शान है, संविधान हमारा मार्गदर्शक है, लोकतंत्र हमारी शक्ति है और राष्ट्र हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता। स्वतंत्रता दिवस के इस पावन अवसर पर समस्त जांगिड ब्राह्मण समाज एवं देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं।

**जय हिन्द! वन्दे मातरम्!**

**प्रहलादराय जांगिड, सह सम्पादक - जांगिड ब्राह्मण पत्रिका**

## प्रधान की कलम से..............

**प्रिय समाज बंधुओं, मातृशक्ति, युवा साथियों एवं देश-विदेश में निवास करने वाले समस्त जांगिड समाज के सम्मानित सदस्यों, भारत के 80वें स्वतंत्रता दिवस एवं भाई - बहिन के अटूट रिश्ते, रक्षा बंधन के पावन पर्व पर आप सभी को मेरी ओर से हार्दिक बधाई एवं मंगलकामनाएँ।**

**प्रधान,रामपाल शर्मा**

15 अगस्त केवल एक तिथि नहीं है, यह भारत की अस्मिता, स्वाभिमान, आत्मगौरव और राष्ट्रीय चेतना का प्रतीक है। यह वह दिन है जब हम उन लाखों ज्ञात-अज्ञात वीर सपूतों, क्रांतिकारियों,संतों, समाज सुधारकों और स्वतंत्रता सेनानियों के त्याग, तप, संघर्ष और बलिदान को श्रद्धापूर्वक नमन करते हैं, जिनके कारण आज हम स्वतंत्र भारत में सम्मान और स्वाभिमान के साथ जीवन जी रहे हैं। स्वतंत्रता हमें सहज रूप से प्राप्त नहीं हुई, बल्कि इसके लिए अनेक पीढ़ियों ने अपना सर्वस्व राष्ट्र के चरणों में अर्पित किया। इसलिए स्वतंत्रता का यह पर्व केवल उत्सव नहीं, बल्कि कर्तव्य और उत्तरदायित्व का भी स्मरण कराता है।

भारत विश्व की सबसे प्राचीन और महान सभ्यताओं में से एक है। हमारी संस्कृति हजारों वर्षों से मानवता, ज्ञान, आध्यात्म, विज्ञान और शिल्पकला का मार्गदर्शन करती रही है। आयुर्वेद, गणित, ज्योतिष, वास्तुकला, धातु विज्ञान, योग, दर्शन और आध्यात्मिक चिंतन के क्षेत्र में भारत ने विश्व को अमूल्य धरोहर प्रदान की।

**भगवान विश्वकर्मा** की परंपरा से जुड़े हमारे जांगिड समाज ने भी भारत के इस गौरवशाली इतिहास में अपना विशिष्ट योगदान दिया। मंदिरों का निर्माण, महलों की भव्यता, दुर्गों की मजबूती, मूर्तिकला, स्थापत्य कला, काष्ठकला और शिल्प कौशल के माध्यम से हमारे पूर्वजों ने भारत की सांस्कृतिक पहचान को अमर बनाया। आज भी देश के अनेक प्राचीन मंदिर, दुर्ग और स्थापत्य हमारे पूर्वजों की अद्भुत प्रतिभा और समर्पण के साक्षी हैं।

इतना समृद्ध और वैभवशाली भारत विदेशी आक्रमणों का लक्ष्य बना। अनेक शताब्दियों तक विदेशी शक्तियों ने इस देश पर शासन किया। विशेष रूप से अंग्रेजी शासन ने भारत की आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक व्यवस्था को गहरा आघात पहुँचाया। भारत की समृद्ध अर्थव्यवस्था को कमजोर किया गया, उद्योग-धंधों को नष्ट किया गया और भारतीयों को अपने ही देश में दोयम दर्जे का नागरिक समझा गया। **किन्तु भारत की आत्मा कभी पराजित नहीं हुई।** समय-समय पर अनेक वीरों ने स्वतंत्रता की ज्योति प्रज्वलित रखी। 1857 की क्रांति से लेकर 1947 तक लाखों स्वतंत्रता सेनानियों ने अपने प्राणों की आहुति दी। महात्मा गांधी के सत्य और अहिंसा के आंदोलन, नेताजी सुभाषचंद्र बोस के अदम्य साहस, भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, सुखदेव, राजगुरु, रानी लक्ष्मीबाई, सरदार पटेल, बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय तथा असंख्य वीरों के बलिदान ने अंततः भारत को स्वतंत्रता दिलाई।

**15 अगस्त 1947 केवल सत्ता परिवर्तन का दिन नहीं था, बल्कि यह भारत की आत्मा की पुनर्स्थापना का दिन था।** स्वतंत्रता के समय भारत अनेक चुनौतियों से घिरा हुआ था। गरीबी, अशिक्षा, बेरोजगारी, संसाधनों की कमी और विभाजन की पीड़ा हमारे सामने थी। लेकिन भारत ने कभी हार नहीं मानी। आज भारत कृषि, विज्ञान, तकनीक, अंतरिक्ष, रक्षा, चिकित्सा, शिक्षा, डिजिटल तकनीक, उद्योग और स्टार्टअप के क्षेत्र में नई ऊँचाइयों को छू रहा है। हमारे वैज्ञानिकों ने अंतरिक्ष में नई उपलब्धियाँ हासिल की हैं। भारतीय सेना विश्व की सबसे सशक्त सेनाओं में गिनी जाती है। भारत विश्व की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में अपना स्थान बना चुका है। यह प्रगति करोड़ों भारतीयों के परिश्रम, अनुशासन और राष्ट्रभक्ति का परिणाम है।

**हमारे पूर्वजों ने अपने हाथों से भारत की सांस्कृतिक धरोहर का निर्माण किया।** आज भी हमारे समाज के लोग शिक्षा, उद्योग, व्यवसाय, चिकित्सा, इंजीनियरिंग, प्रशासन, न्यायपालिका, सेना, राजनीति और सामाजिक सेवा के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान दे रहे हैं। हमारे समाज के अनेक युवा भारतीय प्रशासनिक सेवा, पुलिस सेवा, न्यायिक सेवा, सेना, बैंकिंग, शिक्षा और तकनीकी क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का परिचय दे रहे हैं। अनेक उद्यमी देश की अर्थव्यवस्था को गति दे रहे हैं।

**भारत ने वर्ष 2047 तक विकसित राष्ट्र बनने का लक्ष्य निर्धारित किया है। यह लक्ष्य केवल सरकार का नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक का है। जांगिड समाज को इस राष्ट्रीय अभियान में अग्रणी भूमिका निभानी होगी।**

हमें अपने बच्चों को केवल डिग्री नहीं, बल्कि उत्कृष्ट शिक्षा, कौशल, चरित्र और राष्ट्रभक्ति प्रदान करनी होगी। **समाज के**

**अधिकाधिक युवाओं को आईएएस, आईपीएस, आईएफएस, आरएएस, न्यायिक सेवाओं, सेना, वैज्ञानिक अनुसंधान, उद्योग, उद्यमिता और आधुनिक तकनीकी क्षेत्रों में आगे बढ़ाना होगा। हमें स्टार्टअप, डिजिटल तकनीक, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, रोबोटिक्स, आधुनिक विनिर्माण और वैश्विक व्यापार जैसे नए क्षेत्रों में भी अपनी पहचान बनानी होगी।**

किसी भी समाज की सबसे बड़ी शक्ति उसकी एकता होती है। यदि प्रत्येक व्यक्ति केवल अपने परिवार और अपने स्वार्थ तक सीमित रहेगा, तो समाज आगे नहीं बढ़ सकता। आज आवश्यकता है कि हम **"मैं"** की जगह **"हम"** को अपनाएँ।

जब समाज का प्रत्येक सक्षम व्यक्ति किसी एक जरूरतमंद विद्यार्थी की सहायता करेगा, किसी गरीब परिवार की बेटी की शिक्षा में सहयोग देगा, किसी बेरोजगार युवक को रोजगार का मार्ग दिखाएगा और संगठन के कार्यों में भागीदारी निभाएगा, तभी वास्तविक सामाजिक परिवर्तन आएगा।

भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी शक्ति परिवार व्यवस्था रही है। आज आधुनिक जीवनशैली, व्यस्तता और बढ़ती व्यक्तिगत सोच के कारण संयुक्त परिवार टूट रहे हैं। परिवारों में संवाद कम हो रहा है और संस्कार कमजोर पड़ रहे हैं। हमें अपने बच्चों को दादा-दादी, माता-पिता और गुरुजनों का सम्मान करना सिखाना होगा। परिवार में प्रेम, विश्वास और सहयोग का वातावरण बनाना होगा। यदि परिवार मजबूत रहेगा तो समाज भी मजबूत रहेगा और राष्ट्र भी मजबूत होगा। बच्चे केवल विद्यालय से नहीं, बल्कि परिवार से संस्कार सीखते हैं। उन्हें भारतीय संस्कृति, राष्ट्रभक्ति, ईमानदारी, अनुशासन, सेवा, परिश्रम और सामाजिक उत्तरदायित्व का पाठ पढ़ाना होगा। मोबाइल और सोशल मीडिया के इस युग में बच्चों को तकनीक का सही उपयोग सिखाना होगा। हमें उन्हें यह समझाना होगा कि जीवन का उद्देश्य केवल धन कमाना नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र के लिए उपयोगी नागरिक बनना भी है।

**अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा केवल एक संगठन नहीं, बल्कि पूरे समाज की सामूहिक शक्ति है। महासभा समाज की एकता, शिक्षा, संगठन, सामाजिक समरसता, युवा नेतृत्व और सांस्कृतिक संरक्षण का माध्यम है।** यदि समाज का प्रत्येक परिवार महासभा से जुड़ेगा, सदस्यता बढ़ाएगा, युवाओं और महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करेगा तथा सामाजिक कार्यक्रमों में सक्रिय सहयोग देगा, तो महासभा की शक्ति कई गुना बढ़ जाएगी।

आज के समय में केवल आर्थिक रूप से मजबूत होना पर्याप्त नहीं है। समाज को राजनीतिक नेतृत्व और प्रशासनिक सेवाओं में भी प्रभावी भागीदारी सुनिश्चित करनी होगी। हमें ऐसे युवाओं को तैयार करना होगा जो संसद, विधानसभा, स्थानीय निकायों तथा प्रशासनिक सेवाओं में समाज और राष्ट्र का नेतृत्व कर सकें। राजनीति केवल सत्ता प्राप्ति का माध्यम नहीं, बल्कि समाज सेवा और राष्ट्र निर्माण का महत्वपूर्ण साधन है। यदि हमें आने वाले वर्षों में समाज को नई ऊँचाइयों पर ले जाना है तो शिक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देनी होगी। हर परिवार यह संकल्प ले कि कोई भी बच्चा आर्थिक अभाव के कारण शिक्षा से वंचित नहीं रहेगा। प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति, मार्गदर्शन और प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में सहयोग देना समाज का दायित्व होना चाहिए।

**हमारा समाज सदैव राष्ट्रहित को सर्वोपरि मानता आया है। हमें जाति, क्षेत्र, भाषा और व्यक्तिगत मतभेदों से ऊपर उठकर राष्ट्रीय एकता को मजबूत करना होगा। एक संगठित समाज ही एक सशक्त राष्ट्र का निर्माण करता है।**

**आइए, इस स्वतंत्रता दिवस पर हम सब मिलकर यह संकल्प लें- हम राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखेंगे। हम अपने बच्चों को शिक्षित और संस्कारित बनाएँगे। हम समाज में एकता और भाईचारा बढ़ाएँगे।** हम महासभा को मजबूत बनाएँगे। हम समाज की राजनीतिक और प्रशासनिक भागीदारी बढ़ाएँगे। हम परिवारों को जोड़ेंगे, तोड़ेंगे नहीं। हम "मैं" नहीं, "हम" की भावना से कार्य करेंगे। हम वर्ष 2047 तक विकसित भारत के निर्माण में अपनी सक्रिय भूमिका निभाएँगे।

**प्रिय समाजबंधुओं,** स्वतंत्रता केवल अधिकार नहीं, बल्कि उत्तरदायित्व भी है। हमें अपने पूर्वजों की विरासत को आगे बढ़ाते हुए आने वाली पीढ़ियों के लिए एक शिक्षित, संगठित, संस्कारित और समृद्ध समाज का निर्माण करना है।

मैं एक बार पुनः आप सभी को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ। ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि भारत निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर रहे, हमारा जांगिड समाज शिक्षा, संगठन, संस्कार, सेवा और नेतृत्व के क्षेत्र में नई ऊँचाइयों को प्राप्त करे तथा प्रत्येक परिवार सुख, शांति, समृद्धि और सम्मान के साथ जीवन व्यतीत करे। आइए, हम सब मिलकर राष्ट्र और समाज को आगे बढ़ाएँ। **याद रखें - "देश है तो हम हैं। देश के बिना व्यक्ति की कोई पहचान नहीं होती। इसलिए राष्ट्र सर्वोपरि है, समाज हमारी शक्ति है और संगठन हमारी पहचान।"**

**भारत माता की जय ! वन्दे मातरम् ! जय हिन्द ! जय विश्वकर्मा!**

जय श्री विश्वकर्मणे नमः

# अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा, दिल्ली

रानी खेड़ा रोड़, मुंडका मेट्रो स्टेशन के पास,
मुंडका, नई दिल्ली – 110041
दूरभाष : 9990070023
पंजीकरण संख्या एस. – 27 / 1919

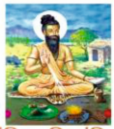
अंगिराऽसि जांगिड

Website: www.abjbmahasabha.com, E-mail: Jangid.mahasabha@gmail.com

| रामपाल शर्मा | सांवरमल जांगिड | अरुण कुमार जांगिड |
|---|---|---|
| प्रधान | महामंत्री | कोषाध्यक्ष |
| 9844026161 | 9414003411 | 9810988553 |

**क्रमांक :- अ.भा.जां.ब्रा.म.-3027/2026** **दिनांक 08/08/2026**

प्रतिष्ठा में:-

सम्माननीय, समस्त प्रदेश अध्यक्ष एवं प्रदेश प्रभारी,
अंतर्गत अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा – दिल्ली

**विषयः- प्रदेशाध्यक्षों एवं प्रभारियों की आगामी त्रैमासिक बैठक चेन्नई-तमिलनाडू में आयोजित करने बाबत**

महोदय,

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा दिल्ली के सम्माननीय समस्त प्रदेशाध्यक्षों एवं प्रदेश प्रभारियों को सूचित किया जाता है कि प्रदेशाध्यक्षों की अगली त्रैमासिक मीटिंग **श्री रामपाल शर्मा, महासभा प्रधान** की अध्यक्षता में **दिनांक 17 अक्टूबर, 2026, शनिवार को सायंकाल 5.00 बजे से चेन्नई-तमिलनाडू में प्रदेश सभा द्वारा निर्धारित स्थान पर** आयोजित की जायेगी।

अत: महासभा के अंतर्गत कार्यरत समस्त प्रदेश अध्यक्ष एवं प्रदेश प्रभारी ससम्मान सादर आमंत्रित हैं, कृपया मीटिंग के समय को ध्यान में रखते हुए चेन्नई आने की एयर या ट्रेन टिकट उसी अनुसार बनाकर मीटिंग स्थल पर समय पर पहुंचना सुनिश्चित करें तथा मीटिंग में उपस्थित होकर अपने अपने प्रदेशों की प्रगति रिपोर्ट के साथ साथ महासभा / समाज उत्थान के लिए कोई भी बहुमूल्य सुझाव से अवगत कराकर सहयोग प्रदान करें।

**नोट:- मीटिंग का एजेंडा एवं मीटिंग स्थलों / होटल की लोकेशन,** प्रदेश अध्यक्षों के ग्रुप्स में अपलोड कर दी जायेगी।

**धन्यवाद ।**

**( सांवरमल जांगिड )**
**महामंत्री - महासभा**

जय श्री विश्वकर्मणे नमः

# अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा, दिल्ली

रानी खेड़ा रोड़, मुंडका मेट्रो स्टेशन के पास,
मुंडका, नई दिल्ली – 110041
दूरभाष : 9990070023
पंजीकरण संख्या एस. – 27 / 1919

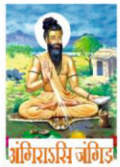


**Website:** www.abjbmahasabha.com, **E-mail:** Jangid.mahasabha@gmail.com

| रामपाल शर्मा | सांवरमल जांगिड | अरुण कुमार जांगिड |
|---|---|---|
| प्रधान | महामंत्री | कोषाध्यक्ष |
| 9844026161 | 9414003411 | 9810988553 |

---

**क्रमांक :- अ.भा.जां.ब्रा.म.- 3028/2026** **दिनांक 08/08/2026**

प्रेषित,

सम्माननीय, समस्त प्रदेश अध्यक्ष, प्रदेश प्रभारी,
महासभा कार्यकारिणी के समस्त पदाधिकारी गण,
अखिल भारतीय जांगिड ब्राहमण महासभा - दिल्ली

**विषयः- महासभा कार्यकारिणी की आगामी त्रैमासिक बैठक चेन्नई - तमिलनाडू में आयोजित करने बाबत**

महोदय,

अखिल भारतीय जांगिड ब्राहमण महासभा दिल्ली के सम्माननीय समस्त प्रदेशाध्यक्षों, प्रदेश प्रभारियों एवं महासभा कार्यकारिणी के पदाधिकारियों को सूचित किया जाता है कि महासभा राष्ट्रीय कार्यकारिणी की आगामी त्रैमासिक मीटिंग **श्री रामपाल शर्मा, प्रधान - महासभा** की अध्यक्षता में प्रदेश सभा **तमिलनाडू** के सौजन्य से प्रदेश सभा तमिलनाडू की नवगठित कार्यकारिणी के शपथ ग्रहण समारोह के साथ **दिनांक 18 अक्टूबर, 2026, रविवार को प्रातः 9.00 बजे से तमिलनाडू राज्य के चेन्नई शहर** में आयोजित की जायेगी।

अतः सिर्फ महासभा कार्यकारिणी के सम्माननीय समस्त पधाधिकारी गण / प्रदेश अध्यक्ष / प्रदेश प्रभारी उक्त त्रैमासिक मीटिंग में ससम्मान सादर आमंत्रित हैं, कृपया बैठक में समय पर पधार कर अपनी सकारात्मक भूमिका का निर्वहन करते हुए महासभा को सहयोग प्रदान करें ।

**नोट :- मीटिंग का एजेंडा, मीटिंग स्थान एवं होटल का पूर्ण पता एवं लोकेशन**, महासभा कार्यकारिणी के ग्रुप्स में शीघ्र ही आपकी सूचनार्थ प्रेषित कर दी जायेगी।

धन्यवाद।

( सांवरमल जांगिड )
महामंत्री – महासभा

# अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा, दिल्ली

रानी खेड़ा रोड़, मुंडका मेट्रो स्टेशन के पास,
मुंडका, नई दिल्ली – 110041
दूरभाष : 9990070023
पंजीकरण संख्या एस. – 27 / 1919

Website: www.abjbmahasabha.com, E-mail: Jangid.mahasabha@gmail.com

| रामपाल शर्मा | सांवरमल जांगिड | अरुण कुमार जांगिड |
|---|---|---|
| प्रधान | महामंत्री | कोषाध्यक्ष |
| 9844026161 | 9414003411 | 9810988553 |


क्रमांक :- अ.भा.जां.ब्रा.म.-3030/2026 | दिनांक 14/08/2026

## ----:: अति आवश्यक सूचना ::----

### ***महासभा संविधान संशोधन हेतु सुझाव आमंत्रित***

**-- ::अंतिम दिनांक 31 अगस्त 2026::--**

************

**सम्माननीय समाज बन्धुओं,**

**जय श्री विश्वकर्मा ।**

जैसा कि आप सभी ज्ञात होगा वर्तमान मे अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा दिल्ली का **दिनांक 27 जनवरी, 2013** का संशोधित संविधान लागू है। तत्पश्चात महासभा कार्यकारिणी द्वारा समय समय पर संविधान में संशोधन करने हेतु लिए गए निर्णयों एवं महासभा सदस्यों से आमंत्रित सुझावों का गहन अध्ययन एवं समीक्षा कर वर्तमान संविधान में आज की आवश्यकतानुसार अति आवश्यक संशोधनों का समावेश कर संशोधित किया जाना आवश्यक है।

समाज के सर्वांगीण विकास एवं अधिक सशक्त, संगठित और वर्तमान समय के अनुकूल बनाने हेतु महासभा कार्यकारिणी के निर्णयानुसार महासभा के प्रचलित संविधान में आवश्यक संशोधन करने हेतु **"संविधान संशोधन कमेटी"** का गठन किया जा चूका है साथ ही महासभा के पूर्व पत्रांक **क्रमांक :- अ.भा.जां.ब्रा.म.-3007/2026 दिनांक 17/07/2026** के तहत महासभा के समस्त पदाधिकारियों / प्रदेश अध्यक्षों एवं महासभा के प्रबुद्ध सदस्यों से बहुमूल्य एवं अत्यंत महत्वपूर्ण सुझाव भी **दिनांक 15 अगस्त, 2026** तक आमंत्रित किये गये थे परन्तु समाज बंधुओं से संविधान संशोधन करने हेतु अपेक्षित सुझाव प्राप्त नही होने के कारण सुझाव आमन्त्रण तिथि को पुनः **31 अगस्त 2026** तक बढ़ाया जाता है।

इस महत्वपूर्ण कार्य में महासभा के समस्त पदाधिकारियों / प्रदेश अध्यक्षों एवं महासभा के प्रबुद्ध सदस्यों से बहुमूल्य एवं अत्यंत महत्वपूर्ण सुझाव एक बार पुनः सादर आमंत्रित है। अतः आप सभी से एक बार पुनः निवेदन है कि अपने लिखित एवं हस्ताक्षरित सुझाव महासभा की ई मेल jangid.mahasabha@gmail.com पर **दिनांक 31 अगस्त 2026** तक आवश्यक रूप से भेजने का कष्ट करें। क्योंकि आपके उपयोगी एवं महत्वपूर्ण सुझावों से ही कमेटी को महासभा का स्पष्ट व सशक्त संविधान बनाने में सहायता मिलेगी। निर्धारित तिथि के उपरांत प्राप्त सुझावों पर विचार नही किया जा सकेगा।

समाज सेवार्थ.......

( सांवर मल चोयल )
महामंत्री – महासभा – दिल्ली

# जातिगत जनगणना में जांगिड ही हमारी सामूहिक पहचान बने

भारत में होने वाली आगामी जनगणना केवल आंकड़े जुटाने की प्रक्रिया नहीं, बल्कि देश के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्वरूप को समझने का महत्वपूर्ण आधार होगी। ऐसे समय में प्रत्येक समाज के लिए यह आवश्यक है कि उसकी वास्तविक जनसंख्या सही रूप में दर्ज हो, ताकि भविष्य की नीतियों और सामाजिक प्रतिनिधित्व में उसकी स्थिति स्पष्ट दिखाई दे।

आज अनेक समाज अपने अलग-अलग उपनामों और क्षेत्रीय पहचानों के बावजूद अपनी मूल जातीय पहचान को एक ही नाम के अंतर्गत दर्ज कराने के प्रति जागरूक हैं। इसी दृष्टि से जांगिड ब्राह्मण समाज के सामने भी एक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। हमारे समाज में अलग-अलग क्षेत्रों में **जांगिड, सुथार, तरखाण, खाती, धीमान, विश्वकर्मा , मिस्त्री** आदि उपनाम अथवा प्रचलित पहचान देखने को मिलती हैं। ये हमारी पारिवारिक एवं क्षेत्रीय परंपराओं का हिस्सा हैं, लेकिन व्यापक सामाजिक पहचान के स्तर पर हम सभी की साझा पहचान **"जांगिड"** है। इसलिए जनगणना के दौरान जाति संबंधी जानकारी दर्ज करते समय समाज के प्रत्येक व्यक्ति को अपनी मूल जातीय पहचान **"जांगिड"** के रूप में दर्ज कराने के प्रति जागरूक होना चाहिए।

यह विषय अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा द्वारा भी लगातार समाज के विभिन्न मंचों पर प्रमुखता से उठाया गया है। महासभा की ओर से सामाजिक बैठकों, सम्मेलनों, सभाओं और विभिन्न सार्वजनिक मंचों के माध्यम से समाजबंधुओं से निवेदन किया गया है कि जनगणना के समय अपनी जातीय पहचान को लेकर जागरूक रहें और सरकारी प्रपत्र में लागू नियमों एवं आधिकारिक निर्देशों के अनुसार अपनी मूल पहचान स्पष्ट रूप से दर्ज कराएं।

महासभा का यह आग्रह किसी अन्य उपनाम या क्षेत्रीय पहचान का विरोध नहीं, बल्कि समाज की सामूहिक पहचान और वास्तविक संख्या को स्पष्ट रूप से सामने लाने का प्रयास है। यदि जांगिड समाज के लोग अलग-अलग नामों में दर्ज होते हैं, तो हमारी सामूहिक संख्या विभिन्न श्रेणियों में बंटकर दिखाई दे सकती है। इससे हमारी वास्तविक जनसंख्या का सही आकलन कठिन हो सकता है। इसके विपरीत, जहां सरकारी नियम इसकी अनुमति देते हैं, वहां एक समान मूल जातीय पहचान के माध्यम से समाज की संख्या अधिक स्पष्ट रूप से सामने आ सकती है। सही संख्या केवल आंकड़ा नहीं होती। राजनीतिक दल, नीति-निर्माता और प्रशासनिक संस्थाएं विभिन्न समुदायों की सामाजिक स्थिति, आवश्यकताओं और प्रतिनिधित्व को समझने के लिए जनसंख्या संबंधी आंकड़ों का उपयोग करते हैं। इसलिए अपनी वास्तविक संख्या का सही और स्पष्ट रूप से सामने आना किसी भी समाज के लिए महत्वपूर्ण है।

**जांगिड समाज को यह समझना होगा कि सामाजिक एकता और स्पष्ट पहचान ही हमारी सबसे बड़ी शक्ति है।** हमें किसी दूसरे समाज से प्रतिस्पर्धा नहीं करनी, बल्कि अपनी वास्तविक सामाजिक उपस्थिति को सही रूप में प्रस्तुत करना है। इसलिए महासभा के इस निरंतर आग्रह को समाज का प्रत्येक परिवार आगे बढ़ाए। सामाजिक संगठनों, प्रदेश एवं जिला सभाओं, तहसील स्तर की संस्थाओं और समाज के जागरूक नागरिकों को जनगणना से पहले व्यापक जागरूकता अभियान चलाना चाहिए। प्रत्येक परिवार तक यह संदेश पहुंचे कि जनगणना के समय जाति संबंधी जानकारी भरते हुए सरकारी दिशा-निर्देशों का पालन करें और अपनी मूल जातीय पहचान के प्रति सजग रहें। **जांगिड, सुथार, तरखाण, खाती, मिस्त्री, धीमान, विश्वकर्मा** जैसे विभिन्न प्रचलित नाम हमारी परंपराओं और क्षेत्रीय पहचान से जुड़े हो सकते हैं, लेकिन हमारी सामूहिक सामाजिक पहचान को लेकर जागरूक रहना समय की आवश्यकता है।

**आइए, महासभा के इस निवेदन को जन-जन तक पहुंचाएं।** जनगणना को केवल सरकारी प्रक्रिया न मानकर सामाजिक जागरूकता का अवसर बनाएं और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक संगठित, शिक्षित, आत्मनिर्भर तथा सशक्त जांगिड समाज की मजबूत नींव रखें। **सभी जांगिड़ बंधुओं से नम्र निवेदन है कि जनसंखा की जनगणना का 40 बिंदुओं वाला फार्म भरते समय क्रम संख्या 10 मे जाति की जगह केवल और केवल जांगिड़/जांगड़ा/सुथार आदि शब्द लिखे जो शब्द जिस राज्य मे नोटिफिकेशन किया हुआ है, लेकिन भूलकर भी ब्राह्मण या शर्मा नहीं लिखे। शर्मा या ब्राह्मण लिखने से उसे ब्राह्मण मानकर ब्राह्मणों की जनसंख्या मे जोड़ा जाएगा जिससे हमारा संख्या बल होते हुए भी हमारी जनसंख्या कम दर्ज की जाएगी और उसका फायदा ब्राह्मण समाज को मिलेगा।इस बार की जनगणना से पूरे देश मे कुल कितने जांगिड है यह पता चलेगा और हमारी जाति के लिए राजनीतिक और आर्थिक लाभ के नए रास्ते खुलेंगे।**

**हमारी पहचान— हमारा गौरव। हमारी एकता—हमारी शक्ति।**

**और हमारी सही जनसंख्या—हमारे सामाजिक भविष्य का आधार।**

****

**प्रहलाद राय जांगिड – सह संपादक**

# अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा, दिल्ली

रानी खेड़ा रोड़, मुंडका मेट्रो स्टेशन के पास,
मुंडका, नई दिल्ली – 110041
दूरभाष : 9990070023
पंजीकरण संख्या एस. – 27 / 1919

अंगिराऽसि जंगिड

**Website:** www.abjbmahasabha.com, **E-mail:** Jangid.mahasabha@gmail.com

| रामपाल शर्मा | सांवरमल जांगिड | अरुण कुमार जांगिड |
|---|---|---|
| प्रधान | महामंत्री | कोषाध्यक्ष |
| 9844026161 | 9414003411 | 9810988553 |


**क्रमांक :- अ.भा.जां.ब्रा.म.-3009/2026** **दिनांक 20/07/2026**

## *** बेंगलुरु में आयोजित त्रैमासिक बैठक का कार्यवृत ***

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा दिल्ली कार्यकारिणी की छटी त्रैमासिक बैठक एवं प्रदेश सभा कर्नाटक की नवगठित कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समरोह का आयोजन कर्नाटक प्रदेश के ऐतिहासिक एवं फूलों का शहर नाम से विख्यात, टेक्नोलोजी तथा आई.टी. हब के रूप मे प्रसिद्ध शहर, बेंगलुरु में किया गया। यह बैठक **दिनांक 05 जुलाई, 2026,** रविवार को पैलेस ग्राउंड के द ग्रैंड कैसल, गेट नम्बर 6, मेकरी सर्किल, बेल्लारी रोड, बेंगलुरू में कर्नाटक प्रदेश सभा के तत्वाधान मे विभिन्न सामाजिक कुरुतियों एवं समाज उत्थान के लिए प्राप्त सुझावों पर मंथन करके लिए गये निर्णयों के साथ संपन्न हुई। यह त्रैमासिक बैठक **कर्नाटक प्रदेश के महामहिम राज्यपाल थावरचंद गहलोत एवं समाज के प्रसिद्ध उद्योगपति और भामाशाह सुखदेव जांगिड के मुख्य आतिथ्य एवं महासभा के प्रधान रामपाल शर्मा की अध्यक्षता** में आयोजित हुई।

सर्वप्रथम, महासभा प्रधान, महामंत्री, मुख्य सलाहकार, मुख्य चुनाव अधिकारी, जांगिड रत्न से सम्मानित प्रबुद्ध समाज बन्धु एवं अनेक विशिष्ट अतिथियों तथा प्रदेश अध्यक्षों / प्रभारियों द्वारा पैलेस ग्राउंड, बेंगलुरु के परिसर में महासभा का झण्डारोहण एवं राष्ट्र गान के साथ समारोह का श्रीगणेश किया गया। तत्पश्चात मंचासीन अतिथियों द्वारा भगवान श्री विश्वकर्मा के चित्र के सम्मुख दीप प्रज्ज्वलन, श्रद्धाभाव से पूजा-अर्चना एवं आरती के साथ समारोह को विधिवत शुरू किया गया।

इसके पश्चात पिछले तीन माह के काल खंड मे देवलोक गमन करने वाले समाज के विभिन्न भामाशाहों, पदाधिकारियों एवं महासभा सदस्यों, विशेष तौर से **महासभा के पूर्व प्रधान स्वर्गीय नेमीचंद जांगिड (पुण्य तिथि)** के लिए दो मिनट का सामूहिक मौन रखते हुए परम पिता परमेश्वर से उन सब पुण्यात्माओं को चिर शांति, मोक्ष प्रदान करने एवं अपने निज श्रीचरणों में स्थान प्रदान करने हेतु प्रार्थना करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

इसके पश्चात कर्नाटक प्रदेश सभा द्वारा समारोह के अध्यक्ष रामपाल शर्मा एवं मंचासीन समस्त अतिथियों का यथा स्थान माला, साफा, दुपट्टा एवं स्मृति चिह्न भेंट प्रदान करके स्वागत-सत्कार किया गया, उसके बाद महासभा के महामंत्री सांवरमल जांगिड ने अध्यक्ष की अनुमति से बैठक की विधिवत शुरुआत करते हुए स्वागत उद्बोधन दिया। उन्होंने कार्यक्रम में उपस्थित मंचासीन मुख्य अतिथियों, प्रदेश अध्यक्षों, प्रदेश प्रभारियों, विभिन्न कमेटियों एवं प्रकोष्ठों के पदाधिकारियों, एवं सभागार में उपस्थित महासभा कार्यकारिणी के समस्त पदाधिकारियों, मातृशक्ति एवं युवा शक्ति, मीडिया प्रभारियों, समाज के भामाशाहों एवं प्रबुद्ध समाज बन्धुओं का बेंगलुरु शहर की पावन धरा को नमन करते हुए, पधारे हुए सभी अतिथियों का हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन किया। तदुपरांत महामंत्री द्वारा महासभा प्रधान की अनुमति से महासभा की पिछले तीन माह की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की गई और राष्ट्रीय कार्यकारिणी की त्रैमासिक बैठक के निर्धारित एजेंडे पर सकारात्मक विचार विमर्श करने के लिए सदन के सामने बिन्दु वार एजेंडा प्रस्तुत करते हुए अनुमोदन के लिए प्रस्तुत किया जो इस प्रकार है।

**एजेण्डा :1 - फरीदाबाद त्रैमासिक बैठक मे दिनांक 05/04/2026 को लिए गये निर्णयों का अनुमोदन।**

महामंत्री ने बैठक की कार्यसूची की शुरुआत करते हुए कहा कि **फरीदाबाद में दिनांक 05 अप्रैल, 2026** को कार्यकारिणी की पांचवीं बैठक में लिए गये निर्णयों का कार्यवृत महासभा द्वारा पत्रांक :- **अ.भा.जां.ब्रा.म.-2959/2026 दिनांक 16/04/2026** के तहत जारी किये जा चुका है जिसको महासभा की मासिक पत्रिका माह मई, 2026 के पेज नम्बर **11 से 17** पर भी प्रकाशित किया जा चुका है। अत: उक्त बैठक के कार्यवृत का पुनः वाचन नही करके महासभा पत्रिका में प्रकाशित कार्यवृत को पढ़ा हुआ मानकर सदन में उपस्थित कार्यकारिणी के समस्त पदाधिकारीयों से फरीदाबाद मीटिंग में लिए गये निर्णयों का महामंत्री द्वारा अनुमोदन करने हेतु निवेदन किया गया। जिस पर सदन में उपस्थित समस्त पदाधिकारियों द्वारा करतल ध्वनि के साथ उक्त निर्णयों का एकमत होकर अनुमोदन किया।

**एजेण्डा:2- महासभा संगठन का विस्तार करने के लिये नई प्रदेश सभाओं का गठन करने बाबत चर्चा।**

महासभा महामंत्री ने उक्त प्रस्ताव के सम्बन्ध में बताया कि वर्तमान में महासभा की 15 राज्यों में प्रदेश सभा कार्यरत है परन्तु प्रधानजी की हार्दिक इच्छा है कि हमारे महासभा रूपी संगठन का विस्तार करने के लिए भारत के अन्य प्रदेश जैसे उड़ीसा, बिहार, हिमाचलप्रदेश एवं झारखण्ड में भी नई प्रदेश सभाओं का गठन करने का प्रयास किया जाये। जिससे महासभा की सदस्य संख्या बढने के साथ ही उन प्रदेशों में भी हमारे समाज की पहचान हो सके। इसी प्रयास के तहत पिछले माह में तेलंगाना प्रदेश अध्यक्ष सियाराम के माध्यम से आंध्र प्रदेश में दिनेश बरडवा का प्रदेश अध्यक्ष के रूप में मनोनयन किया गया है तथा वांछित सदस्य संख्या (कम से कम 51) बनाने के लिए उचित समय दिया गया है। आशा है कि आंध्र प्रदेश से भी जल्दी ही अच्छी खबर आएगी और मनोनीत प्रदेश अध्यक्ष द्वारा यथावत प्रदेश सभा का गठन किया जायेगा।

उक्त सभी प्रदेशों में नई प्रदेश सभा के गठन में सहयोग करने के लिए महासभा प्रधान के आदेशानुसार महामंत्री ने समस्त पदाधिकारियों से निवेदन किया कि उक्त प्रदेशों में किसी का भी कोई भाई-बन्धु, रिश्तेदार, मित्र या परिचित व्यक्ति आदि हो तो वह अपनी स्वयं की इच्छा से कृपया आगे आये और महासभा रूपी संगठन का विस्तार करने के लिए महासभा प्रधान का सहयोग करें।

इस पर **कर्नाटक प्रदेश के प्रदेश अध्यक्ष बाबुलाल शर्मा** ने जिम्मेदारी लेते हुए **उड़ीसा** में अविलम्ब नई प्रदेश सभा का गठन करवाने का आश्वासन दिया तथा इस पुण्य कार्य में **सत्यपाल वत्स बहादुरगढ़** ने भी भरपूर सहयोग करने का आश्वासन दिया। इसके साथ ही **अहमदाबाद से श्रीमती सावित्री शर्मा ने भी बिहार राज्य में नई प्रदेश सभा** का गठन करने की जिम्मेदारी लेते हुए शीघ्र गठन का आश्वासन दिया जिसमें **जगदीश खंडेलवाल दिल्ली** ने भी इस कार्य में पूर्ण सहयोग करने का विश्वास दिलाया।

**जिस पर उपस्थित समस्त पदाधिकारियों ने उड़ीसा एवं बिहार के लिए बाबुलाल शर्मा एवं श्रीमती सावित्री शर्मा का आभार एवं धन्यवाद करते हुए बाकी दो प्रदेशों के लिए भी अविलम्ब प्रयास करने का आश्वासन दिया।**

**एजेण्डा:3- महासभा के पदाधिकारियों एवं अधीनस्थ सभाओं से महासभा द्वारा जारी आदेशों एवं दिशा-निर्देशों तथा निर्धारित लक्ष्यों का कड़ाई से पालन करवाने बाबत चर्चा।**

महासभा महामंत्री ने बताया कि महासभा एवं अधीनस्थ इकाइयों के संचालन एवं चुनाव प्रक्रिया में आने वाली विभिन्न समस्याएं, जिनका महासभा संविधान में स्पष्ट उल्लेख नही होने के कारण महासभा संविधान का पालन करते हुए महासभा में सर्व सम्मत निर्णय करके समय समय पर महासभा हित में विभिन्न आदेश एवं दिशा निर्देश जारी किये जाते है। जिनका शत प्रतिशत पालन करना समस्त अधीनस्थ इकाइयों के पदाधिकारियों का परम दायित्व है। लेकिन अक्सर यह पाया गया है कि महासभा या उसके अधीनस्थ कार्यरत सभाओं के अध्यक्षों एवं उनकी कार्यकारिणी के पदाधिकारियों द्वारा महासभा द्वारा जारी लक्ष्यों, आदेशों एवं दिशा-निर्देशों का पालन नही किया जाता है जो कि पूर्ण रुपेण महासभा आदेशों की अवहेलना है जो संविधान के अनुसार अनुशासन हीनता की श्रेणी में आता है। महासभा द्वारा पिछले चार साल के कार्यकाल में निम्न आदेश एवं दिशा निर्देश जारी किये गये है जो आपके सूचनार्थ निम्नानुसार प्रस्तुत है :-

1. महासभा एवं अधीनस्थ इकाइयों में प्रकोष्ठ गठन बाबत दिशा निर्देश
2. अधीनस्थ इकाइयों के प्रकोष्ठों में मनोनयन करने बाबत स्पष्टीकरण
3. महासभा के अधीनस्थ कार्यकारिणी को भंग करने सम्बन्धी जारी दिशा निर्देश
4. प्रदेश अध्यक्षों को अधीनस्थ सभाओं पर कार्यवाही करने का अधिकार सम्बन्धी जारी आदेश
5. चुनाव व्यवस्था शुल्क के संबंध में जारी दिशा निर्देश
6. पत्रिका रहित सदस्यों को चुनाव लड़ने संबंधी दिशा निर्देश
7. महासभा एवं समस्त इकाइयों में चुनाव करवाने बाबत जारी चुनाव निर्देशिका-2024
8. पदाधिकारियों के नाम एवं पदनाम के संबंध में जारी दिशा निर्देश
9. महासभा कार्यकारिणी के पधाधिकारियों के लिए निर्धारित लक्ष्य एवं दायित्व बाबत जारी दिशा निर्देश
10. महासभा पदाधिकारियों के प्रोटोकॉल सम्बन्धी जारी दिशा निर्देश
11. अधीनस्थ इकाइयों के महासभा पेन नम्बर पर खुले हुए बैंक खातों की सूचना देने में बाबत निर्देश
12. रसीद बुक पर हस्ताक्षर के साथ-साथ सदस्यता नंबर व मोबाइल नंबर लिखने बाबत जारी दिशा निर्देश
13. रसीद बुकों को महासभा में वापस करवाने बाबत जारी दिशा निर्देश
14. नई जिला सभाओं एवं तहसील सभाओं के गठन करने बाबत जारी दिशा निर्देश

15. महासभा में रजिस्ट्रेशन करवाने बाबत जारी दिशा निर्देश
16. सामाजिक समारोह आयोजित करने बाबत जारी दिशा निर्देश
17. चुनाव शुल्क राशी जमा करने के सम्बन्ध में जारी दिशा निर्देश
18. जाति गत जन गणना सम्बन्धी जारी दिशा निर्देश
19. सामाजिक संस्थाओं सम्बन्धी जारी दिशा निर्देश
20. एक व्यक्ति एक पद के संबंध में जारी दिशा निर्दे
21. महासभा कि त्रिमासिक मीटिंगों में भाग लेने सम्बन्धी दिशा निर्देश साधारण सदस्यों बाबत दिशा निर्देश

आज इस मंच के माध्यम से महासभा प्रधान के आदेशानुसार सदन में उपस्थित समस्त पदाधिकारियों से एक बार पुनः विनम्र निवेदन है कि महासभा द्वारा निर्धारित लक्ष्यों एवं समय-समय पर जारी आदेशों एवं दिशा-निर्देशों का कड़ाई से पालन करना सुनिश्चित करें अन्यथा महासभा को मजबूर होकर अनुशासनहीन पदाधिकारियों के खिलाफ अन्य कड़े कदम उठाने के लिए विवश होना पड़ेगा।

महामंत्री ने कहा कि कल दिनांक 4 जुलाई, 2026 को प्रदेशाध्यक्षों / प्रदेश प्रभारियों की बैठक में भी इस मुद्दे पर चर्चा हुई थी, जिस पर बैठक में उपस्थित समस्त प्रदेश अध्यक्षों / प्रभारियों एवं महासभा पदाधिकारियों ने एक स्वर में महासभा द्वारा जारी आदेशों एवं दिशा निर्देशों का भविष्य में शत प्रतिशत पालना सुनिश्चित करने का आश्वासन दिया।
**महामंत्री के निवेदन पर सदन में उपस्थित समस्त पदाधिकारियों ने हाथ खड़े करके उक्त प्रस्ताव का पूर्ण समर्थन किया।**

**एजेंडा:4- सामाजिक सुधार हेतु शादी-विवाह, भात-मायरा, छूछक(दसोटण), जन्मदिन, सालगिरह और अन्य सामाजिक आयोजनों में फिजूलखर्ची रोकने बाबत चर्चा।**

महासभा के यह संज्ञान में आया है कि आजकल समाज के अधिकतर लोग शादी-विवाह, भात-मायरा, जन्मोत्सव, छूछक(दसोटण), जन्मदिन, शादी की सालगिरह और अन्य सामाजिक आयोजनों में अनावश्यक फिजूलखर्ची करके अथक परिश्रम से अर्जित की गई कमाई को पानी की तरह बहा रहे हैं। इसे देखकर आर्थिक रूप से कमजोर रिश्तेदारों को भी सामाजिक शर्मिंदगी से बचने के लिए एवं रिश्तेदार के सम्मान का ध्यान रखते हुए मजबूर होकर हैसियत से बाहर जाकर अनावश्यक खर्च का बोझ उठाना पड़ता है। इसलिए हम सब का दायित्व बनता है कि समाज उत्थान के लिए सामूहिक संकल्प के रूप में निम्न बातों का अनवरत प्रचार प्रसार करना चाहिए :-

**फिजूलखर्ची नहीं, सादगी अपनाएँ। दिखावा नहीं, संस्कार बढ़ाएँ। नशा नहीं, नैतिकता अपनाएँ**

इसी तरह जन्मदिन, विवाह वर्षगांठ तथा अन्य उत्सवों को दिखावे और अपव्यय का माध्यम न बनाकर सेवा और संस्कार का पर्व बनाया जाए। इन अवसरों पर **मंदिर में दर्शन-पूजन, पौधारोपण, रक्तदान या समाजोपयोगी सेवा कार्य जैसे गौशाला में गौसेवा, अनाथालय / वृद्धाश्रम में जरूरतमंद लोगों के साथ भोजन एवं सहयोग को बढ़ावा देकर एक उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिये।**

महामंत्री ने कहा कि राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक के मंच के माध्यम से मैं प्रधान जी के आदेशानुसार आप सभी उपस्थित पदाधिकारियों से विनम्र निवेदन करता हूँ कि इस महत्वपूर्ण बिंदु पर गहनता से सोच विचार करके हम सभी को एक ठोस योजना के साथ कठोर निर्णय करना चाहिए ताकि सामाजिक आयोजनों पर अनावयश्क फिजूलखर्ची के प्रति समाज में चेतना जागृत करके समाज का मार्ग दर्शन किया जा सके।

साथ ही कल सायंकाल प्रदेश अध्यक्षों / प्रभारियों की बैठक में भी इस मुद्दे पर चर्चा हुई थी, जिस पर मीटिंग में उपस्थित समस्त प्रदेश अध्यक्षों / प्रभारियों एवं महासभा पदाधिकारियों ने उक्त प्रस्ताव का स्वागत करते हुए महासभा के मार्ग दर्शन में अविलम्ब प्रदेश सभाओं द्वारा समस्त अधीनस्थ संस्थाओं के माध्यम से सामाजिक आयोजनों पर अनावयश्क फिजूलखर्ची रोकने एवं समाज में जन चेतना जागृत करने के लिए जन जागरण अभियान चलाकर समाज को जागरूक करने हेतु मार्ग दर्शन करने का आश्वासन दिया।

**महामंत्री के उक्त प्रस्ताव के अनुमोदन के निवेदन पर सदन में उपस्थित समस्त पदाधिकारियों ने तालियों की गड़ गड़ाहट के साथ उक्त प्रस्ताव का पूर्ण समर्थन किया।**

**एजेंडा:5- प्रिवेडिंग शूट, दहेज प्रथा, मृत्यु भोज पर रोक लगाने एवं शराब, तम्बाकू एवं ड्रग्स जैसी नशे की कुरीतियों के प्रति जागरूकता अभियान चलाने बाबत चर्चा।**

महामंत्री ने कहा कि आजकल काफी जगह यह भी देखा गया है कि समाज के कुछ धनाढ्य लोग दहेज प्रथा, मृत्यु भोज, प्रिवेडिंग शूट, शराब, तम्बाकू, अफीम एवं ड्रग्स जैसी नशे की कुरीतियों की तरफ ज्यादा आकर्षित होकर तथा बढ़ चढकर हिस्सा लेकर समाज को विनाश की ओर धकेल रहे है। यदि इन कुरीतियों पर अविलम्ब विराम नही लगाया तो आने वाले समय में इसके भयंकर दुष्परिणाम आयेंगें।

इसलिए आज के समारोह के मंच के माध्यम से मैं, प्रधानजी के आदेशानुसार आप सभी उपस्थित पदाधिकारियों से विनम्र निवेदन करता हूँ कि उक्त समाज विरोधी कुरीतियों की रोक थाम के लिए सामाजिक आयोजनों के माध्यम से एवं सामूहिक जागरूकता अभियान चलाकर समाज को जागृत करने के लिए सकारात्मक एवं अनवरत प्रयास करने की सख्त आवश्यकता है। इस विषय पर भी समस्त उपस्थित पदाधिकारियों को समाज हित में ठोस निर्णय लेने के लिए अपील करता हूँ।

**क्योंकि दहेज प्रथा, मृत्यु भोज, प्रीवेडिंग शूट एवं नशे की कुरुतियों के निम्न दुष्परिणाम हैं :-**

1, अनावश्यक आर्थिक व्यय होता है।
2. पारिवारिक / सामाजिक वातावरण दूषित होता है।
3. सामाजिक संस्कारों का पतन होता है।
4. सामाजिक रीती रिवाजों का विनाश होता है।
5. पारिवारिक सम्मान प्रभावित होता है।
6. युवा पीढ़ी पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
7. नशा करने के बाद अनेक विवाद, दुर्घटनाएँ और अपराध जन्म लेते हैं।

साथ ही कल सायंकाल प्रदेश अध्यक्षों / प्रभारियों कि बैठक में भी इस मुद्दे पर चर्चा हुई थी, जिस पर मीटिंग में उपस्थित समस्त प्रदेश अध्यक्षों / प्रभारियों एवं महासभा पदाधिकारियों ने उक्त प्रस्ताव का स्वागत करते हुए अविलम्ब प्रदेश सभाओं और उनकी अधिनस्थ समस्त संस्थाओं के द्वारा सामाजिक आयोजनों के मंच से घोषणा करके एवं सामूहिक जागरूकता अभियान चलाकर समाज को जागृत करने के लिए अनवरत प्रयास करने का आश्वासन दिया।

**महामंत्री के निवेदन पर सदन में उपस्थित समस्त पदाधिकारियों ने अपने अपने स्थान पर खड़े होकर करतल ध्वनि के साथ इस प्रस्ताव का समर्थन किया।**

**एजेण्डा:6 - महासभा अंतर्गत युवा प्रकोष्ठ, महिला प्रकोष्ठ एवं सदस्यता मिशन की गतिविधियों की प्रगति बाबत चर्चा।**

महामंत्री ने बताया कि महासभा प्रधान ने वर्तमान कार्यकाल में कार्यकारिणी गठन के अलावा विभिन्न प्रकोष्ठों का गठन भी किया हुआ है। जिसमें मुख्य रूप से महिला प्रकोष्ठ, युवा प्रकोष्ठ, राजनीतिक प्रकोष्ठ, आध्यत्मिक प्रकोष्ठ, सदस्यता मिशन डेढ़ लाख एवं विधि प्रकोष्ठ आदि कार्यरत है। लेकिन पिछले डेढ़ साल से यह पाया गया है कि लगभग सभी प्रकोष्ठों के अध्यक्ष या प्रभारी महासभा हित में या समाज हित में कोई विशेष सहयोग नही कर रहे है जिससे इन प्रकोष्टों के गठन की उपयोगिता ही समाप्त होने के साथ-साथ महासभा की प्रगति एवं उसके कार्य कलापों पर भी विपरीत असर पड़ रहा है जो कतही उचित या सही नही है।

इसलिए महासभा प्रधान के आदेशानुसार मैं एक बार पुनः महासभा के अधीन गठित समस्त प्रकोष्ठों के अध्यक्षों से निवेदन करता हूँ कि अब वर्तमान कार्यकाल सिर्फ डेढ़ साल बचा है इसलिए बिना किसी देरी किये अविलम्ब महासभा द्वारा निर्धारित लक्ष्यों एवं दिशा निर्देशों का पालन करते हुए महासभा रूपी संगठन का और अधिक विस्तार करने तथा उसे सशक्त बनाने के लिए तन मन धन के साथ सकारात्मक सहयोग प्रदान करें

**एजेंडा नंबर – 7 समाज उत्थान एवं महासभा के लिए अन्य कोई सुझाव प्रधान जी की अनुमति से .........**

महामंत्री ने बताया कि कल शाम को प्रदेश अध्यक्षों / प्रभारियों की बैठक मे कई सुझाओं और अन्य मुद्दों पर विचार विमर्श कर निर्णय लिए गए जो बिन्दुवार आपके समक्ष अनुमोदन हेतु प्रस्तुत है।

1. प्रधानजी की अनुमति से मध्यप्रदेश के प्रदेश अध्यक्ष प्रभुदयाल बरनेला ने सुझाव दिया कि महासभा के अधीनस्थ संस्थाओं में अध्यक्ष पद की चुनाव प्रक्रिया सिर्फ तहसील स्तर तक ही जारी रखनी चाहिए। शाखा सभाओं के अध्यक्ष पद के चुनाव करवाने की प्रक्रिया को अविलम्ब बंद करके तहसील अध्यक्ष / जिला अध्यक्ष को अधिकृत कर देना चाहिए ताकि वह अपने कार्यकाल की अवधि के अनुसार अपने क्षेत्र में किसी भी योग्य व्यक्ति को शाखा अध्यक्ष मनोनीत करके शाखा सभा का गठन कर सकें जिससे संगठन का अधिक विस्तार होने के साथ ही महासभा की सदस्य संख्या में ज्यादा बढ़ोतरी होगी एवं निचले स्तर पर समाज में खींच-तान कम होकर सोहार्द एवं एकता का वातावरण कायम होगा। बैठक मे इस प्रस्ताव का सर्वसम्मत्ति से अविलम्ब लागू करने हेतु निर्णय लिया गया।

2. प्रधान जी की अनुमति से मध्यप्रदेश की महिला प्रदेश अध्यक्ष श्रीमती माया शर्मा ने सुझाव दिया कि मातृशक्ति को महासभा से अधिक से अधिक संख्या में जोड़ने के लिए महासभा की त्रैमासिक बैठकों में महिलाओं को शामिल होने की खुली छूट दी जाये, जिससे महिलाओं का सामाजिक समारोहों के प्रति लगाव पैदा होने के साथ ही सामाजिक समरोहों में मातृशक्ति की उपस्थिति एवं सहभागिता में भी उत्तरोतर वृद्धि होगी। इस प्रस्ताव का उपस्थित समस्त पदाधिकारियों ने एक साथ करतल ध्वनी के साथ स्वागत करते हुए सर्वसम्मत्ति से इस शर्त के साथ अनुमोदन किया कि किसी भी प्रदेश की कितनी भी महिलाएं महासभा की त्रैमासिक मीटिंग में शामिल हो सकती है परन्तु मीटिंग के किसी भी विषय पर अपने विचार अपने प्रदेश अध्यक्ष के माध्यम से ही प्रस्तुत कर सकेंगीं।

3. प्रधान जी की अनुमति से महाराष्ट्र के प्रदेश अध्यक्ष नानूराम जांगिड ने सुझाव दिया कि महासभा की मासिक पत्रिका में यदि सभी प्लेटिनम सदस्यों की फोटो प्रकाशित की जाती है तो भवन निर्माण में दान देने वाले सभी दानदाताओं के फोटो भी प्रकाशित करने चाहिए अन्यथा प्रधान के वर्तमान कार्यकाल में बनने वाले प्लैटिनम सदस्यों एवं दान दाताओं के फोटो ही प्रकाशित करने चाहिए या सिर्फ उसी माह के दानदाताओं व नये बने प्लैटिनम सदस्यों के फोटो सम्पूर्ण विवरण के साथ प्रकाशित किये जाने चाहिये। इस प्रस्ताव का उपस्थित समस्त पदाधिकारियों ने स्वागत करते हुए सर्वसम्मति से महासभा की मासिक पत्रिका में भविष्य मे वर्तमान प्रधान के कार्यकाल में बनने वाले प्लैटिनम सदस्यों एवं दान दाताओं के फोटो ही प्रकाशित करने का अनुमोदन किया।

**महामंत्री द्वारा सदन मे उपस्थित सभी पदाधिकारियों से एजेंडा संख्या :7 के बिन्दु 1 से 3 का अनुमोदन करने हेतु निवेदन किया गया जिस पर सदन में उपस्थित समस्त पदाधिकारियों ने अपने अपने हाथ खड़े करके लिए गए उपरोक्त निर्णयों का समर्थन किया।**

महासभा कार्यकारिणी के पदाधिकारियों एवं प्रदेश अध्यक्षों / प्रदेश प्रभारियों की मीटिंग में काफी सुझाव प्राप्त हुए जिनमें मुख्यत:-
1. शिक्षक प्रकोष्ठ, सरकारी अधिकारी प्रकोष्ठ, अधिवक्ता प्रकोष्ठ, तकनीकी प्रकोष्ठ, व्यवसाहिक प्रकोष्ठ, चिकित्सा अधिकारियों का प्रकोष्ठ इत्यादि का गठन करने बाबत।
2. महासभा भवन या अन्य सामाजिक संस्थाओं में समाज के बच्चों को विभिन्न प्रशासनिक प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने के लिए समाज के विषय विशेषज्ञ शिक्षकों से कोचिंग करवाने की व्यवस्था करने बाबत।
3. लव जिहाद एवं रिश्तो में बिखराव को रोकने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर एक उच्च स्तरीय समिति गठित करने पर विचार विमर्श करें जो इस प्रकार के मामलों को आपसी विचार-विमर्श से सुलझाने का प्रयास करें।
4. समाज की धर्मशालाओं एवं सामाजिक संस्थाओं के केयर टेकरों द्वारा समाज के लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करने बाबत सुझाव।
5. महासभा के पेन नम्बर पर खुले हुए बैंक खातों की सूचना एवं आय व्यय विवरण नही भेजने पर महासभा के चार्टर्ड अकाउंटेंट द्वारा ऐसे बैंक खतों को स्थाई रूप से बंद करवाने बाब।
6. अन्य विषयों में त्रैमासिक बैठक एवं शपथग्रहण समारोह में निमन्त्रण पत्रिका प्रिंट करवाने एवं उसमें पदाधिकारियों के नाम लिखने तथा समारोह के बेनर बनवाने, उसमें फोटो लगाने, विभिन्न अतिथियों, पदाधिकारियों को समारोह के मंच पर बैठाने, माला, शाफा, मोमेंटो से सम्मान करने, होटल में बैठक अयोजित नही करने, बैठकों में खर्चा कम करने, पदाधिकारियों के नाम पदनाम के अनुसार प्रोटोकोल का ध्यान रखना एवं अयोध्या भूमि खरीद मामले, बांकनेर स्कूल भवन एवं बसंत कुंज में छात्रावास निर्माण कार्य प्रगति आदि विषयों पर काफी चर्चा हुई। लेकिन किसी भी मुद्दे पर कोई सर्व सम्मति नही बनने के कारण यह निश्चय किया गया कि जब तक किसी भी प्रस्ताव पर कोई सर्व सम्मत निर्णय नही हो जाता तब तक महासभा द्वारा पूर्व में जारी दिशा निर्देशों की ही पालना सुनिश्चित करें।

**समरोह के दुसरे चरण** में कार्यक्रम के मुख्य अतिथि **कर्नाटक प्रदेश के महामहिम राज्यपाल थावरचंद गहलोत** का महासभा प्रधान रामपाल शर्मा एवं मंचासीन समस्त पदाधिकारियों द्वारा माला, दुपट्टा, साफा एवं स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मान किया गया। इसके साथ ही सम्पूर्ण सदन ने जोर दार करतल ध्वनि के साथ स्वागत एवं अभिनंदन किया।

तदुपरांत मुख्य अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलित करने के पश्चात राष्ट्र गीत एवं राष्ट्रगान से समारोह की पुनः विधिवत शुरुआत की गई। सर्व प्रथम महासभा महामंत्री द्वारा महासभा का संक्षिप्त परिचय एवं उसके कार्यों एवं उदेश्यों का विवरण प्रस्तुत किया गया। उसके बाद महासभा प्रधान रामपाल शर्मा एवं मुख्य अतिथि सुखदेव जांगिड तथा अंत में महामहिम राज्यपाल महोदय ने अपने आशीर्वचन से सम्पूर्ण सदन को सम्बोधित करते हुए मार्ग दर्शित किया। तत्पश्चात मंच संचालक एवं महासभा के मुख्य चुनाव अधिकारी प्रवीण शर्मा द्वारा धन्यवाद भाषण के साथ ही एक बार पुनः राष्ट्र गीत एवं राष्ट्र गान के बाद महामहिम को भावभीनी विदाई दी गई।

**समारोह के तीसरे चरण** में समाज के **प्रसिद्ध उद्योगपति एवं भामाशाह सुखदेव जांगिड, महासभा के मुख्य संरक्षक भंवर लाल कुलरिया, महासभा अंतर्राष्ट्रीय प्रकोष्ठ के अध्यक्ष अमराराम जांगिड** का महासभा के प्रधान रामपाल शर्मा एवं मंचासीन समस्त पदाधिकारियों द्वारा माला, दुपट्टा, साफा एवं स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मान किया गया। जिसका सम्पूर्ण सदन ने जोर दार तालियों की गड़ गड़ाहट के साथ स्वागत करते हुए अभिनंदन किया। उसके बाद मंचासीन अतिथियों, महासभा अंतर्राष्ट्रीय प्रकोष्ठ के अध्यक्ष अमराराम जांगिड, मुख्य सलाहकार श्रीगोपाल चोयल, महिला प्रकोष्ठ अध्यक्ष श्रीमती सविता शर्मा एवं राजनीतिक प्रकोष्ठ के अध्यक्ष राकेश जांगिड ने भी अपने अपने उद्बोधन से सदन को सम्बोधित किया। साथ - साथ महासभा प्रधान एवं विभिन्न पदाधिकारियों द्वारा प्रदेश सभा कर्नाटक की नवगठित कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण का कार्यक्रम भी सम्पन्न किया गया।

महासभा त्रैमासिक बैठक एवं प्रादेशिक सभा के शपथ ग्रहण समारोह में देश के विभिन्न राज्यों से पधारे हुए विशिष्ट अतिथियों एवं इस बैठक की शोभा को चार चांद लगाने वाले और बैठक की शोभा को द्विगुणित करने वाले अतिथियों में मुख्य रूप से महासभा के मुख्य संरक्षक भंवर लाल कुलरिया, अंतर्राष्ट्रीय प्रकोष्ठ के अध्यक्ष अमरा राम जांगिड, मुख्य सलाहकार श्रीगोपाल चोयल, मुख्य चुनाव अधिकारी प्रवीण शर्मा, महिला प्रकोष्ठ अध्यक्ष श्रीमती सविता जांगिड, अध्यात्मिक प्रकोष्ठ अध्यक्ष सत्यपाल वत्स, राजनीतिक प्रकोष्ठ अध्यक्ष राकेश जांगिड, श्रीमती सुमित्रा शर्मा अहमदाबाद, जांगिड रत्न मोहनलाल दायमा, भंवरलाल गुगरिया, पी.एल. शास्त्री, लीलूराम जांगिड एवं एम. डी. शर्मा उपस्थित रहे। विभिन्न प्रदेशों के प्रदेश अध्यक्ष जिनमे नानुराम जांगिड महाराष्ट्र, भोला राम शर्मा छतीसगढ़, प्रभु दयाल बरनेला मध्य प्रदेश, बाबूलाल शर्मा कर्नाटक, जसाराम सुथार गोवा, धर्मपाल शर्मा दिल्ली, राजेंद्रकुमार शर्मा गुजरात, सियाराम जांगिड तेलंगाना, नरेन्द्र शर्मा उतराखंड, रामकिशोर आसलिया तमिलनाडू, दिनेश बरडवा आंध्र प्रदेश मुख्य रूप से उपस्थित रहे। साथ ही विभिन्न प्रदेशों के प्रदेश प्रभारी जिनमे मदन लाल जांगिड दिल्ली, धर्मचंद शर्मा छतीसगढ़ , रमेश चंद शर्मा उतराखंड एवं रमेश शर्मा कर्नाटक उपस्थित रहे। विक्रम बरडवा प्रसिद्ध वकील एवं समाज सेवी जोधपुर, संतलाल जांगिड वरिष्ठ उपप्रधान, कोर कमेटी सदस्य - पी. डी. शर्मा देवास, ओम प्रकाश शर्मा दिल्ली, सांवर मल जांगिड गोवा तथा बजरंग लाल शर्मा दुर्ग और ऋषि प्रकाश जांगिड कार्यालय प्रभारी महासभा, जांगिड ब्राह्मण पत्रिका- सह सम्पादक प्रहलादराय शर्मा, महासभा के मीडिया प्रभारी हरिराम जांगिड, नरेश शर्मा, राजेश शर्मा एवं श्रीमती माया शर्मा अध्यक्ष महिला प्रकोष्ठ मध्यप्रदेश सहित देश के कोने - कोने से आए महासभा उच्च्य स्तरीय कमेटी सदस्य, कैलाश चंद शर्मा आया नगर दिल्ली, द्वारकाप्रसाद शर्मा वापी, मिश्रीलाल दायमा पुणे, रोहिताश जांगिड औरंगाबाद, सुरेश शर्मा नीमच, समस्त पदाधिकारियों, भामाशाहों, प्लेटिनम सदस्यों, महासभा की समस्त कमेटियों के सदस्यों एवं बड़ी संख्या में उपस्थित मातृ शक्ति, युवा शक्ति एवं सभा कक्ष में उपस्थित आदरणीय प्रबुद्ध समाज बंधुओं का महासभा महामंत्री ने समारोह को सफल बनाने के लिए दिल की असीम गहराइयों से धन्यवाद एवं आभार प्रकट किया।

साथ ही बेंगलुरु में शानदार आयोजन और उत्कृष्ट व्यवस्थाओं के लिए आज के समारोह आयोजन के मुख्य कर्णधार प्रदेश सभा कर्नाटक के अध्यक्ष बाबु लाल शर्मा और उनकी ऊर्जा से भरपूर टीम, कार्यकारी प्रदेश अध्यक्ष, प्रदेश महामंत्री राजेंद्र जांगिड, खैरथल-अलवर के जिला अध्यक्ष नरेश जांगिड, दक्षिण भारत के प्रदेश प्रभारी रमेश शर्मा, पूर्व प्रदेश प्रभारी रवि जांगिड, घनश्याम जांगिड, रमेश चंद शर्मा, रामदेव धामु, रमेशचंद कुलरिया, नारायण सुथार एवं वरिष्ठ उप प्रधान संतलाल जांगिड, मनमोहन जांगिड, मुकेश जांगिड एवं प्रदेश के समस्त भामाशाहों, प्लैटिनम सदस्यों एवं प्रदेश युवा प्रकोष्ठ अध्यक्ष, प्रदेश कोषाध्यक्ष, जिला अध्यक्ष बेंगलुरु एवं बेंगलुरु के समस्त कार्यकर्ताओं की टीम को उनके अथक प्रयासों से महासभा की त्रैमासिक बैठक एवं शपथ ग्रहण समारोह को भव्यता प्रदान करने के लिए, आगंतुक समाज बन्धुओं की शानदार मेहमान नवाजी के लिए, शानदार ट्रांसपोर्ट व्यवस्था, ठहरने की उत्तम व्यवस्था, स्वादिष्ट भोजन प्रसादी एवं बहुत ही सुंदर, सुव्यस्थित और शानदार आयोजन करने के साथ - साथ भरपूर सहयोग और समर्थन देने की अनूठी मिशाल कायम करने के लिए महासभा दिल्ली की ओर से महामंत्री सांवरमल जांगिड ने कोटि- कोटि आभार प्रकट करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया।

महासभा की त्रैमासिक मीटिंग एवं शपथ ग्रहण समरोह का मंच संचालन बड़े ही बेहतरीन ढंग एवं कुशलतापूर्वक तरीके से करने के लिए महासभा के मुख्य चुनाव अधिकारी प्रवीण शर्मा नीमच का भी महासभा महामंत्री सांवरमल जांगिड ने महासभा दिल्ली की ओर से कोटि - कोटि आभार एवं धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि आपने महामहिम राज्यपाल महोदय के कार्यक्रम का सफल एवं क्रमबद्ध संचालन करके समारोह की गरिमा एवं क्रमबद्धता को बनाए रखने में सहयोग प्रदान करने एवं मेरा सक्रिय साथ निभाने के लिए एक बार पुनः हार्दिक आभार – धन्यवाद।

अंत में महामंत्री ने भगवान श्री विश्वकर्मा से समाज के सामाजिक उत्थान एवं विकास तथा उज्ज्वल भविष्य के लिए मंगल कामना के साथ ही प्रधानजी की आज्ञा से एक बार पुन: सभी मेहमानों और प्रदेश सभा कर्नाटक का हार्दिक आभार और कृतज्ञता सहित, विपुल धन्यवाद ज्ञापित करते हुए त्रैमासिक बैठक एवं शपथ ग्रहण समारोह के समापन की घोषणा की।

प्रतिलिपि :-
समस्त प्रदेशाध्यक्षों, प्रदेश प्रभारियों एवं महासभा पदाधिकारीगणों को सूचनार्थ
उतराखंड, उतरप्रदेश, पंजाब, दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान, कर्नाटक, गोवा,
महाराष्ट्र, छतीसगढ़, तेलंगाना, मध्यप्रदेश, तमिलनाडू एवं पश्चिम बंगाल

( सांवरमल जांगिड )
महामंत्री – महासभा

# देश के 80वें स्वतंत्रता दिवस पर महासभा प्रधान रामपाल शर्मा द्वारा भगवान विश्वकर्मा मंदिर, कनका नगर, बैंगलूरू मे झण्डारोहण किया गया

देश के 80वें स्वतंत्रता दिवस और हरियाली तीज के पावन अवसर पर **महासभा प्रधान रामपाल शर्मा ने देशवासियों एवं समाजबंधुओं को हार्दिक शुभकामनाएँ** देते हुए कहा कि भारत की स्वतंत्रता असंख्य वीरों के त्याग, तपस्या, संघर्ष और बलिदान का परिणाम है। **राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के नेतृत्व में चले स्वतंत्रता आंदोलन में सुभाष चंद्र बोस, लाला लाजपत राय, खुदीराम बोस, सरदार वल्लभभाई पटेल सहित लाखों देशभक्तों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।** अनेक वीरों ने अंग्रेजी शासन की यातनाएँ सहते हुए अपने प्राणों का बलिदान दिया, लेकिन देश की स्वतंत्रता और सम्मान से कभी समझौता नहीं किया।

महासभा प्रधान ने ये विचार बेंगलुरु में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर श्री जांगिड ब्राह्मण समाज सेवा समिति, कनका नगर द्वारा निर्मित भगवान श्री विश्वकर्मा मंदिर में पूजा-अर्चना करने तथा परिसर में राष्ट्रीय ध्वज फहराने के बाद उपस्थित समाजबंधुओं को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। **इस अवसर पर भारत माता की जय और वंदे मातरम् के जयघोष से पूरा वातावरण देशभक्ति से ओत-प्रोत हो गया।**

उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता दिवस केवल कैलेंडर की एक तारीख नहीं, बल्कि उन लाखों वीरों के सपनों और बलिदानों की याद दिलाने वाला ऐतिहासिक अवसर है, जिन्होंने बिना जाति-पाति और भेदभाव के देश की आजादी के लिए संघर्ष किया। अनेक युवाओं ने हँसते-हँसते फाँसी के फंदे को स्वीकार किया और जेलों में असहनीय यातनाएँ सहीं, लेकिन उनके साहस और राष्ट्रभक्ति में कभी कमी नहीं आई। उनके त्याग और शौर्य की गाथाएँ आज भी देशवासियों के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं। **महासभा प्रधान** ने कहा कि 9 से 17 अगस्त तक चलाए गए **'हर घर तिरंगा'** अभियान ने देशभर में राष्ट्रभक्ति की भावना को और मजबूत किया। वंदे मातरम् ने भी स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान लोगों में राष्ट्रप्रेम और स्वाभिमान की भावना जगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आज आवश्यकता है कि हम स्वतंत्रता के वास्तविक महत्व को समझें और देश की एकता, अखंडता तथा सामाजिक समरसता को मजबूत करने में अपना योगदान दें।

**उन्होंने समाजबंधुओं से 15 सितंबर को महर्षि अंगिरा प्राकट्योत्सव तथा 17 सितंबर को भगवान विश्वकर्मा पूजा दिवस समारोह को श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाने का भी आह्वान किया।**

**कर्नाटक प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल शर्मा** ने कहा कि आज भारत खुली हवा में साँस लेने के साथ विकास के नए आयाम स्थापित कर रहा है। स्वतंत्रता के समय जहाँ देश अनेक चुनौतियों से जूझ रहा था, वहीं आज भारत विश्व की प्रमुख आर्थिक एवं प्रगतिशील शक्तियों में अपनी पहचान बना रहा है। उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता दिवस केवल ध्वजारोहण और राष्ट्रगान तक सीमित न रहे, बल्कि हम सभी यह संकल्प लें कि देश को बेहतर बनाने में अपना योगदान देंगे। ऐसे आयोजन समाज में एकता, सहयोग और राष्ट्रभक्ति की भावना को मजबूत करते हैं।

भामाशाह एवं उद्योगपति नरेश शर्मा ने कहा कि देशभक्ति की सार्थकता तभी है, जब वह हमारे शब्दों के साथ-साथ हमारे कर्मों में भी दिखाई दे। हमें शहीदों और राष्ट्रनायकों को नमन करते हुए ऐसा भारत बनाने का संकल्प लेना चाहिए, जहाँ प्रेम, सम्मान, समान अवसर, सामाजिक समरसता और मानवता सर्वोच्च स्थान पर हों। इस अवसर पर दक्षिण भारत प्रभारी रमेश कुमार जांगिड, श्री जांगिड ब्राह्मण समाज सेवा समिति के सचिव संतलाल जांगिड, राधेश्याम जांगिड, राजेंद्र जांगिड, गिरीराज, प्रकाश, प्रदीप, सुमेर, दीपक, नरेश, सुरेश, रुपचंद, हीरालाल, बलकेश, सतपाल, मदन, विनोद मुकेश एवं मुंशी जांगिड सहित अनेक समाजबंधु उपस्थित रहे। ***

# रक्षा बंधन : भारतीय संस्कृति का सनातन रक्षा-सूत्र

**महासभा के पूर्व प्रधान – कैलाशचंद्र बरनेला**

हमारी भारतीय संस्कृति विश्व की उन प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक है, जिसने मानव जीवन को केवल भौतिक सुख-सुविधाओं तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे धर्म, संस्कृति, कर्तव्य, नैतिकता और पारिवारिक मूल्यों के साथ जोड़कर देखा। भारत में मनाए जाने वाले प्रत्येक पर्व के पीछे कोई न कोई गहन आध्यात्मिक, सामाजिक अथवा सांस्कृतिक उद्देश्य निहित है। इन्हीं पर्वों में श्रावण पूर्णिमा को मनाया जाने वाला रक्षा बंधन भारतीय संस्कृति का अत्यंत पवित्र और भावनात्मक पर्व है।

सामान्यतः इसे भाई-बहन के स्नेह का पर्व माना जाता है, किंतु यदि इसके ऐतिहासिक, धार्मिक और सांस्कृतिक पक्षों का गहन अध्ययन किया जाए तो स्पष्ट होता है कि रक्षा बंधन केवल भाई की कलाई पर राखी बाँधने का उत्सव नहीं, बल्कि कर्तव्य, विश्वास, संरक्षण, सामाजिक उत्तरदायित्व, पारिवारिक एकता, राष्ट्रीय चेतना तथा मानवीय मूल्यों का महापर्व है।

आज जब वैश्वीकरण, उपभोक्तावाद, एकल परिवार, सामाजिक विघटन और नैतिक मूल्यों के क्षरण की चुनौतियाँ हमारे सामने हैं, तब रक्षा बंधन का महत्व पहले से कहीं अधिक बढ़ जाता है। भारतीय परंपरा में **"रक्षा"** शब्द का अर्थ केवल किसी व्यक्ति की शारीरिक सुरक्षा नहीं है। **संस्कृत साहित्य में रक्षा का अर्थ है—धर्म की रक्षा, संस्कृति की रक्षा, परिवार की रक्षा, समाज की रक्षा, राष्ट्र की रक्षा तथा प्रकृति की रक्षा।** वैदिक यज्ञों में आचार्य यजमान की कलाई पर रक्षा-सूत्र बाँधते हुए यह मंत्र उच्चारित करते हैं - **"येन बद्धो बलिराजा दानवेन्द्रो महाबलः। तेन त्वामभिबध्नामि रक्षे मा चल मा चल॥"**

अर्थात जिस रक्षा-सूत्र से महाबली राजा बलि को बाँधा गया था, उसी रक्षा-सूत्र से मैं तुम्हें बाँधता हूँ। यह रक्षा-सूत्र तुम्हारी रक्षा करे। यह मंत्र स्पष्ट करता है कि रक्षा-सूत्र केवल धागा नहीं, बल्कि शुभ संकल्प, आशीर्वाद और उत्तरदायित्व का प्रतीक है।

वैदिक युग में रक्षा-सूत्र का प्रयोग यज्ञ, उपनयन, युद्ध-प्रस्थान तथा धार्मिक अनुष्ठानों में होता था। उस समय यह किसी एक संबंध तक सीमित नहीं था। भविष्य पुराण में वर्णित है कि देवासुर संग्राम में इंद्राणी द्वारा इंद्र की कलाई पर रक्षा-सूत्र बाँधने के पश्चात देवताओं को विजय प्राप्त हुई। इससे रक्षा-सूत्र को धार्मिक शक्ति एवं शुभता का प्रतीक माना गया।

महाभारत में श्रीकृष्ण और द्रौपदी की कथा रक्षा बंधन की भावना का सर्वोत्तम उदाहरण प्रस्तुत करती है। द्रौपदी ने श्रीकृष्ण की घायल उँगली पर अपने वस्त्र का अंश बाँधा और श्रीकृष्ण ने जीवन भर उसकी रक्षा का वचन निभाया। यहाँ रक्षा रक्त-संबंध नहीं, बल्कि विश्वास और करुणा पर आधारित है। **पौराणिक मान्यता है कि यमुना द्वारा यमराज को रक्षा-सूत्र बाँधने पर यमराज ने यह वरदान दिया कि इस दिन बहन से राखी बंधवाने वाला भाई दीर्घायु होगा।** राजपूत राज्यों में युद्ध पर जाते समय रानियाँ वीरों की कलाई पर रक्षा-सूत्र बाँधती थीं। यह विजय और धर्मरक्षा का प्रतीक था। **रानी कर्णावती और मुगल सम्राट हुमायूँ की कथा** भी राखी के सांस्कृतिक प्रभाव को रेखांकित करती है। यद्यपि इस प्रसंग के ऐतिहासिक प्रमाणों पर मतभेद हैं, फिर भी यह कथा भारतीय लोकस्मृति में राखी की मर्यादा और सम्मान का प्रतीक बन चुकी है।

भारतीय दर्शन संबंधों को अधिकार नहीं, उत्तरदायित्व मानता है। रक्षा बंधन इसी सिद्धांत को मूर्त रूप देता है। यह पर्व हमें सिखाता है - शक्ति का उपयोग संरक्षण के लिए हो। संबंध स्वार्थ से नहीं, विश्वास से बनते हैं। नारी सम्मान समाज की पहचान है। परिवार समाज की प्रथम पाठशाला है। धर्म केवल पूजा नहीं, बल्कि कर्तव्य पालन है।

भारत की संयुक्त परिवार व्यवस्था सदियों तक विश्व के लिए आदर्श रही। भाई-बहन का संबंध केवल जन्म का नहीं, बल्कि संस्कारों का संबंध माना गया। रक्षा बंधन परिवार को जोड़ने वाला भावनात्मक सूत्र है। बहन विवाह के बाद चाहे कहीं भी चली जाए, यह पर्व उसे अपने मायके और अपने मूल परिवार से जोड़े रखता है। आज जब परिवार छोटे हो रहे हैं और संबंध औपचारिक बनते जा रहे हैं, तब रक्षा बंधन रिश्तों को पुनर्जीवित करने का अवसर प्रदान करता है

आज समाज अनेक चुनौतियों से जूझ रहा है - महिलाओं के विरुद्ध अपराध, पारिवारिक विघटन, वृद्ध माता-पिता की उपेक्षा, नैतिक मूल्यों का ह्रास, सोशल मीडिया के कारण भावनात्मक दूरी और बढ़ता उपभोक्तावाद। इन परिस्थितियों में रक्षा बंधन का संदेश अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है।

यदि प्रत्येक पुरुष यह संकल्प ले कि वह प्रत्येक महिला का सम्मान करेगा, प्रत्येक परिवार अपने संबंधों को समय देगा और समाज कमजोर वर्गों की सुरक्षा का दायित्व स्वीकार करेगा, तो अनेक सामाजिक समस्याओं का समाधान संभव है।

**रक्षा बंधन : केवल भाई-बहन तक सीमित नहीं बल्कि भारतीय परंपरा में रक्षा-सूत्र अनेक संबंधों में बाँधा जाता है - गुरु–शिष्य, पुरोहित–यजमान, सैनिक–नागरिक, संत–समाज, मित्र–मित्र और राजा–प्रजा।**

आज अनेक स्थानों पर बेटियाँ अपने पिता को, बहनें बहनों को, छात्राएँ सैनिकों को तथा नागरिक पुलिसकर्मियों, चिकित्सकों और समाजसेवियों को भी राखी बाँधकर सम्मान प्रकट करती हैं।

**रक्षा बंधन केवल व्यक्तिगत नहीं, राष्ट्रीय पर्व भी है।** देश की सीमाओं पर तैनात सैनिक करोड़ों भारतीय बहनों की रक्षा का दायित्व निभाते हैं। इसलिए हर वर्ष लाखों राखियाँ सीमा पर भेजी जाती हैं। यह पर्व हमें स्मरण कराता है कि राष्ट्र की सुरक्षा केवल सेना का दायित्व नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। राष्ट्रध्वज, संविधान, संस्कृति और सामाजिक सौहार्द की रक्षा भी रक्षा बंधन की व्यापक अवधारणा का ही अंग है।

पिछले कुछ वर्षों में अनेक विद्यालयों, सामाजिक संगठनों एवं पर्यावरण कार्यकर्ताओं ने वृक्षों को राखी बाँधने की परंपरा प्रारंभ की है। **यह अत्यंत सार्थक संदेश है : यदि वृक्ष सुरक्षित रहेंगे तो जल सुरक्षित रहेगा। यदि जल सुरक्षित रहेगा तो जीवन सुरक्षित रहेगा।अतः रक्षा बंधन हमें प्रकृति संरक्षण का भी संदेश देता है।**

**हमारा समाज भगवान विश्वकर्मा की परंपरा का वाहक माना जाता है।** सृजन, निर्माण, परिश्रम, कौशल और संस्कृति इसकी प्रमुख पहचान हैं। रक्षा बंधन के अवसर पर हमारा जांगिड समाज केवल पारिवारिक उत्सव तक सीमित न रहकर निम्न संकल्प ले सकता है—समाज की प्रत्येक बेटी की शिक्षा में सहयोग। निर्धन परिवारों की कन्याओं के विवाह में सहायता। नारी सम्मान और सुरक्षा के प्रति जनजागरण। समाज में आपसी वैमनस्य समाप्त कर संगठन को सुदृढ़ करना। युवाओं को संस्कार, शिक्षा और रोजगार के लिए प्रेरित करना। समाज की सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण। परिवारों में संवाद और एकता बढ़ाना। यदि रक्षा बंधन को सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़ा जाए तो यह समाज-संगठन का प्रभावी माध्यम बन सकता है।

वर्तमान समय में रक्षा बंधन के स्वरूप में अनेक सकारात्मक परिवर्तन आए हैं जैसे डिजिटल माध्यम से दूर रह रहे भाई-बहन भी जुड़े रहते हैं। पर्यावरण-अनुकूल राखियों का प्रचलन बढ़ा है। सैनिकों और समाजसेवियों को राखी बाँधने की परंपरा विकसित हुई है। **इसके साथ ही रक्षाबंधन के पर्व पर कुछ नकारात्मक परिवर्तन भी सामने आए है जैसे अत्यधिक व्यावसायीकरण। महंगे उपहारों की प्रतिस्पर्धा। सोशल मीडिया तक सीमित शुभकामनाएँ। पर्व की सांस्कृतिक भावना का क्षय। आवश्यक है कि हम इस पर्व की आत्मा को समझें और दिखावे से बचें।**

रक्षा बंधन पर्व हमें केवल बहन की रक्षा का नहीं, बल्कि धर्म की रक्षा, संस्कृति की रक्षा, परिवार की रक्षा, समाज की रक्षा, पर्यावरण की रक्षा, राष्ट्र की रक्षा और मानवता की रक्षा का संदेश देता है। यदि राखी केवल हाथ पर बँधे और विचारों में परिवर्तन न आए, तो उसका उद्देश्य अधूरा रह जाता है।

आज के युवा रक्षा बंधन को सामाजिक अभियान बना सकते हैं जैसे महिला सम्मान की शपथ। कन्या शिक्षा का सहयोग। नशामुक्ति अभियान। रक्तदान और अंगदान के प्रति जागरूकता। पर्यावरण संरक्षण। साइबर सुरक्षा और डिजिटल शिष्टाचार। बुजुर्गों के सम्मान का संकल्प। यही रक्षा बंधन की आधुनिक और सार्थक व्याख्या होगी।

रक्षा बंधन भारतीय संस्कृति की उस अमूल्य परंपरा का प्रतीक है, जिसमें प्रेम के साथ कर्तव्य जुड़ा है, स्नेह के साथ उत्तरदायित्व जुड़ा है और संबंधों के साथ संस्कार जुड़े हैं। यह पर्व हमें याद दिलाता है कि समाज केवल कानूनों से नहीं, बल्कि विश्वास, आत्मीयता और नैतिक मूल्यों से चलता है। आज आवश्यकता है कि रक्षा बंधन को केवल औपचारिक अनुष्ठान न रहने दिया जाए। इसे नारी सम्मान, पारिवारिक एकता, सामाजिक समरसता, पर्यावरण संरक्षण और राष्ट्र निर्माण के व्यापक अभियान से जोड़ा जाए। जब रक्षा का अर्थ प्रत्येक बेटी की गरिमा, प्रत्येक परिवार की एकता, प्रत्येक नागरिक के अधिकार, प्रत्येक वृक्ष के संरक्षण और राष्ट्र की अखंडता से जुड़ जाएगा, तभी इस पर्व का वास्तविक उद्देश्य पूर्ण होगा।

यह पावन रक्षा-सूत्र हमें स्मरण कराता है कि जीवन का सबसे मजबूत बंधन रक्त का नहीं, बल्कि विश्वास, प्रेम, सेवा, त्याग और कर्तव्य का होता है। यही रक्षा बंधन की सनातन भावना है, यही उसकी ऐतिहासिक विरासत है और यही उसके उज्ज्वल भविष्य की आधारशिला भी है।

****

# हम सबका राष्ट्रीय पर्व - स्वतंत्रता दिवस

यह मान्यता है कि **"परतंत्र्यात्परं दु:खं न स्वातंत्रयात्परं सुखम"** अर्थात **परतंत्रता से बढ़कर दु:ख नहीं और स्वतंत्रता से बढ़कर सुख नहीं** इसीलिये 15 अगस्त हम भारतीयों के लिये सबसे अधिक खुशी का दिन है। **यह देश के लिए अनमोल दिवस है, क्योंकि सन् 1947 के इसी दिन हमें एक सौ अस्सी वर्षों की ब्रिटिश गुलामी से मुक्ति मिली थी। पंद्रह अगस्त ही भारत का स्वतंत्रता दिवस कहलाता है। यह दिवस हमारे राष्ट्रीय इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित अद्भुत और अपूर्व दिवस है।**

भारत की स्वतंत्रता के अंकुर सन् 1857 में प्रकट हुए थे। स्वतंत्रता के उस प्रथम संग्राम को हमारे विदेशी शासकों ने कभी सिपाही विद्रोह कहा और कभी उसे गदर की संज्ञा प्रदान की। तब से लेकर निरंतर नब्बे वर्षों तक स्वतंत्रता के अंकुर की रक्षा ही नही की जाती रही बल्कि उसको अपने श्रम एवं रक्त-बिन्दुओं से सींचकर विकसित भी किया जाता रहा। आजादी रूपी इस पौधे को अपने रक्तदान से सींचकर बड़ा करने वाले बलिदानियों की लम्बी सूची है। अनेक क्रांतिकारी वीर सपूतों ने इस पौधे की रक्षार्थ फांसी के तख्ते का आलिंगन किया तथा क्रूर शासकों की गोलियों का और बन्दूकों का सामना किया। **स्वतंत्रता के इस संघर्ष में अनेक बुद्धिजीवियों, चिंतकों और समाजसेवियों ने भी जमकर भाग लिया। कवि और लेखकों के योगदान भी अभुतपूर्व है। कवियों ने अपनी कविताओं के माध्यम से ऐसा राष्ट्रीय प्रेम फूंका कि सारे देश में क्रांति की ज्वाला धधक उठी। लेखकों ने अपने उपन्यासों और कहानियों के द्वारा राष्ट्रीय चेतना को जागृत किया जिससे घर-घर में स्वतंत्रता का संदेश पहुंचा।**

स्वतंत्रता के संग्राम में अपनी भागीदारी निभाने वालों का स्मरण करना और उनके प्रति नतमस्तक होना हमारा पावन कर्तव्य होना चाहिए। स्वतंत्रता दिवस, वीर सपूतों के स्मरण के साथ-साथ आत्मावलोकन का भी दिवस है। हमें गंभीरता पूर्वक यह विचार करना चाहिए कि जिन सपूतों ने भारत की पूर्ण स्वतंत्रता हेतु अपना सर्वस्व दाव पर लगाया है, क्या हम उनके सपनों को साकार कर सके हैं। वे भारत के जिस स्वरूप की कल्पना लेकर चले थे, क्या भारत को वह स्वरूप प्रदान करने में हम कई दशकों के बाद भी सफल हुए हैं और क्या अब भी हम ठीक दिशा में बढ़ रहे हैं। शायद नही, क्योंकि आज स्वतंत्रता का गलत अर्थ लगाया जा रहा है। आज स्वतंत्रता का अर्थ हमने स्वच्छंदता एवं मनमानी लगा लिया है। इसी कारण सर्वत्र अराजकता की स्थिति उत्पन्न हो रही है। सरकारी कार्यालयों, बड़े-बड़े उद्योग संस्थानों, रेलों के परिचालन एवं शिक्षण संस्थाओं तक पर इसका कुप्रभाव स्पष्ट दिखाई दे रहा है। यह भाव हमारी राष्ट्रीय प्रगति में बाधक है। स्वतंत्रता का अर्थ तो कर्तव्य पालन एवं उत्तरदायित्व का मुस्तैदी से निर्वहन मात्र होना चाहिए।

स्वतंत्रता के पूर्व हमारे मन में स्वार्थ भावना नही थी। नैतिकता तथा ईमानदारी की भावना से हम परिपूर्ण थे। मानवीय मूल्य हमारी सबसे बड़ी पूंजी, धरोहर एवं संस्कृति थी, जो आज लुप्त होती जा रही है। हम अलगाववाद और विघटन को आश्रय देने लगें हैं। भाषा, धर्म, जाति आदि संकीर्ण भावनाओं से ग्रस्त होकर राष्ट्रीयता को दर-किनार करने लगे हैं। भारत जलने लगा है और हमारी नैतिकता भस्म हो रही है एवं संस्कृति स्वाहा होने लगी है। स्वतंत्रता के बाद इतने वर्षों में भी देश की वांछित प्रगति नहीं हो सकी है, इसके लिये सरकार, नेता, पूंजीपति वर्ग तो जिम्मेदार है ही, देश की जनता भी कम जिम्मेदार नही है। खैर ... बीती बातों को भूलें और स्वतंत्रता संग्राम के वीर सपूतों के स्वप्न के भारत का निर्माण करें।

स्वतंत्रता दिवस के दिन देश में उत्पन्न होने वाले पुष्पों को शहीदों की स्मृति में उनको अर्पित करें। हमारे हृदय में उत्पन्न होने वाला आदर एवं सम्मान उन समस्त दिवंगत शहीदों की स्मृति को अमर बनाने वाला हो जिन्होने भारतमाता की स्वतंत्रता हेतु अपना सर्वस्व निछावर कर दिया। चूंकि हमें स्वतंत्रता बहुत लंबे एवं कड़े संघर्षो तथा देशवासियों के खून की नदियां बहाने के रूप में भारी कीमत चुकाने के बदले में प्राप्त हुई है **अत: हमारा कर्तव्य है कि हम उनके द्वारा सौंपी गई स्वतंत्रता की इस मशाल को सदैव प्रज्वलित रखें और प्रण करें कि हमारी यह स्वतंत्रता हम सदैव कायम रखेंगे। यदि हम देश को सर्वोपरि रखकर आज भी अपने प्राणों का उत्सर्ग करने को तैयार हैं, तभी यह कहा जा सकता है कि स्वतंत्रता के वीर सपूतों का बलिदान व्यर्थ नही गया और हम सही मायने में स्वतंत्र हैं। सभी को राष्ट्रीय पर्व स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।**

****

**प्रवीण शर्मा - नीमच, मुख्य चुनाव अधिकारी-महासभा,**

# रामानंदी संप्रदाय की एक प्रमुख पीठ – रैवासा धाम

रैवासा धाम राजस्थान के सीकर जिले में स्थित एक धार्मिक एवं ऐतिहासिक तीर्थस्थल है। यह स्थान विशेष रूप से प्राचीन आराधना, संत परंपरा तथा आध्यात्मिक साधना के लिय जाना जाता है। रैवासा धाम अरावली पहाड़ियों के बीच स्थित होने के कारण प्राकृतिक सौन्दर्य और आध्यात्मिक वातावरण का अद्भुत संगम प्रस्तुत करता है।

**रैवासा पीठ (रैवासा धाम) के संस्थापक स्वामी अग्रदेवाचार्य (अग्रदास जी महाराज) हैं।** उन्होंने 16वीं शताब्दी (विक्रम संवत 1570) में इस प्रमुख रामानंदी संप्रदाय पीठ की स्थापना की थी। स्वामी अग्रदास जी महाराज महान संत कृष्णदास पयहारी के शिष्य थे। यह पीठ राजस्थान के सीकर जिले के रैवासा (रेवासा) ग्राम में स्थित है। **यह गद्दी रामानंदीय श्री संप्रदाय की प्रमुख प्रधान पीठों में गिनी जाती है।**

प्राचीन काल में इस क्षेत्र से होकर व्यापारिक मार्ग गुजरता था जो आगरा दिल्ली होता हुआ दक्षिण मे जाता था। इस मार्ग से व्यापारी ऊंटों और बैलों पर सामान लेकर चलते थे और यहाँ रात्रि में विश्राम करते थे। रात्रि विश्राम स्थल होने के कारण इस स्थान का नाम रात्रिवसा (रतवासा) पड़ा जो कालांतर में अपभ्रमित होकर रैवासा हो गया।

**रैवासा पीठ के प्रवर्तक स्वामी अग्रदेवाचार्य जी को संत श्री पयोहारी जी महाराज द्वारा दीक्षा संस्कार दिया गया था।** उन्होंने श्री पयोहारीजी महाराज के एक अन्य शिष्य श्री कील्हदासजी महाराज के साथ गलता जी में रहकर तप एवं साधना की थी। **श्री पयोहारीजी महाराज के देवलोकगमन पर उनके वरिष्ठ शिष्य श्री कील्हदासजी महाराज को गलता जी की गद्दी पर आसीन किया गया और स्वामी अग्रदेवाचार्यजी महाराज रैवसा आ गए।** यहाँ आने के बाद वह पर्वत की तलहटी में पीपल के वृक्ष के नीचे तपलीन रहे। अग्रदेवाचार्यजी महाराज की कठोर साधना की कथा चारों ओर द्रुतगती से फैलने लगी। **उनकी कीर्ति कथा सुनकर महाराजा मानसिंह, विक्रम संवत 1619 में महाराजश्री के दर्शन करने आए और महाराज श्री के दर्शन एवं चमत्कारों के प्रभाव से उनके मन में वैष्णव भक्ति का उदय हुआ। आगे चलकर दिल्ली के तत्कालीन बादशाह अकबर अजमेर यात्रा पर जाते समय महाराज के दर्शन करने आए। महाराज के दर्शन एवं चमत्कारों से प्रभावित होकर अकबर द्वारा गौवंश के लिए 1600 बीघा चारागाह भूमि का पट्टा प्रदान किया गया था।**

**रैवासा धाम में स्थित श्रीजानकीनाथ बड़ा मंदिर की स्थापना विक्रम संवत 1570 में हुई थी।** यह रामानंद संप्रदाय की सबसे प्राचीन पीठ है। रैवासा (सीकर) में मुख्य रूप से भगवान राम और माता सीता को समर्पित प्रसिद्ध जानकीनाथ मंदिर (रैवासा धाम / श्री अग्रपीठ) स्थित है। इसे सीकर जिले के सबसे पुराने और महत्वपूर्ण धार्मिक स्थलों में गिना जाता है। मुख्य मंदिर के बाहर बालाजी महाराज का भव्य मंदिर है जिसका निर्माण जिला सभा सीकर के वर्तमान अध्यक्ष बनवारीलाल खण्डेलसर ने कराया है। यह पीठ रामानंदीय संप्रदाय के 36 द्वाराचायों में से 13 द्वाराचायों की साधना का केंद्र रही है, जिन्होंने देशभर में पीठ स्थापित किए थे। रैवासा पीठ से दो लाख संत व संप्रदाय के लोग जुड़े हैं। यह देश की बड़ी पीठों में इसका नाम आता है। **प्रारंभ में यह क्षेत्र चंदेल शासकों के अधीन था जो बाद में खंडेला के शेखावत शासन में रायफल शासकों के अधीन चल गया। मंदिर के पश्चिम के पृष्ठभाग में श्री अग्रदेवाचार्य जी महाराज की तपस्थली है। यहाँ उनके द्वारा निर्मित कुआं एवं धूणी आज भी मौजूद है। मंदिर परिसर में एक कुंड (बावड़ी) तथा सती स्थान है जहाँ महाराजश्री को माता जानकी के दर्शन हुए थे।**

**वैष्णव संप्रदाय में 37 में से 12 आचार्य पीठ इसी गद्दी से निकले हैं।**

इस पावन धरा पर संतों का आवागमन बना ही रहता है। कहतें है, **संत गुरु नानक ने भी यहाँ कुछ समय निवास किया था।** अग्रदेवाचार्यजी के शिष्य संत नाभाजी 16वीं शताब्दी में वृंदावन गए थे, जहां गोस्वामी तुलसीदासजी से उनकी मुलाकात हुई थी। वहां से वे दोनों साथ ही रैवासा आए। गोस्वामी तुलसीदास जी ने चार महीने यहाँ बिताए थे और प्रसिद्ध पद **'जानकीनाथ सहाय करें तब कौन बिगार करें नर तेरो' की रचना की थी।** श्री गुरु नानक देव जी महाराज भी यहाँ सवा महीने विराजे थे। संत दादू दयाल तीन बार इस पवित्र धाम में पधारे थे। **सन् 1769 ईस्वी से पहले यहां नाभाचार्य महाराज ने प्रसिद्ध ग्रंथ भक्तमाल की रचना की थी।**

महाराजश्री एक तपस्वी और साधनाशील होने के साथ - साथ एक सफल रचनाकार भी थे, जिनकी कई रचनाएं एवं पुस्तकें पीठ में विद्यमान हैं। 80 वर्ष की आयु में विक्रम संवत 1632 में साकेत गमन के बाद उनके वरिष्ठ शिष्य श्री विनोदाचार्यजी गद्दी पर आसीन हुए। गुरु शिष्य परंपरा के तहत अब तक 18 संत महाराज की गद्दी पर आसीन हो चुके है। **मठ के 16 वें महाराज श्री शालगरामचार्य महाराज के साकेत गमन के पश्चात स्वामी (डॉ) राघवाचार्य वेदांती विक्रम संवत 2039 (सन् 1982) में गद्दी पर आसीन हुए।** वर्ष 1989 में आप वेदांताचार्य की उपाधि से अलंकृत हुए और भारत सरकार द्वारा आपको स्वर्ण पदक से नवाजा गया। स्वामी राघवाचार्य ने राजस्थान ही नहीं बल्कि पूरे भारत मे एक प्रखर विद्वान और संत के रूप मे ख्याति अर्जित की। स्वामी राघवाचार्यजी, जिला सभा सीकर के वर्तमान अध्यक्ष बनवारीलाल खण्डेलसर की माताश्री को अपनी माताजी की तरह ही मानते थे। 30 अगस्त, 2024 को स्वामीजी के साकेतगमन होने पर उनके शिष्य महाराजश्री राजेन्द्रदास रैवसा, रैवसा धाम के गद्दी पर आसीन हुए जो पीठ के 18वें पीठाधीश्वर बने।

*************

**शंकर लाल जांगिड - कोषाध्यक्ष जिला सभा सीकर**

# समाज के प्रतिभावान और आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की दिशा में एक पहल

श्रीमती संतोष देवी राधेश्याम चैरिटेबल ट्रस्ट, सूरत के माध्यम से समाज के आर्थिक रूप से कमजोर एवं प्रतिभावान छात्र-छात्राओं के उच्च शिक्षा के सपनों को साकार करने का प्रयास किया जा रहा है। **ट्रस्ट द्वारा अब तक 21 जरूरतमंद विद्यार्थियों को कुल 9 लाख रुपये की वित्तीय सहायता प्रदान की जा चुकी है।** इस पहल का उद्देश्य आर्थिक अभाव के कारण शिक्षा से वंचित हो रहे प्रतिभावान विद्यार्थियों के भविष्य को सुखद एवं उज्ज्वल बनाना है।

समाज सेवा की प्रेरणा भी ईश्वर की कृपा से ही मिलती है। मैंने अपने भाइयों राकेश कुमार जांगिड, दिनेश कुमार जांगिड एवं बहिन रेखा देवी जांगिड के सहयोग से अपने माता-पिता की स्मृति में इस ट्रस्ट की स्थापना की है। ट्रस्ट के माध्यम से आर्थिक रूप से कमजोर एवं पात्र विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा के लिए यथासंभव आर्थिक सहायता प्रदान की जा रही है।

हम श्रीमती संतोष देवी राधेश्याम चैरिटेबल ट्रस्ट और परिवार के सहयोग से जरूरतमंद विद्यार्थियों की सहायता करने का निरंतर प्रयास कर रहे हैं। **ट्रस्ट के माध्यम से पिछले वर्ष 11 विद्यार्थियों को 4 लाख 70 हजार रुपये की सहायता दी गई, जिसमें एमबीबीएस, नर्सिंग, आईआईटी एवं मेडिकल कॉलेज के विद्यार्थी शामिल थे। वहीं, इस वर्ष 5 अगस्त तक 10 विद्यार्थियों को 4 लाख 30 हजार रुपये की आर्थिक सहायता प्रदान की जा चुकी है।** इनमें डॉक्टर, इंजीनियर एवं नर्सिंग ऑफिसर बनने की तैयारी कर रहे विद्यार्थी भी शामिल हैं।

जरूरतमंद विद्यार्थियों की आर्थिक सहायता करना मानव सेवा का कार्य है। ट्रस्ट द्वारा सहायता प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की पहचान गोपनीय रखी जाती है। **सच्चा दान वही है, जो बिना किसी स्वार्थ या अपेक्षा के जरूरतमंद व्यक्ति को उचित समय पर दिया जाए।**

परिवार के बीच समाज के आर्थिक रूप से कमजोर एवं प्रतिभावान बच्चों की आर्थिक कठिनाइयों को समझते हुए मेरे द्वारा इस ट्रस्ट की स्थापना का सुझाव रखा गया था। **इसका उद्देश्य ऐसे होनहार विद्यार्थियों की सहायता करना है, जो आर्थिक तंगी के कारण अपने उच्च शिक्षा के सपनों को पूरा नहीं कर पाते। ट्रस्ट द्वारा दी जाने वाली सहायता केवल धनराशि नहीं, बल्कि उनके सपनों को पंख देने वाली आशा और विश्वास की किरण है।**

हम चारों भाई-बहनों ने मिलकर अपने माता-पिता के नाम पर यह ट्रस्ट स्थापित किया है। **ट्रस्ट के माध्यम से पहली सहायता 10 फरवरी, 2025 को एक एमबीबीएस विद्यार्थी को 85,265 रुपये की दी गई थी। हमारे परिवार का संकल्प है कि भविष्य में भी जरूरतमंद विद्यार्थियों की उच्च शिक्षा में हरसंभव सहयोग किया जाएगा।**

मेरा राजस्थान एवं गुजरात मे रह रहे जांगिड समाज बंधुओं से विशेष निवेदन है कि आर्थिक रूप से कमजोर और पात्र विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा के लिए आर्थिक सहायता की जरूरत हो ट्रस्ट को जरूर बताए ताकि ट्रस्ट के माध्यम से यथासंभव सहायता प्रदान की जा सके।

**मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि हमारे समाज के होनहार बालक-बालिकाएं उच्च शिक्षा प्राप्त कर देश और समाज का नाम रोशन करते रहें। हमारा परिवार निष्पक्ष भाव से समाज सेवा करते हुए जरूरतमंद बच्चों की दुआएं प्राप्त करता रहे और ईश्वर हमे इसी सेवा को आगे बढ़ाने की शक्ति प्रदान करते रहे।**

जय श्री विश्वकर्मा ..

**ट्रस्टी – प्रमोद कुमार जांगिड - कार्यकारी प्रदेश अध्यक्ष, गुजरात,**

**संपर्क नंबर : 9898541000**

# जोधपुर के प्रख्यात चित्रकार डॉ. ज्योति स्वरूप शर्मा को राष्ट्रपति द्रोपदी मूर्मू द्वारा राष्ट्रपति भवन में सम्मानित किया गया

**अमराराम जांगिड - महासभा के अन्तर्राष्ट्रीय प्रकोष्ठ अध्यक्ष**

एक कलाकार अपनी तुलिका और भावनाओं का सम्मिश्रण करके अपनी कला को मूर्त रूप देता है तब उसकी कला में सजीवता और जीवन्तता सहज रूप से ही आ जाती है। जोधपुर के प्रख्यात कलाकार मारवाड़ शैली और मनब्बतकारी कला के पारखी ने अपने 50 वर्षों के विस्तृत अनुभव के आधार पर अपनी चित्रकला को एक अभूतपूर्व स्वरूप देकर एक नया इतिहास रचने के साथ ही अपनी चित्रकला का अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर परचम लहराया है। चित्रकला की अनन्य साधना और उनकी बेजोड़ मुनब्बतकारी चित्रकला शैली ने उनको एक विशेष पहचान दिलवाई है।

मैं डॉ. ज्योति स्वरूप शर्मा को बचपन से ही जानता हूँ। उन्होंने अपनी कला को देश की सीमाओं में बंद नहीं किया अपितु इसको विश्व पटल पर भी अंकित किया है। उनकी कला की बारिकियों को जानने वाले दुबई में भी उनकी चित्रकला के अनेक लोग दीवानें है। कला के प्रति उनका समर्पण भाव और निष्ठा ने ही उनको विगत 50 वर्षो के दौरान इस मुकाम तक पहुंचाया है। इसका मुख्य कारण यह है कि वह नि:स्वार्थ भाव से कला की सेवा साधना कर रहे हैं। डॉ. ज्योति स्वरूप शर्मा की इस साधना को देखते हुए ही, राष्ट्रपति भवन में वर्कशॉप आयोजित करने तक पहुंचा दिया। **राष्ट्रपति भवन के अशोका हाल में 3 जून, 2026 से 15 जून, 2026 तक चले इस रेसीडेंसीयल आर्ट वर्कशॉप में डॉ ज्योति स्वरूप शर्मा सहित देशभर के जाने-माने 12 विख्यात कलाकारों ने भाग लेकर इस वर्कशॉप की गरिमा बढाई।** इसके माध्यम से इन कलाकारों ने अपनी उत्कृष्ट कला शैली का प्रदर्शन किया। इस वर्कशॉप मे डॉ. शर्मा को चित्रांकन के माध्यम से मारवाड़ शैली में एक कहानी को मूर्त रूप देने का अवसर प्राप्त हुआ। इस मारवाड़ी शैली के चित्रांकन की राष्ट्रपति द्वारा भूरि - भूरि प्रशंसा की गई।

इस वर्कशॉप के अन्तिम दिन 15 जून को कार्यशाला के समापन पर देश के प्रथम नागरिक और महामहिम राष्ट्रपति द्रोपदी मूर्मू ने अपने हाथों से डॉ. साहब को सम्मानित किया। डॉ. ज्योति स्वरूप शर्मा ने कहा कि देश के प्रथम नागरिक और महामहिम राष्ट्रपति के हाथों से शॉल और समृति चिह्न से सम्मानित होने पर मेरी 50 वर्षो की साधना सफल हो गई। उस क्षण मुझे जो असीम गर्व और आत्मानंद की अनूभूति हुई उसको मैं शब्दों में बयां नहीं कर सकता हूँ। राष्ट्रपति जी से मुझे व्यक्तिगत रूप से मिलने का सुअवसर भी मिला और मैंने उनके सामने मेरे 50 वर्षो की अथक और नि:स्वार्थ साधना और अथक परिश्रम के लिए प्रतिष्ठत पद्मश्री पुरस्कार देने की मांग भी रखी।

उन्होंने कहा कि यह क्षण न केवल उनके लिए अपितु पूरे राजस्थान कला जगत के लिए और जांगिड समाज के लिए एक गर्व का क्षण था। इससे पहले उनको तत्कालीन उप राष्ट्रपति कृष्ण कांत ने भी स्वर्ण मुनब्बत हस्तकला में उत्कृष्ट कार्य के लिए सम्मानित किया गया था।

उल्लेखनीय है कि डॉ. ज्योति स्वरूप शर्मा ने स्वर्ण- मुनब्बतकारी में विश्व में ख्याति अर्जित की है। बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी और अनेक राज्य स्तर, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त करने वाले डॉ. ज्योति स्वरूप शर्मा को यह कला विरासत में प्राप्त हुई

है। इनकी चार पीढ़ियां इस हस्तकला के कार्य में पारंगत और निष्णात हैं। इनकी बनाई हुई सुनहरी कलाकृतियां सहज रूप से ही हृदय की गहराई में उतर कर, अन्तर्मन को सहज रूप से ही छू जाती है। विलुप्त होती इस प्राचीन कला को फिर से गौरव दिलवाने और इसे बचाने के कार्य में जुटे हैं जोधपुर के महानायक ज्योति स्वरूप शर्मा।

प्राचीन काल में कई हस्तशिल्पियों ने किलों, हवेलियों एवं मंदिरों को अद्भुत स्वर्ण मुनब्बत के काम से सजाकर उन इमारतों

को वैभव और समृद्धि प्रदान की है। राजाओं और बादशाहों के प्रोत्साहन के कारण ही यह उत्कृष्ट कला खूब फली और फूली है। देश की धरोहर को बचा कर रखने का एक किस्सा उल्लेख करते हुए, **डॉ. ज्योति स्वरूप शर्मा ने कहा कि एक बार इंग्लैंड के प्रिंस चार्ल्स अपनी पत्नी के साथ जोधपुर के दौरे पर इस शहर की गरिमा और वैभव शाली कलाकृतियों को देखने आए और वह मेरी कलाकृतियों को देख कर बहुत ही भाव विभोर और प्रभावित हुए।**

उन्होंने बताया कि समय के बदलते हुए परिवेश के साथ ही स्वर्ण-मुनब्बत की कला धूमिल पड़ती जा रही है। दीवारों एवं छतों की शोभा बढ़ाती स्वर्ण-मुनब्बत से सजी कलाकृतियां आज अपना वैभव और गरिमा खोती जा रही है। उनके द्वारा इस दुर्लभ और महत्वपूर्ण धरोहर स्वर्ण-मुनब्बत चित्रकारी को पुनर्जीवित करने का अभिनव प्रयास किया जा रहा है। उन्होंने वर्षों शोध, बुजुर्गों के गूढ अनुभव एवं पुस्तकों का बारीकी से अध्ययन कर प्राचीनकालीन विधियों में तकनीक की जानकारी हासिल की है। दृढनिश्चयी डॉ. ज्योति स्वरूप ने ऐतिहासिक इमारतों, मंदिरों की दीवारों, हवेलियों के कमरों और कैनवास पर बने दुर्लभ तेल चित्रों को पुनर्जीवित करके दिखलाया है।

इसलिए मैं निश्चित रूप से यह कह सकता हूँ कि जांगिड वंश के लोगों में कार्य क्षमता और दक्षता की कोई भी कमी नहीं है। मैं डॉ. ज्योति स्वरूप शर्मा की दीर्घायु की मनस्कामना करते हुए, परमात्मा से यह अनुनय विनय करता हूँ कि कला के इस अमर चितेरे डॉ ज्योति स्वरूप की ख्याति में उत्तरोत्तर अभिवृद्धि हो। वह अपनी निस्वार्थ सेवा और समर्पण की भावना से ओत-प्रोत हो कर इसी प्रकार से समाज का नाम देश और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आलोकित करते रहें। उनकी साधना में निरन्तर सहभागी बनकर उनको प्रोत्साहित करने वाली उनकी जीवन संगिनी रेणुका शर्मा को भी हृदय से सलाम करता हूँ जिन्होंने इस असीम प्रतिभा के धनी विश्व विख्यात कलाकार का सदैव ही पग- पग पर साथ दिया और यही कारण है कि उनकी कला अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक पहुंची है।

महासभा प्रधान रामपाल शर्मा ने डॉ. ज्योति स्वरूप शर्मा बधाई देते हुए कहा कि अनन्त साधना और कला के प्रति नि:स्वार्थ भाव से 50 वर्षों की कला के प्रति अहर्निश सेवा और नि:स्वार्थ भाव से सेवा करने के लिए राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू द्वारा उनकी मारवाड़ी कला शैली को सम्मान देते हुए, सम्मानित करने पर हृदय के अन्तःकरण से हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं देता हूँ और उनकी दीर्घायु की मंगल कामना करता हूँ, ताकि वह इसी प्रकार से समर्पण की भावना से समाज और कला की अहर्निश सेवा करते रहें।

अन्त में मैं परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि भारत सरकार द्वारा उनको देश के प्रतिष्ठित पुरस्कार पद्मश्री और पद्मभूषण से सम्मानित किया जाए, जिसके लिए उन्होंने अपना आवेदन भी भेजा है। विपुल धन्यवाद ..

# ऋषि अंगिरा फाउंडेशन, बाड़मेर के 30वें शिक्षा भूषण सम्मान समारोह में सुखदेव जांगिड का प्रेरणादायक संदेश

ऋषि अंगिरा फाउंडेशन, बाड़मेर द्वारा 12 जुलाई को आयोजित 30वें शिक्षा भूषण सम्मान समारोह में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सूचना प्रौद्योगिकी एवं उद्यमिता के क्षेत्र में पहचान बनाने वाले लंदन प्रवासी सुखदेव जांगिड मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। इस अवसर पर उन्होंने शिक्षा, संस्कार, कौशल विकास, महिला सशक्तिकरण, स्टार्टअप और उद्यमिता को समाज की प्रगति का आधार बताते हुए युवाओं को नई दिशा देने वाला प्रेरक संबोधन दिया।

सुखदेव जांगिड का संदेश आज के बदलते दौर में समाज के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि एक बेटी के शिक्षित होने से केवल उसका भविष्य नहीं, बल्कि दो परिवारों और आने वाली पूरी पीढ़ी का भविष्य उज्ज्वल होता है। समारोह में बड़ी संख्या में बालिकाओं और मातृशक्ति की उपस्थिति समाज में शिक्षा के प्रति बढ़ती जागरूकता का सकारात्मक संकेत है।

सुखदेव जांगिड ने सामाजिक, शैक्षणिक एवं धार्मिक संस्थाओं से मिलकर कार्य करने का आह्वान करते हुए कैरियर मार्गदर्शन केंद्र, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी, कौशल विकास, डिजिटल शिक्षा, विदेशी शिक्षा, रोजगार परामर्श, स्टार्टअप, उद्यमिता, व्यक्तित्व विकास एवं नेतृत्व प्रशिक्षण के लिए संयुक्त अभियान चलाने की आवश्यकता बताई।

उन्होंने कहा कि आज शिक्षा का उद्देश्य केवल सरकारी नौकरी तक सीमित नहीं रहना चाहिए। निजी क्षेत्र, उद्योग एवं विनिर्माण, स्टार्टअप, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डाटा साइंस, साइबर सिक्योरिटी, रोबोटिक्स, ग्रीन एनर्जी, स्पेस टेक्नोलॉजी, बायोटेक्नोलॉजी तथा अनुसंधान जैसे क्षेत्रों में युवाओं के लिए अपार संभावनाएं हैं। युवाओं को रोजगार तलाशने वाले नहीं, बल्कि रोजगार देने वाले और रोजगार पैदा करने वाले बनने का लक्ष्य रखना चाहिए। **समारोह में सुखदेव जांगिड ने शिक्षा एवं कौशल विकास के लिए ऋषि अंगिरा फाउंडेशन को एक करोड़ रुपये की ऐतिहासिक सहयोग राशि देने की घोषणा की।** घोषणा होते ही सभास्थल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। यह सहयोग केवल आर्थिक सहायता नहीं, बल्कि समाज की भावी पीढ़ी के उज्ज्वल भविष्य के निर्माण का दूरदर्शी संकल्प है। इस अवसर पर **भारतीय राजस्व सेवा के वरिष्ठ अधिकारी दिनेश कुमार जांगिड सांरग** ने विद्यार्थियों को कठिन परिश्रम और पुरुषार्थ को सफलता का आधार बताते हुए सोशल मीडिया का विवेकपूर्ण उपयोग करने की सलाह दी। पूर्व पुलिस महानिदेशक सांगा राम जांगिड ने भामाशाहों से शिक्षा और समाज के विकास में सहयोग देने तथा महिला सशक्तिकरण को प्राथमिकता देने का आह्वान किया। **आईआरएस अधिकारी रमेश मांकड़** ने कहा कि समाज उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाली प्रतिभाओं और युवाओं के लिए आर्थिक संसाधनों की कमी नहीं आने देगा। वहीं आईआरएस अधिकारी अशोक सुथार ने विद्यार्थियों से भामाशाहों के सहयोग को अपनी प्रतिभा और दक्षता के माध्यम से सार्थक परिणामों में बदलने का आग्रह किया।

**प्रान्त कार्यवाहक खामी राम सुथार** ने संगठन को समाज की शक्ति बताते हुए सभी से समाज और संगठन को मजबूत बनाने का आह्वान किया। **ऋषि अंगिरा फाउंडेशन के अध्यक्ष हरीश जांगिड** ने फाउंडेशन द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में किए जा रहे कार्यों की जानकारी दी और कहा कि सुखदेव जांगिड द्वारा दी गई एक करोड़ रुपये की राशि से विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य के लिए नई योजनाओं को गति मिलेगी। फाउंडेशन के सचिव नरेश पालेचा ने सभी अतिथियों और आगंतुकों का आभार व्यक्त किया।

समारोह में जांगिड पंचायत अध्यक्ष प्रभू दयाल धीर, निंबा राम जांगिड, शंकर लाल जांगिड, गणपत लाल सुथार, अरविंद जांगिड, अशोक जांगिड, रावतमल जांगिड, बांकाराम जांगिड, गणेश बिजानी, पेमाराम जांगिड, केसाराम सुथार, पूनम चंद सुथार, अध्यापक हरक राज सुथार, नाथूराम जांगिड, जसराज सुथार, हरजी राम सुथार तथा नरेश पिंगल सहित बड़ी संख्या में समाजबंधु, विद्यार्थी एवं मातृशक्ति उपस्थित रहे।

**हरजीराम सुथार - जिलाध्यक्ष, बाड़मेर**

# स्वजातीय इतिहास अध्ययन से सामाजिक संस्कृति, आत्मोन्नति एवं सशक्तिकरण की ओर

स्वजातीय इतिहास अध्ययन से केवल अतीत की घटनाओं और वंश-परंपराओं का ज्ञान ही नहीं होता, बल्कि सामाजिक संस्कृति, आत्मोन्नति एवं सशक्तिकरण की समझ भी विकसित होती है। इससे समाज यह समझने में सक्षम बनता है कि उसके विकास में किन ज्ञान-परंपराओं ने योगदान दिया और किन परिस्थितियों ने बाधाएं उत्पन्न की। इतिहास अध्ययन मानव-सभ्यताओं की विकास-यात्रा, सांस्कृतिक-विरासत एवं ज्ञान-परंपरा को जीवित बनाए रखता है, जिससे समाज को सामूहिक विकास की दिशा में आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती है। इससे पूर्वजों द्वारा किए गए पुरुषार्थ का संपूर्ण ज्ञान होता है, जिससे मनुष्य के अन्तर्मन में आत्मसम्मान, सामाजिक एकता और भविष्य निर्माण की चेतना जागृत होती है। यह चेतना सामाजिक संरचना में व्याप्त असमानताओं एवं उपेक्षाओं के कारणों को पहचानने और उनके उन्मूलन का उचित मार्गदर्शन करती है।

प्रत्येक समाज में अपने इतिहास, सांस्कृतिक विरासत और परंपराओं को जानने की जिज्ञासा रहती है। यह उचित ही कहा गया है कि — **"यदि अपने इतिहास को नहीं जानोगे, तो फिर स्वयं को कैसे पहचानोगे"?** किसी भी समाज का रूतबा केवल उसके संख्याबल, आर्थिक सामर्थ्य या राजनीतिक वर्चस्व के बल पर कायम नहीं रहता, जबकि इतिहास का वर्चस्व सदैव कायम रहता है। **किसी भी समाज को उसके इतिहास के संदर्भ में पूछा जा सकता है कि उनके पूर्वजों का अपने देश और समाज के निर्माण में क्या योगदान था?** विगत कुछ वर्षो में स्वजाति इतिहास लेखन में रूझान देखा गया है। परन्तु इस रूझान में सकारात्मक पक्ष यह है कि परंपरागत धर्मशास्त्रों, लोकमान्यताओं और प्रचलित आख्यानों पर आधारित वृत्तांतों के स्थान पर, इन रचनाओं में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, तार्किक विवेचन तथा अनुसंधान आधारित अध्ययन सामग्री को सम्मिलित करते हुए, इन्हें और अधिक ज्ञानवर्धक, प्रामाणिक एवं समाजोपयोगी बनाया जा रहा है।

यह परिवर्तन मानव समाज को भावनात्मक आग्रहों से आगे ले जाकर तर्क, तथ्य और प्रमाण के धरातल पर स्थापित करने की दिशा में उल्लेखनीय कदम है। प्रगतिशील जातियाँ अपनी सांस्कृतिक विरासत को साहित्यिक दृष्टि से परिष्कृत एवं समझ कर अपनी नई पीढ़ी में आत्मबोध एवं आत्मसम्मान की चेतना जागृत करनी चाहती हैं, जिससे सामाजिक एकता, अधिकारिता और भविष्य-निर्माण की योजनाओं की दिशा में उनका मार्ग प्रशस्त किया जा सके। बुद्धिजीवियों का एक वर्ग मानता है कि समाज के सभी वर्ग और जातियाँ यदि सामूहिक रूप से वैचारिक सामंजस्य, सहयोग, समन्वय तथा स्वोत्थान की भावना को आत्मसात कर लें, तो सामाजिक विभेद और वैमनस्य स्वतः ही समाप्त हो जायेगा। इस प्रकार का दृढ़ संकल्प निश्चय ही एक सौहार्दपूर्ण, समानता व समरसता आधारित सुदृढ़ और प्रगतिशील समाज के निर्माण का स्वप्न साकार कर सकता है।

सुदृढ़ और प्रगतिशील समाज धातुकाल में भी कमोबेश दृष्टिगोचर होता है, जबकि उस काल में समाज मुख्यतः नस्लीय एवं कबायली संरचनाओं, पारिवारिक रक्त-संबंधों तथा प्राकृतिक परिवेश पर आधारित था। उस समय भौगोलिक सीमाओं, भाषा, जाति, धर्म की अवधारणाएँ विकसित नही हुई थीं। मनुष्य का संघर्ष उसके अस्तित्व, सुरक्षा और जीवन-निर्वाह की आवश्यकताओं की पूर्ति तक केन्द्रित था। मनुष्य ने प्रतिकूल प्राकृतिक परिस्थितियों, भीषण आपदाओं, जलवायु परिवर्तन, हिंसक वन्यजीवों जैसी अनेक चुनौतियों का सामना अपने अद्वय साहस, पराक्रम और विवेक के साथ किया। इन्हीं संघर्षों और अनुभवों ने उसे प्रकृति को समझने, संसाधनों के उपयोग तथा स्वयं और अपनी भावी पीढ़ियों के भविष्य को सुरक्षित बनाने की दिशा में प्रेरित किया। इस कालखंड में स्थायी घरों, घरेलू औजारों, कृषि उपकरणों तथा सैन्य अस्त्र-शस्त्रों का निर्माण करने वाले कुशल शिल्पकारों का उदय हुआ।

इन हुनरमंद शिल्पकारों ने दिन-रात अथक परिश्रम और पुरुषार्थ के बल पर प्राचीन सभ्यताओं के विकास में अपना अमूल्य योगदान दिया। उनके वास्तु-शिल्प और तकनीकी कौशल ने मिश्र सभ्यता में अहमोज प्रथम एवं अमेनहोटेप तृतीय, चीन सभ्यता में याओ एवं शुन, फारस सभ्यता में साइरस, यूनानी सभ्यता में पेरिक्लीज, रोम सभ्यता में ऑगस्टस जैसे शासकों के शासनकाल को विकास की बुलंदियों तक पहुँचाकर 'स्वर्णकाल' के रूप में विख्यात किया। भारत में भी मौर्यकालीन एवं गुप्तकालीन शासकों के शासनकाल को समृद्ध, सृजनशीलता और विकास की ऊँचाइयों तक पहुँचाकर उसे 'स्वर्णकाल' की उपमा से विभूषित करने में इन शिल्पकारों का उल्लेखनीय योगदान रहा। भारतीय सांस्कृतिक चेतना में शिल्प-विज्ञान, वास्तु एवं तकनीकी विद्याओं के आराध्यदेव विश्वकर्मा की वंश-परम्परा के संवाहक उत्तर भारत के खाती अर्थात जांगिड ब्राह्मण भी इन शिल्पकारों में प्रमुख हैं।

शिल्पकारों, दस्तकारों और खेतिहर श्रमजीवी समुदायों का प्रत्येक सभ्यता को समृद्ध और सुदृढ़ बनाने में विशिष्ट योगदान रहा है। यद्यपि इतिहास में इन उपलब्धियों का श्रेय प्रायः राजाओं और शासकों को ही दिया गया है, क्योंकि इतिहास-लेखन का अधिकांश भाग राजवंशों, उनके साम्राज्यों, युद्धों तथा उनकी विजय-पराजय के वृत्तान्तों तक सीमित रहा है। परिणामतः श्रम, कौशल और सृजनशीलता से मानव सभ्यताओं को समृद्ध और सांस्कृतिक विरासत की नींव को सुदृढ़ करने वाले श्रमजीवी समुदायों को अपेक्षित ऐतिहासिक महत्व नहीं मिला, जिनमें खाती अर्थात जांगिड ब्राह्मण भी शामिल हैं।

इस विमर्द को शिल्पकारों की सांस्कृतिक विरासत और परम्पराओं का व्यवस्थित अध्ययन करके मिटाया जा सकता है। यह कार्य वंशावलियों, पांडुलिपियों, सामाजिक-अभिलेखों, प्राचीन-भवनों, शिलालेखों, लोकस्मृतियों तथा वरिष्ठजनों के वृत्तान्तों के आधार पर किया जा सकता है। किन्तु इस कार्य को स्वजाति के गौरवगान तथा अंतर्निहित पूर्वाग्रह को त्याग कर केवल सत्य की खोज के उद्देश्य से करना चाहिए। इस प्रकार निःसृत पाठ्य-सामग्री (मुद्रित अथवा इलेक्ट्रॉनिक) आने वाली पीढ़ियों के लिए विश्वसनीय सांस्कृतिक धरोहर सिद्ध होगी। किसी भी जाति समुदाय या सामाजिक समूह के इतिहास का संतुलित, व्यापक और सकारात्मक लेखन न केवल स्वयं एक गौरवगाथा बन जाता है बल्कि एक राष्ट्र के इतिहास को समग्रता से समझने का महत्वपूर्ण माध्यम भी बन जाता है।

जब किसी जाति की उपलब्धियों को अन्य समुदायों के सहयोग, पारस्परिक निर्भरता और साझा सांस्कृतिक विरासत के संदर्भ में प्रस्तुत किया जाता है, तो इतिहास विभाजन का नहीं, बल्कि संवाद का सेतु बन जाता है। ऐसा इतिहास अपनी जड़ों, परम्पराओं और पूर्वजों के प्रति सम्मान की भावना जागृत करते हुए अन्य समुदायों के प्रति सम्मान और सह-अस्तित्व की चेतना को भी विकसित करता है। परिणामतः: जातीय अस्मिता संकीर्णता का आधार न बनकर राष्ट्रीय अस्मिता की एक मजबूत कड़ी बन जाती है। इस दृष्टि से किसी जाति के शिल्पज्ञान, श्रम-कौशल, सामाजिक योगदान....राष्ट्र-निर्माण में उसकी भूमिका का निष्पक्ष एवं प्रेरणादायक अंकन राष्ट्रीय एकता, अखंडता, शांति और सद्भावना को सुदृढ़ करता है। इतिहास की उपदेयता तब ही सार्थक सिद्ध होती है जब इतिहास 'मैं' के गौरव को 'हम' की सामूहिक चेतना में परिवर्तित कर देता है।

उत्तर भारत में अनेक अन्य जाति-समुदायों पर प्रकाशित कई ग्रन्थों को सार्वजनिक पुस्तकालयों में देखा जा सकता है, लेकिन खाती अर्थात जांगिड ब्राह्मण जाति के इतिहास पर केंद्रित कोई समग्र एवं प्रामाणिक पुस्तक दृष्टिगोचर नहीं होती। यह स्थिति इस समुदाय के इतिहास-बोध और सामाजिक पहचान के संदर्भ में एक बड़े शोध-अभाव को रेखांकित करती है। फलतः इस जाति के विद्वान, पाठक और जागरूक जन अपने इतिहास की ऐसी प्रामाणिक एवं शोधपरक पुस्तक की प्रतीक्षा कर रहे हैं, जिसमें उपलब्ध ऐतिहासिक स्रोतों, अभिलेखीय साक्ष्यों, साहित्यिक एवं मौखिक परम्पराओं तथा वैज्ञानिक अनुसंधान के आधार पर खाती अर्थात जांगिड ब्राह्मण समुदाय के उद्भव, विकास, सामाजिक-सांस्कृतिक योगदान और ऐतिहासिक भूमिका का समग्र एवं वस्तुनिष्ठ अध्ययन किया गया हो।

ऐसी पुस्तक में 'खाती' व 'जांगिड' शब्दों की उत्पत्ति का तथ्यपरक एवं तार्किक विश्लेषण प्रस्तुत करने के साथ-साथ वास्तुशिल्प की सैद्धांतिक और व्यावहारिक परंपरा के धार्मिक, सांस्कृतिक एवं वैज्ञानिक आयामों को भी स्पष्ट किया जाना चाहिए। इनमें आर्थिक एवं राजनीतिक प्रभावशीलता के अभाव से उत्पन्न चुनौतियों की पहचान करते हुए, उनके निवारण हेतु व्यावहारिक एवं रणनीतिक सुझाव भी सम्मिलित किये जाने चाहिएं। ऐसी पुस्तक 'मैं' से 'हम' की ओर उन्मुख होकर सामूहिक आत्मबोध, स्वाभिमान और सामाजिक चेतना को सुदृढ़ करके भारतीय संस्कृति की मूल भावना —**'वसुधैव कुटुम्बकम्'**— से इस समुदाय के संबंध को भी अधिक सार्थक एवं सुदृढ़ रूप में स्थापित कर सकती है। इस प्रकार समग्र एवं प्रमाणधारित ऐतिहासिक अध्ययन पर आधारित पुस्तक जम्बूद्वीपे, भरतखंडे, आर्यावर्ते, भारतवर्षे खाती अर्थात जांगिड़ ब्राह्मण की दीर्घ सांस्कृतिक-ऐतिहासिक पहचान को रेखांकित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। जिस पहचान को यह समुदाय अपने सभी धार्मिक अनुष्ठानों, मांगलिक कार्यक्रमों में संकल्प मंत्र के तौर पर सदियों से उच्चारित करता आ रहा है।

**प्रस्तुत आलेख का सार-संक्षेप यही है कि सामाजिक न्याय, आत्मोन्नति एवं सशक्तिकरण के व्यापक अभियान में इतिहास-बोध बहुत महत्त्वपूर्ण होता है। इस प्रयोजन के लिए शोध एवं अनुसंधान आधारित इतिहास की पुस्तकें ही सर्वोत्तम साधन हो सकती हैं।**

**कैलाश कुमार जांगिड , रेवाड़ी, हरियाणा**

# जीवन में सत्संग रूपी वैतरणी से ही संसार रूपी नैया पार की जा सकती है

जीवन में सत्संग रूपी वैतरणी से ही संसार रूपी नैया पार की जा सकती है

**पी. एल. शास्त्री, गुरुग्राम**

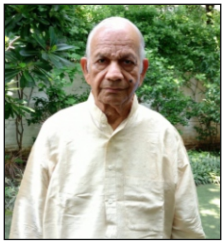

इस जीवन में सत्संग का अत्यंत महत्व है, क्योंकि इसका सीधा संबंध मनुष्य की आंतरिक चेतना को जागृत करने से है। सत्संग के माध्यम से मनुष्य सत्य व्यवहार और उदात्त आचरण का पालन करते हुए परमात्मा के साथ तादात्म्य स्थापित करने का प्रयास करता है। भगवत मार्ग पर चलते हुए जीवन के गूढ़ रहस्यों को समझने, मन के विषय-विकारों को दूर करने तथा अज्ञान रूपी अंधकार का नाश कर ज्ञान का दीप प्रज्वलित करने में सत्संग की महत्वपूर्ण भूमिका है।

**'सत्संग'** शब्द **'सत्'** और **'संग'** से मिलकर बना है। **'सत्'** का अर्थ सत्य है और अच्छे, उदात्त तथा उच्च आचरण वाले लोगों का साथ **'सत्संग'** कहलाता है। इस अर्थ में सत्संग भगवान का सान्निध्य प्राप्त करने का एक प्रमुख आध्यात्मिक मार्ग है।

सत्संग की महिमा का उल्लेख श्रीमद्भागवत में इस प्रकार किया गया है—

**"तुलयाम् लवेनापि न स्वर्गं न पुनर्भवम्।**
**भगवत्संगि-संगस्य मर्त्यानां किमुताशिषः॥"**

अर्थात् भगवत्प्रेमी भक्तों के लिए सत्संग का एक क्षण भी स्वर्ग और मोक्ष से बढ़कर है, फिर सांसारिक भोगों की तो बात ही क्या है। गोस्वामी तुलसीदास ने भी रामचरितमानस में सत्संग की महिमा बताते हुए कहा है—

**"तात स्वर्ग अपवर्ग सुख धरिअ तुला एक अंग।**
**तूल न ताहि सकल मिलि जो सुख लव सत्संग॥"**

सत्संग हमारे भीतर व्याप्त अज्ञान रूपी अंधकार को दूर कर ज्ञान का प्रकाश फैलाता है। इससे मन की जड़ता समाप्त होती है तथा बुद्धि और विवेक का विकास होता है। इसी कारण कहा गया है—

**"बिनु सत्संग विवेक न होई।**
**राम कृपा बिनु सुलभ न सोई॥"**

सत्संग का अवसर भी मनुष्य को उसके पुण्य और शुभ कर्मों के फलस्वरूप प्राप्त होता है। सत्संग और कथा-श्रवण से अंतर्मन का द्वंद्व शांत होता है तथा मनुष्य जन्म-मरण के बंधनों से मुक्ति और आत्मकल्याण की ओर अग्रसर होता है।

सत्संग एक ऐसा अनमोल रत्न है, जिसके माध्यम से मनुष्य प्रभु-भक्ति के अमृत का अनुभव करते हुए काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार जैसे विकारों पर विजय प्राप्त कर सकता है। सदना कसाई ने भी सत्संग के माध्यम से भगवान विठ्ठल की भक्ति प्राप्त की थी। सत्संग मनुष्य में श्रद्धा, समर्पण और विश्वास को दृढ़ करता है तथा स्वार्थ और अहंकार पर अंकुश लगाने की प्रेरणा देता है।

संतों की संगति का प्रभाव व्यक्ति के जीवन को संस्कारित करता है। गोस्वामी तुलसीदास कहते हैं—

**"तुलसी संगति साधु की, कटै कोटि अपराध।"**

यदि किसी कारणवश सज्जन व्यक्ति कुसंगति में भी पड़ जाए, तो उसके संस्कार उसे सुरक्षित रखते हैं—

**"विधि बस सजन कुसंगति परहीं।**
**फनि मनि सम निज गुन अनुसरहीं॥"**

जिस प्रकार चंदन के वृक्ष से सर्प लिपटे रहने पर भी चंदन की सुगंध प्रभावित नहीं होती, उसी प्रकार दृढ़ संस्कार वाला व्यक्ति कुसंगति से प्रभावित नहीं होता।

सत्संग और हरिकथा का प्रभाव रामचरितमानस में भी दिखाई देता है। गरुड़जी को जब मोह हुआ, तब भगवान शिव ने उन्हें रामकथा सुनने के लिए काकभुशुंडि के पास भेजा। रामकथा और सत्संग के प्रभाव से उनका मोह, भ्रम और चिंता दूर हुई। इससे स्पष्ट है कि हरिकथा, भजन और सत्संग मनुष्य के अंतर्मन को शांति प्रदान करते हैं।

कलियुग में भगवान के नाम-स्मरण को विशेष महत्व दिया गया है—

**"कलियुग केवल नाम अधारा।**
**सुमिरि सुमिरि नर उतरहि पारा॥"**

प्रभु के नाम का स्मरण और सत्संग मनुष्य को जीवन की सही दिशा प्रदान करते हैं। प्रारंभ में भले ही सत्संग और भजन में रुचि न हो, लेकिन निरंतर अभ्यास से मन में इसकी मिठास और आध्यात्मिक आनंद बढ़ता जाता है।

गोस्वामी तुलसीदास ने मनुष्य जीवन की दुर्लभता बताते हुए कहा है—

**"बड़े भाग मानुष तनु पावा।**
**सुर दुर्लभ सब ग्रंथन्हि गावा॥"**

मनुष्य का शरीर अनेक जन्मों के पुण्य का परिणाम माना गया है। यह परमात्मा का दिया हुआ एक अस्थायी निवास है और इसे छोड़ने का आदेश कभी भी आ सकता है। इसलिए हमें काम, क्रोध, लोभ और मोह जैसे विकारों में जीवन व्यर्थ न गंवाकर भजन, सत्संग, सेवा और सदाचार को अपनाना चाहिए।

अंततः यही कहा जा सकता है कि **"मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।"** मन को जीतकर ही विषय-विकारों पर विजय प्राप्त की जा सकती है। भजन, सत्संग और कथा के माध्यम से सत्य का साक्षात्कार तथा आत्मज्ञान की प्राप्ति संभव है। इसलिए जीवन में सत्संग को अपनाकर अपने आचरण को शुद्ध, विचारों को सकारात्मक और मन को शांत बनाना चाहिए।

**राम नाम ही आधार है - सुमिरन करते हुए भवसागर से पार उतरने का मार्ग प्रशस्त होता है।**

विपुल धन्यवाद ..

## जांगिड समाज भवन, नाशिक में स्वतंत्रता दिवस पर झण्डारोहण किया गया

देश के 80वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर जांगिड समाज भवन, नाशिक में राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा फहराया गया। **महाराष्ट्र प्रदेश सभा के कार्यकारी अध्यक्ष ताराचंद बी. जांगिड ने ध्वजारोहण किया। इसके बाद राष्ट्रगान एवं राष्ट्रगीत 'वंदे मातरम्' का सामूहिक गायन हुआ।**

इस अवसर पर ताराचंद जांगिड ने स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि देश की आजादी लाखों स्वतंत्रता सेनानियों, देशभक्तों, युवाओं और मातृशक्ति के त्याग, संघर्ष एवं बलिदान का परिणाम है। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में योगदान देने वाले सभी ज्ञात-अज्ञात वीरों को श्रद्धापूर्वक नमन किया।

महाराष्ट्र प्रदेश सभा के पूर्व अध्यक्ष लक्ष्मीनारायण शर्मा ने कहा कि हमारे पूर्वजों ने स्वतंत्रता आंदोलन में तन-मन-धन से योगदान दिया। उन्होंने सभी से देश की एकता, अखंडता और प्रगति के लिए मिलकर कार्य करने का आह्वान किया।

महासभा के उच्च स्तरीय एवं संविधान समिति के सदस्य तथा पूर्व महामंत्री जांगिड रत्न मोहनलाल दायमा ने कहा कि स्वतंत्रता दिवस हमें **'विविधता में एकता'** की शक्ति का संदेश देता है। समाज को आपसी मतभेद भुलाकर देश और समाज को सशक्त बनाने का संकल्प लेना चाहिए।

इस अवसर पर जिला अध्यक्ष गोपाल जांगिड, पूर्व जिला अध्यक्ष विनोद जांगिड सहित रामअवतार जांगिड, ओमप्रकाश जांगिड, भंवरलाल जांगिड, प्रभु जांगिड, दीपक जांगिड, हिमांशु, कमलेश, हेमाराम जांगिड, कमलेश चांदवड़ सहित अनेक समाजबंधु उपस्थित रहे।

*****************

# मिशन 1.50 लाख - समाज की एकता, शक्ति और सम्मान का अभियान

**संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्। देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते।**

भावार्थ: मिलकर चलें, मिलकर विचार करें और अपने मनों को एक करें।

महासभा का गौरवशाली इतिहास लगभग 119 वर्षों का है। यह हमारे पूर्वजों के त्याग, तपस्या, संगठन और सामाजिक चेतना की अमूल्य धरोहर है। ऐसे गौरवशाली संगठन का सदस्य होना प्रत्येक जांगिड ब्राह्मण के लिए केवल सम्मान और गौरव का विषय ही नहीं, बल्कि सामाजिक उत्तरदायित्व भी है।

महासभा का "मिशन 1.50 लाख" समाज को संगठित और सशक्त बनाने का ऐतिहासिक अभियान है। यह केवल सदस्य संख्या बढ़ाने का प्रयास नहीं, बल्कि समाज की सामूहिक शक्ति, एकता और सहभागिता को मजबूत करने का संकल्प है।

आज विचारणीय विषय यह है कि कई सक्षम व्यक्ति भी महासभा की सदस्यता लेने के लिए किसी दूसरे व्यक्ति की प्रतीक्षा करते हैं। आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों की सहायता करना समाज का कर्तव्य है, लेकिन जो व्यक्ति सदस्यता शुल्क देने में सक्षम हैं, उन्हें अपना शुल्क स्वयं जमा करके सदस्य बनना चाहिए। यह स्वाभिमान, सामाजिक जिम्मेदारी और संगठन के प्रति निष्ठा का प्रतीक है।

हम अपने दैनिक जीवन में छोटे-छोटे कार्यों पर आसानी से ₹ 500 या उससे अधिक खर्च कर देते हैं। ऐसे में समाज के संगठन को मजबूत करने के लिए सदस्यता लेने में संकोच क्यों होना चाहिए? ₹ 500 केवल सदस्यता शुल्क नहीं है, बल्कि समाज के प्रति आपकी निष्ठा, सहभागिता और जिम्मेदारी का प्रमाण है। इस राशि में आपका अंशदान प्रदेश सभा, जिला सभा एवं शाखा सभा तक पहुंचता है, जिससे संगठन की गतिविधियों को मजबूती मिलती है।

जब समाज का प्रत्येक सक्षम व्यक्ति स्वयं महासभा का सदस्य बनेगा, तभी संगठन और अधिक मजबूत होगा। मजबूत संगठन ही समाज की आवाज को प्रभावी और संगठित रूप से विभिन्न सामाजिक एवं राजनीतिक मंचों तक पहुंचा सकता है। सदस्यता केवल एक पंजीयन नहीं, बल्कि समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी स्वीकार करने का माध्यम है। जितने अधिक समाजबंधु संगठन से जुड़ेंगे, उतनी ही हमारी सामूहिक शक्ति मजबूत होगी और समाज के हितों की आवाज अधिक प्रभावी ढंग से उठाई जा सकेगी। आइए, अपने परिवार से शुरुआत करें।

**आप सभी समाजबंधुओं से आग्रह है कि**—अपना सदस्यता शुल्क स्वयं जमा करें। किसी दूसरे पर निर्भर रहने की मानसिकता छोड़ें। परिवार के 18 वर्ष या उससे अधिक आयु के सभी पात्र सदस्यों—पुत्र, पुत्री, बहू, दामाद, भाई, बहन तथा पति-पत्नी का पंजीयन करवाएं। अपने गांव, मोहल्ले और क्षेत्र में **"मिशन 1.50 लाख"** का संदेश घर-घर पहुंचाएं। अधिक से अधिक युवाओं और महिलाओं को संगठन से जोड़ें। समाज की एकता, संगठन और सम्मान को प्राथमिकता दें।

**"व्यक्ति से परिवार, परिवार से समाज और संगठित समाज से सुदृढ़ राष्ट्र बनता है।" आइए, हम सभी संकल्प लें : न प्रतीक्षा करेंगे, न परनिर्भर रहेंगे। स्वयं सदस्य बनेंगे, परिवार को जोड़ेंगे और समाज को सशक्त बनाएंगे।**

**हमारा संकल्प:- हर घर सदस्य — हर परिवार सहभागी। हर युवा सदस्य — हर महिला सहभागी। हर गांव सदस्य — हर जिला संगठित। डेढ़ लाख सदस्य — एक सशक्त समाज।**

**उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।** अर्थात्: केवल इच्छा या मनोरथ से कार्य सिद्ध नहीं होते, सफलता के लिए निरंतर प्रयास और परिश्रम आवश्यक है। इसलिए आइए, हम सभी मिलकर **"मिशन 1.50 लाख"** को केवल महासभा का अभियान न मानकर समाज के प्रत्येक परिवार का अभियान बनाएं। अपने परिवार से शुरुआत करें, अपने गांव और क्षेत्र तक पहुंचें तथा अधिक से अधिक समाजबंधुओं को संगठन से जोड़ने का प्रयास करें।

**एक सदस्य आपका, एक परिवार आपका और मजबूत बनेगा पूरा समाज। आइए, स्वयं सदस्य बनें और समाज को सशक्त बनाएं।**

**सुनील कुमार जांगिड**
**जिला प्रभारी – मिशन 1.50 लाख, जिला सभा सीकर**

## हमारा स्वास्थ्य : दाँतों का स्वास्थ्य : जागरूकता, बचाव और नियमित देखभाल

**हमारे शरीर का प्रत्येक अंग महत्वपूर्ण है और उनमें दाँत एवं मसूड़े हमारे समग्र स्वास्थ्य की आधारशिला हैं।** स्वस्थ दाँत न केवल भोजन को अच्छी तरह चबाने में सहायता करते हैं, बल्कि स्पष्ट वाणी, आकर्षक मुस्कान और आत्मविश्वास का भी आधार हैं। दुर्भाग्य से अधिकांश लोग दाँतों की देखभाल तभी करते हैं जब दर्द या कोई गंभीर समस्या उत्पन्न हो जाती है, जबकि दंत रोगों की रोकथाम उपचार से कहीं अधिक सरल और प्रभावी है।

आज दंत चिकित्सकों के पास आने वाले अधिकांश रोगियों में दाँतों में कीड़ा (डेंटल कैरीज़), मसूड़ों की सूजन (जिन्जिवाइटिस), पायरिया (पीरियोडॉन्टाइटिस), दाँतों की संवेदनशीलता, मुँह की दुर्गंध, दाँत घिसना तथा मुख के कैंसर से जुड़ी प्रारंभिक समस्याएँ देखने को मिलती हैं। इन रोगों का प्रमुख कारण दाँतों की अपर्याप्त सफाई, बार-बार मीठे खाद्य पदार्थों का सेवन, तंबाकू एवं गुटखा, धूम्रपान तथा नियमित दंत परीक्षण की उपेक्षा है।

दाँतों की सुरक्षा के लिए प्रतिदिन दो बार- सुबह उठने के बाद या नाश्ते के तुरंत बाद और रात को सोने से पहले लगभग दो मिनट तक टूथपेस्ट से ब्रश करना चाहिए। ब्रश करने की सही विधि भी उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी उसकी नियमितता। दाँतों के बीच फँसे भोजन के कणों को साफ करने के लिए डेंटल फ्लॉस या इंटरडेंटल ब्रश का उपयोग लाभदायक होता है।

प्रत्येक भोजन के बाद सादे पानी से कुल्ला करने की आदत भी दाँतों को सुरक्षित रखने में सहायक है। संतुलित आहार दंत स्वास्थ्य का महत्वपूर्ण आधार है। दूध, दही, पनीर, हरी पत्तेदार सब्जियाँ, ताजे फल तथा कैल्शियम और विटामिन-डी युक्त खाद्य पदार्थ दाँतों और हड्डियों को मजबूत बनाते हैं। इसके विपरीत, शक्करयुक्त पेय, चॉकलेट, टॉफी और चिपचिपी मिठाइयों का बार-बार सेवन दाँतों में सड़न का खतरा बढ़ाता है।

तंबाकू, गुटखा, पान-मसाला और धूम्रपान से न केवल दाँत और मसूड़े खराब होते हैं, बल्कि मुँह के कैंसर का जोखिम भी अत्यधिक बढ़ जाता है। यदि मुँह में कोई घाव, सफेद या लाल धब्बा, या छाला दो सप्ताह से अधिक समय तक बना रहे, तो तुरंत दंत चिकित्सक या मुख रोग विशेषज्ञ से जाँच करानी चाहिए। बच्चों के दाँतों की देखभाल विशेष रूप से आवश्यक है। यह धारणा गलत है कि दूध के दाँतों का उपचार आवश्यक नहीं होता। स्वस्थ दूध के दाँत ही स्थायी दाँतों के सही विकास और जबड़ों की सामान्य वृद्धि के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। बच्चों को प्रारंभ से ही सही तरीके से ब्रश करना सिखाना और मीठे खाद्य पदार्थों का सीमित सेवन कराना अभिभावकों की जिम्मेदारी है।

**दंत चिकित्सा का मूल सिद्धांत है—"रोकथाम उपचार से बेहतर है।"** इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को, चाहे कोई शिकायत हो या नहीं, हर 6 महीने में कम से कम एक बार दंत परीक्षण अवश्य कराना चाहिए। नियमित जाँच से रोग प्रारंभिक अवस्था में ही पहचान लिए जाते हैं, जिससे उपचार सरल, कम खर्चीला और अधिक सफल होता है। एक स्वस्थ मुस्कान केवल सौंदर्य का प्रतीक नहीं, बल्कि अच्छे स्वास्थ्य और अनुशासित जीवनशैली का परिचायक भी है।

**आइए, हम दंत स्वास्थ्य को अपनी दैनिक दिनचर्या का हिस्सा बनाएँ, अपने परिवार को जागरूक करें और नियमित देखभाल अपनाकर स्वस्थ दाँत, स्वस्थ मुस्कान और स्वस्थ जीवन का संकल्प लें।**

********

# महासभा महिला प्रकोष्ठ राजस्थान द्वारा जोधपुर में लहरिया उत्सव मनाया गया

राजस्थान प्रदेश महिला प्रकोष्ठ द्वारा प्रदेश अध्यक्ष डॉ. रेणु जांगिड के नेतृत्व में पहली बार जयपुर से बाहर जोधपुर में लहरिया उत्सव का आयोजन किया गया। **2 अगस्त को जोधपुर के विश्वकर्मा पब्लिक स्कूल, शास्त्री नगर** के प्रांगण में आयोजित इस उत्सव का उद्देश्य राजस्थान की सांस्कृतिक परंपराओं एवं मूल्यों को सहेजने के साथ महिलाओं को हस्तकला, निजी व्यवसाय और स्वरोजगार के प्रति जागरूक कर आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाना तथा युवा पीढ़ी को संस्कारों से जोड़ना रहा। कार्यक्रम को सफल बनाने में समाज की महिलाओं ने उत्साहपूर्वक सहभागिता निभाई। महिला प्रकोष्ठ की कार्यकर्ताओं ने घर-घर जाकर महिलाओं को जागरूक किया और उनकी भागीदारी सुनिश्चित की। इस कारण लहरिया उत्सव नारी शक्ति, संस्कृति और आत्मनिर्भरता का प्रभावशाली मंच बन गया।

लहरिया उत्सव की कुछ झलकियां

प्रदेश अध्यक्ष डॉ. रेणु जांगिड ने महिलाओं को संबोधित करते हुए कहा कि जोधपुर का विश्वकर्मा सभागार समाज की बेटियों की उपस्थिति से गौरवान्वित हुआ है। उन्होंने कहा कि लहरिया उत्सव केवल सांस्कृतिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि सांस्कृतिक मूल्यों को सहेजते हुए महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने की महत्वपूर्ण पहल है। महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाकर ही समाज और देश के विकास में उनकी प्रतिभा का पूर्ण उपयोग किया जा सकता है।

उन्होंने बताया कि उत्सव में महिलाओं को अपने हुनर और व्यवसाय को प्रदर्शित करने के लिए मंच उपलब्ध कराया गया। महिलाओं ने हस्तनिर्मित वस्तुओं के साथ आर्टिफिशियल ज्वेलरी, कपड़े, खाद्य सामग्री और अन्य उत्पादों की प्रदर्शनी एवं बिक्री की। इससे महिला उद्यमियों को प्रोत्साहन मिला तथा उनके उत्पादों को व्यापक पहचान दिलाने का अवसर मिला।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हस्तशिल्प डिजाइनर, महिला ब्रांड एंबेसडर एवं समाजसेवी श्रीमती रुमा देवी ने कहा कि आज शिक्षित और कामकाजी महिलाओं में प्रतिभा और हुनर की कोई कमी नहीं है। उन्हें आगे बढ़ने के लिए सामाजिक सहयोग, प्रोत्साहन और उचित मार्गदर्शन की आवश्यकता है। उन्होंने महिलाओं से आह्वान किया कि किसी भी व्यवसाय या उद्योग में आगे बढ़ने के लिए स्पष्ट कार्ययोजना बनाकर कार्य करें। उन्होंने कहा कि जीवन में सफलता के लिए संघर्ष जरूरी है और कठिन परिस्थितियों में भी निरंतर प्रयास करते रहना चाहिए। उन्होंने उभरती महिला उद्यमियों को हरसंभव मार्गदर्शन का भरोसा भी दिलाया।

विशिष्ट अतिथि राजस्थान प्रशासनिक सेवा की अधिकारी श्रीमती गोमती जांगिड ने शिक्षा को महिला सशक्तिकरण का आधार बताते हुए कहा कि कलम की ताकत सबसे बड़ी ताकत है। शिक्षित महिला न केवल अपना भविष्य बेहतर बनाती है, बल्कि अपने बच्चों और परिवार का भविष्य भी संवारती है। उन्होंने कहा कि महिलाओं की शैक्षणिक जागरूकता के बिना समाज की पूर्ण प्रगति संभव नहीं है। महिला और पुरुष समाज रूपी साइकिल के दो पहिए हैं, इसलिए समाज के उज्ज्वल भविष्य के लिए महिलाओं को समान सम्मान, अवसर और उचित स्थान मिलना आवश्यक है। उन्होंने लहरिया उत्सव को नारी शक्ति का महोत्सव बताया।

महिला प्रकोष्ठ की कार्यकारी अध्यक्ष श्रीमती कंचन जांगिड ने कहा कि महिलाओं को हस्तनिर्मित वस्तुओं की प्रदर्शनी एवं बिक्री के लिए मंच उपलब्ध कराना डॉ. रेणु जांगिड की दूरदर्शी सोच का परिणाम है। उन्होंने कहा कि इस पहल से महिलाओं को आर्थिक रूप से सक्षम और आत्मनिर्भर बनने का अवसर मिला है। समाज की महिलाओं ने बड़ी संख्या में भाग लेकर कार्यक्रम की गरिमा बढ़ाई।

कार्यक्रम को सफल बनाने में जोधपुर जिला अध्यक्ष श्रीमती मीनाक्षी दमीवाल, संभाग प्रभारी श्रीमती विनती जांगिड, श्रीमती स्नेहलता जांगिड, श्रीमती शिखा राजोरा, श्रीमती आशा शर्मा, श्रीमती सुनीता दुर्गेश्वर, श्रीमती मीनाक्षी शर्मा, श्रीमती कविता शर्मा, श्रीमती पूजा शर्मा एवं श्रीमती नर्बदा जांगिड सहित अनेक महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही। बीकानेर जिला अध्यक्ष श्रीमती अनु सुथार और नागौर जिला अध्यक्ष श्रीमती विनीता जांगिड ने भी अतिथि के रूप में उपस्थित होकर समारोह की शोभा बढ़ाई।

लहरिया उत्सव ने राजस्थान की संस्कृति, महिला प्रतिभा और उद्यमिता को एक मंच पर लाकर समाज को सकारात्मक संदेश दिया कि महिलाओं को उचित अवसर, सम्मान और मंच मिले तो वे आत्मनिर्भर बनकर परिवार, समाज और प्रदेश के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती हैं। यह आयोजन महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक सार्थक और प्रेरणादायक पहल के रूप में सफल रहा।

**डॉ. रेणु जांगिड - राजस्थान प्रदेश महिला प्रकोष्ठ अध्यक्ष**

# 30 अगस्त, 2026 को राजस्थान प्रदेश सभा द्वारा युवाओं के लिए 'प्रेरणा और प्रयास से परिणाम तक' कार्यक्रम का आयोजन

**घनश्याम शर्मा पंवार - प्रदेश अध्यक्ष राजस्थान प्रदेश सभा**

मुख्य वक्ता | मुख्य वक्ता | मुख्य वक्ता

राजस्थान प्रदेश सभा द्वारा युवाओं को संस्कारवान बनाने, शिक्षा के माध्यम से उनका भविष्य उज्ज्वल करने तथा प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए उचित मार्गदर्शन प्रदान करने के उद्देश्य से **30 अगस्त, 2026 को बिरला ऑडिटोरियम, जयपुर में द्वितीय 'प्रेरणा और प्रयास से परिणाम तक' युवा प्रेरणा सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है।**

आज के आधुनिक एवं डिजिटल युग में विद्यार्थियों के सामने अपने भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए अनेक चुनौतियां हैं। ऐसे में सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता सही मार्गदर्शन, प्रभावी योजना और लक्ष्य के प्रति निरंतर प्रयास की है। युवाओं को इन चुनौतियों का सामना करने तथा सफलता की दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करना इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य है। युवाओं को सही मार्गदर्शन देने के उद्देश्य से प्रदेश सभा द्वारा यह दूसरा युवा प्रेरणा सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। पिछले वर्ष भी प्रदेश सभा द्वारा इसी प्रकार का कार्यक्रम आयोजित किया गया था, जिसके अत्यंत सार्थक परिणाम सामने आए। हजारों विद्यार्थियों ने इसमें भाग लेकर विशेषज्ञों से मार्गदर्शन प्राप्त किया और अपने उज्ज्वल भविष्य की आधारशिला रखी।

**इस कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में भारतीय प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ अधिकारी डॉ. समित शर्मा, डॉ. जोगाराम जांगिड तथा राजस्थान प्रशासनिक सेवा के अधिकारी श्री आशीष शर्मा शामिल होंगे।** ये सभी वक्ता अपने अनुभवों के आधार पर भारतीय प्रशासनिक सेवा, राजस्थान प्रशासनिक सेवा तथा अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के संबंध में विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करेंगे। साथ ही, सफल व्यक्तित्वों के प्रेरणादायक जीवन प्रसंगों, उनकी सफलता के रहस्यों तथा प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के दौरान आने वाली चुनौतियों और कठिनाइयों से निपटने के उपायों के बारे में भी जानकारी दी जाएगी।

**कार्यक्रम में भाग लेने के लिए नाममात्र शुल्क 100 रुपये रखा गया है। रजिस्ट्रेशन की अंतिम तिथि 20 अगस्त, 2026 है। अधिक जानकारी के लिए मोबाइल नंबर 9829093619 पर संपर्क किया जा सकता है।** इच्छुक विद्यार्थी दिए गए लिंक के माध्यम से अपना पंजीकरण कर सकते हैं:**https://www.eventhora.com/e/yuva-prernasammelan** एक दिन और एक सही निर्णय आपके भविष्य की दिशा बदल सकता है। अतः सभी अभिभावकों से विनम्र निवेदन है कि वे अपने बच्चों को इस कार्यक्रम में अवश्य शामिल करवाएं, ताकि उनके उज्ज्वल भविष्य की मजबूत आधारशिला रखी जा सके।

10वीं कक्षा या उससे अधिक शिक्षित छात्र-छात्राओं से भी निवेदन है कि यह कार्यक्रम उनके अपने भविष्य से जुड़ा महत्वपूर्ण अवसर है। वे अधिक से अधिक संख्या में पंजीकरण करवाकर विशेषज्ञों से मार्गदर्शन प्राप्त करें और अपने लक्ष्य की दिशा में एक सार्थक कदम बढ़ाएं।

****

# चतुर्थ सामूहिक विवाह सम्मेलन - सादगी, संस्कार और सामाजिक एकता का महाअभियान

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा, प्रदेश सभा हरियाणा के नेतृत्व एवं जिला सभा फरीदाबाद के तत्वावधान में **20 नवम्बर 2026, शुक्रवार (देवउठनी एकादशी) को सामुदायिक भवन, सेक्टर-65, फरीदाबाद में चतुर्थ सामूहिक विवाह सम्मेलन** का भव्य एवं गरिमामय आयोजन किया जाएगा। इस अवसर पर 21 जोड़ों का पाणिग्रहण संस्कार वैदिक रीति-रिवाजों से संपन्न कराने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

आज विवाहों में बढ़ते दिखावे, फिजूलखर्ची और सामाजिक प्रतिस्पर्धा के कारण अनेक परिवार आर्थिक बोझ और कर्ज से दब जाते हैं। ऐसे समय में सामूहिक विवाह केवल विवाह का आयोजन नहीं, बल्कि समाज सुधार, आर्थिक सशक्तिकरण, सादगी, सामाजिक समरसता और संगठन की भावना को मजबूत करने का प्रभावी अभियान है। इसके माध्यम से बचने वाली धनराशि को परिवार बच्चों की शिक्षा, रोजगार, व्यवसाय, आवास एवं उज्ज्वल भविष्य के निर्माण में लगा सकते हैं।

जिला सभा फरीदाबाद द्वारा पूर्व में तीन सफल सामूहिक विवाह सम्मेलन आयोजित किए जा चुके हैं, जिनमें क्रमशः 11, 15 और 21 जरूरतमंद परिवारों की बेटियों के विवाह सम्मानपूर्वक संपन्न कराए गए। इसके अतिरिक्त प्रतिभाशाली विद्यार्थियों का सम्मान, वरिष्ठ नागरिकों का अभिनंदन, स्वास्थ्य जांच शिविर, महासभा की सदस्यता विस्तार तथा ब्लॉक एवं शाखा सभाओं के पंजीकरण जैसे सामाजिक कार्य भी निरंतर किए जा रहे हैं।

जिला सभा पारदर्शिता को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए प्रत्येक वर्ष आय-व्यय का संपूर्ण विवरण पत्रिका के माध्यम से समाजबंधुओं के समक्ष प्रस्तुत करती है। समाज का विश्वास ही हमारी सबसे बड़ी पूंजी है और उसकी रक्षा हमारा सर्वोच्च दायित्व है।

जिला अध्यक्ष चरणपाल जांगिड ने सभी जिलों एवं प्रदेशों के पदाधिकारियों से आग्रह किया है कि वे अपने क्षेत्रों के विवाह योग्य युवक-युवतियों एवं उनके अभिभावकों तक सम्मेलन की जानकारी पहुंचाएं। प्रदेश अध्यक्ष हनुमान प्रसाद जांगिड ने सामूहिक विवाह को पुण्य का महान कार्य बताते हुए कहा कि यह अनावश्यक खर्च रोककर परिवारों को बच्चों के बेहतर भविष्य के लिए धन उपयोग करने का अवसर देता है।

जिला महासचिव राजेंद्र जांगिड ने समाज के सभी बुद्धिजीवियों एवं समाजबंधुओं से अपील की कि सहयोग, सहभागिता और विश्वास के बल पर इस अभियान को अधिक व्यापक बनाएं तथा जरूरतमंद परिवारों को इससे जोड़कर सामाजिक एकता को मजबूत करें।

**आवेदन पंजीकरण की अंतिम तिथि: 20 अक्टूबर 2026**

**पंजीकरण एवं संपर्क: जितेंद्र नंबरदार – 9991944478, पीताम्बर जांगिड – 9871366162,**

**ज्ञान सिंह जांगिड, पलवल – 8708272989, मा. स्वराज जांगिड – 8053872064,**

**जिलाध्यक्ष चरणपाल जांगिड – 9810278433**

विवाह सम्मेलन समिति: जितेंद्र नंबरदार बिलासपुर, टेकचंद जांगिड, ज्ञान सिंह जांगिड पलवल, स्वराज जांगिड, सुनील जांगिड, सत्येंद्र जांगिड, पीताम्बर जांगिड, वेद जांगिड, सुभाष जांगिड एवं विनोद जांगिड सहित जिला फरीदाबाद के समस्त समाजबंधु तन-मन-धन से आयोजन को सफल बनाने में जुटे हैं।

महापुण्य के इस मांगलिक उत्सव में आप सभी की गरिमामय उपस्थिति एवं सहयोग प्रार्थनीय है।

**राजेंद्र जांगिड**
**जिला महासचिव, फरीदाबाद**

# विश्वकर्मा मंदिर, पटेलनगर, इंदौर में कार्यालय कक्ष का विधिवत शुभारंभ

समाज के संगठनात्मक कार्यों को गति देने, सामाजिक गतिविधियों के बेहतर संचालन तथा समाजबंधुओं को एक सशक्त मंच उपलब्ध कराने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए **श्री विश्वकर्मा मंदिर, पटेल नगर, एयरपोर्ट के पास, इंदौर स्थित मन्दिर परिसर में समिति कार्यालय कक्ष का विधिवत शुभारंभ किया गया। श्रावण मास के प्रथम सोमवार 3 अगस्त, 2026** को आयोजित इस गरिमामय कार्यक्रम में समाज के अनेक पदाधिकारी, वरिष्ठजन एवं महिला प्रकोष्ठ की पदाधिकारी उपस्थित रहीं।कार्यालय का शुभारंभ मुख्य अतिथि सांवरमल जांगिड, महासभा महामंत्री तथा प्रभु दयाल बरनेला, प्रदेश अध्यक्ष मध्य प्रदेश के शुभ कर-कमलों से संपन्न हुआ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता रतन लाडवा महासभा प्रदेश प्रभारी मध्यप्रदेश ने की। इस अवसर पर अनिल शर्मा प्रदेश महामंत्री, योगेश जांगिड जिला अध्यक्ष इंदौर, श्रीमती मीना भाकरौदा जिला अध्यक्ष महिला प्रकोष्ठ इंदौर तथा तोपखाना विश्वकर्मा मन्दिर इंदौर के अध्यक्ष अशोक कुमार रोडवाल की गरिमामय उपस्थिति रही। कार्यक्रम में उपस्थित विशिष्ट अतिथियों को मंचासीन कराकर रतनलाल लाडवा एवं ललित बिराणीयां कार्यकारी अध्यक्ष ने सभी का माला, शॉल एवं मोमेंटो भेंटकर स्वागत सम्मान किया। साथ ही कार्यक्रम में उपस्थित समाज के वरिष्ठ पदाधिकारियों एवं गणमान्य समाजबंधुओं ने भी मंचासीन अतिथियों का आत्मीय स्वागत किया। महिला प्रकोष्ठ की ओर से भी कार्यक्रम को गरिमापूर्ण बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई गई। प्रदेश महिला प्रकोष्ठ सलाहकार श्रीमती संगीताआसदेव ने स्वागत गीत की मधुर प्रस्तुति देकर वातावरण को भावपूर्ण बना दिया। कार्यक्रम के अगले चरण में उपस्थित अतिथियों एवं समाजबंधुओं ने प्रभु श्री विश्वकर्माजी तथा जांगडेश्वर महादेव मंदिर में विधिवत पूजा-अर्चना की। धार्मिक वातावरण एवं वैदिक विधि-विधान के साथ समिति कार्यालय कक्ष का अनावरण किया गया। इसके पश्चात परिसर में पौधा रोपण का कार्यक्रम भी संपन्न हुआ।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए अतिथियों ने समाज के समक्ष उपस्थित विभिन्न ज्वलंत विषयों पर प्रकाश डाला। वक्ताओं ने कहा कि किसी भी समाज की प्रगति के लिए संगठन मे आपसी सहयोग, शिक्षा, संस्कार, संस्कृति एवं सामाजिक समरसता और महिलाओं व युवाओं की सक्रिय भागीदारी अत्यंत आवश्यक है। साथ ही कार्यक्रम में उपस्थित समाजबंधुओं ने मन्दिर भवन के आगामी विकास को ध्यान में रखते हुए कार्यालय कक्ष बनाने की पहल का स्वागत करते हुए इसे समाज के लिए उपयोगी और दूरगामी परिणाम देने वाला कदम बताया। उन्होंने समाज की वर्तमान आवश्यकताओं के अनुरूप संगठन को अधिक प्रभावी बनाने तथा समाजबंधुओं को एक-दूसरे से जोड़ने पर विशेष जोर दिया। वक्ताओं ने कहा कि मन्दिर परिसर में समिति कार्यालय कक्ष से मन्दिर समिति द्वारा समस्त वित्तीय रिकार्ड को बनाने एवं सुरक्षित रखने के साथ ही समाज के संगठनात्मक कार्यों को एक स्थायी केंद्र मिलेगा और मन्दिर समिति द्वारा किये जाने वाले कार्यों एवं सामाजिक गतिविधियों और समाजहित से जुड़े कार्यक्रमों का संचालन अधिक व्यवस्थित एवं प्रभावी ढंग से किया जा सकेगा। पूरे कार्यक्रम का संचालन अत्यंत सुचारू एवं प्रभावी ढंग से खयालीराम भद्रेचा ने किया। उन्होंने कार्यक्रम को सफल बनाने में सहयोग देने वाले सभी समाजबंधुओं, पदाधिकारियों, महिला प्रकोष्ठ की सदस्यों एवं उपस्थित अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

कार्यक्रम के अंत में सभी अतिथियों एवं समाजबंधुओं ने सौहार्दपूर्ण वातावरण में स्वादिष्ट भोजन प्रसादी लेने के उपरांत समाज में आपसी प्रेम, भाईचारे और आत्मीयता से परिपूर्ण वातावरण में कार्यक्रम का समापन हुआ।

**रतन लाल लडवा - प्रदेश प्रभारी मध्यप्रदेश**

# इंदौर के लाभ मंडपम ऑडियोटोरिम में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में जांगिड ब्राह्मण समाज इंदौर ने प्रस्तुत की भगवान विश्वकर्मा पर नाटिका

**'मैं भारत हूँ'** संस्था, मुंबई द्वारा आयोजित भारतीय सांस्कृतिक समागम **'भारतम्'** का भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम **दिनांक 2 अगस्त, 2026 रविवार को इंदौर के लाभ मंडपम ऑडिटोरियम,** में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य **'इंडिया' के स्थान पर 'भारत' की पहचान को मजबूत करना तथा विभिन्न मारवाड़ी समाजों को एक मंच पर लाकर उनकी संस्कृति और परंपराओं से एक-दूसरे को परिचित करवाना था।**

इस अवसर पर जांगिड ब्राह्मण समाज, इंदौर को पहली बार इस मंच पर अपनी कला, संस्कृति और गौरवशाली परंपरा को प्रस्तुत करने का अवसर मिला। समाज के विभिन्न कलाकारों द्वारा भगवान विश्वकर्मा जी के जीवन एवं उनके योगदान पर आधारित नाटिका प्रस्तुत की गई, जिसे संचालकों एवं दर्शकों ने खूब सराहा और कलाकारों का उत्साहवर्धन किया।

उक्त भव्य कार्यक्रम में अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा दिल्ली के महामंत्री सांवरमल जांगिड, प्रदेश सभा मध्यप्रदेश अध्यक्ष प्रभुदयाल बरनेला, महिला प्रकोष्ठ प्रदेश अध्यक्ष श्रीमती माया देमन, प्रदेश युवा प्रकोष्ठ के अध्यक्ष कपिल गोगोरिया तथा जिला युवा प्रकोष्ठ अध्यक्ष धीरज देमन सहित बड़ी संख्या में समाजबंधु एवं मातृशक्ति उपस्थित रहे। उनकी उपस्थिति ने कलाकारों का उत्साह बढ़ाया। साथ ही नाटिका में समाज के बच्चों, युवाओं एवं वरिष्ठजनों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। एंकर साक्षी शर्मा, कोरियोग्राफर श्रीमती मौसमी शाह तथा मेकअप आर्टिस्ट श्रीमती रानू मुकेश बरनेला का विशेष योगदान एवं सहयोग रहा।

नाटिका में ब्रह्माजी की भूमिका सुशील शर्मा, भगवान विश्वकर्मा की योगेश शर्मा, अंगिराजी की महेंद्र आसलिया, विष्णुजी की अश्विन गोगोरिया, इंद्रदेव की राजू छीछोलिया, गणेशजी की उत्कर्ष शर्मा, शंकरजी की काशवी शर्मा, पार्वतीजी की विश्रुति शर्मा, लक्ष्मीजी की शालू गोगोरिया, मानव की मनोज पंवार तथा वैज्ञानिक की भूमिका दक्षिता शर्मा ने निभाई।

भगवान विश्वकर्मा जी के पांच पुत्रों एवं पांच पुत्रियों की भूमिकाओं में मुकेश बरनेला, कोशिक शर्मा, निश्चय शर्मा, पूर्वांश गोगोरिया, लविश शर्मा, भूमिका शर्मा, पायल शर्मा, तेजस्वी शर्मा, आराध्या शर्मा एवं लारिसा शर्मा ने प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का आयोजन जांगिड ब्राह्मण समाज पंचायत तोपखाना मन्दिर, इंदौर के अध्यक्ष अशोक रोडवाल, अखिल भारतीय जांगिड महासभा जिला सभा इंदौर की अध्यक्ष श्रीमती मीना भाकरोदा एवं जिला अध्यक्ष योगेश शर्मा के मार्गदर्शन में किया गया। कलाकारों के चयन, प्रशिक्षण एवं नियमित अभ्यास के कारण प्रस्तुति प्रभावशाली रही।

कार्यक्रम की संयोजिका के रूप में श्रीमती किरण शर्मा, श्रीमती संगीता शर्मा, श्रीमती उर्मिला शर्मा, श्रीमती सुनीता शर्मा एवं श्रीमती अनीता शर्मा तथा संयोजक के रूप में विजय बरनेला, मुकुल बडवाल, चंदन रोडवाल, पीयूष रावत एवं आलोक लाखा ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

कार्यक्रम के अंत में भगवान श्री विश्वकर्मा जी की आरती की गई। आयोजकों ने दर्शक दीर्घा में उपस्थित सभी समाजबंधुओं एवं मातृशक्ति का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि ऐसे सांस्कृतिक आयोजन समाज की कला, संस्कृति और पहचान को व्यापक मंच प्रदान करने के साथ-साथ नई पीढ़ी को अपनी गौरवशाली विरासत से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

**महेंद्र आसलिया - सांस्कृतिक मंत्री, तोपखाना मंदिर, इंदौर**

# परिवार में संयुक्त संवाद ही परिवार की वास्तविक प्रगति का स्रोत है

**— कवि दलिचंद जांगिड, सतारा**

आज के आधुनिक युग और बदलते परिवेश में संयुक्त परिवारों की धारणाएँ खंडित हो रही हैं और एकल परिवार-प्रणाली को बढ़ावा मिल रहा है। इसका प्रभाव माता-पिता और बच्चों के आपसी सौहार्दपूर्ण रिश्तों पर भी पड़ रहा है। आधुनिक मनोविज्ञान में स्वतंत्रता के साथ-साथ परस्पर निर्भरता को भी महत्त्व दिया गया है। एक व्यक्ति अकेले काम कर सकता है, लेकिन बेहतर परिणाम प्राप्त करने के लिए दूसरों की क्षमताओं को अपनी क्षमताओं से जोड़ना आवश्यक है। परिवार हमें सामूहिक प्रयास की शक्ति सिखाता है और एक-दूसरे पर निर्भर रहना सिखाता है। परिवार ही हमें 'मैं' से 'हम' तक की यात्रा कराता है और अपनी सीमाओं को स्वीकार करना सिखाता है।

परिवार में की गई बातचीत और संवाद हमारी वास्तविक पूँजी होने के साथ-साथ एक महत्त्वपूर्ण निवेश भी है। जब हम परिवार के सदस्यों से किया हुआ कोई वादा निभाते हैं, तो उनके मन में भावनात्मक सुरक्षा और विश्वास की भावना जमा करते जाते हैं। इसके विपरीत, यदि परिवार के सदस्यों के बीच बातचीत और आपसी संवाद बंद हो जाए, तो रिश्तों में दूरियाँ और चुनौतियाँ बढ़ने लगती हैं। परिवार ही हमें एक-दूसरे पर भरोसा करना सिखाता है और आपसी संवाद ही अनेक समस्याओं के समाधान का मार्ग प्रशस्त करता है।

मैं अपने 73 वर्षों के व्यापक अनुभव के आधार पर निश्चित रूप से कह सकता हूँ कि परिवार में नियमित संवाद रिश्तों को मजबूत बनाने का सबसे प्रभावी माध्यम है। **मारवाड़ी समाज में एक कहावत है कि जब पिता और बेटे के जूतों का आकार एक समान हो जाए, तब पिता को बेटे को केवल पुत्र नहीं, बल्कि मित्र मानकर जीवन के अनुभव और गुरु-मंत्र साझा करने चाहिए।** पिता और बेटे के बीच प्रतिदिन थोड़ा-सा संवाद उनकी दूरियाँ कम करता है तथा एक-दूसरे की भावनाओं को समझने में सहायता करता है।

जब परिवार में **'फैमिली ज्वाइंट डिस्कशन'** अर्थात संयुक्त पारिवारिक वार्ता की परंपरा बन जाती है और परिवार के सभी सदस्य प्रतिदिन साथ बैठकर बातचीत करते हैं, तो ऐसा परिवार बहुत कम समय में उन्नति का साक्षी बन सकता है। यह अनुभव मैंने जैन और महेश्वरी समाज के अनेक परिवारों में प्रत्यक्ष रूप से देखा है। अपने परिवार में भी मैंने आपसी संवाद की इस प्रक्रिया को अपनाने के परिणाम वर्षों बाद स्पष्ट रूप से देखे हैं। संयुक्त संवाद के माध्यम से परिवार के सदस्य रेलवे के डिब्बों की तरह एक-दूसरे से जुड़े रहते हैं, एक-दूसरे के स्वभाव को समझते हैं और किसी समस्या के उत्पन्न होने पर मिलकर उसका समाधान कर सकते हैं।

मेरा मानना है कि परिवार में आपसी सौहार्द, समरसता और परस्पर संवाद की भावना जितनी मजबूत होगी, समस्याओं का बोझ उतना ही हल्का महसूस होगा और उनका समाधान भी शीघ्र निकलेगा। इसके विपरीत, एकल परिवारों में समस्याओं से जूझते समय मानसिक चिंता और तनाव बढ़ने की संभावना रहती है। इसलिए जीवन में सफलता प्राप्त करनी है तो परिवार में सौहार्द और संवाद की परंपरा को बनाए रखना आवश्यक है। यही संवाद की प्रक्रिया परिवार को मजबूत बनाने के साथ-साथ मनुष्य को जीवन में सफलता का मूलमंत्र भी सिखाती है।

आइए, हम सभी मिलकर यह संकल्प लें कि परिवार में आपसी संवाद की परंपरा को बनाए रखते हुए अपने जीवन को सार्थक बनाने का सतत प्रयास करेंगे।

विपुल धन्यवाद।

**महासभा के मीडिया प्रभारी श्री हरी राम जांगिड संपादक दीप विश्वकर्मा पत्रिका जयपुर के सुपुत्र श्री दिनेश जांगिड को भारतीय वायुसेना में जूनियर वारंट ऑफीसर के पद पर पदोन्नत होने पर महासभा प्रधान श्री रामपाल शर्मा एवम महासभा मुख्य सलाहकार श्रीगोपाल चोयल द्वारा बेंगलुरू में आयोजित त्रैमासिक मीटिंग के दौरान सम्मानित किया गया।**

# जांगिड विद्यार्थी चैरिटेबल ट्रस्ट ने पूजा जांगिड को ₹51 हजार की आर्थिक सहायता प्रदान की

जांगिड विद्यार्थी चैरिटेबल ट्रस्ट, रोहतक ने समाज की जरूरतमंद और होनहार बेटी पूजा जांगिड की बीएससी नर्सिंग की पढ़ाई में सहयोग करते हुए ₹51 हजार की आर्थिक सहायता प्रदान की। इस अवसर पर 28 जून को श्री विश्वकर्मा एजुकेशन ट्रस्ट के पूर्व अध्यक्ष एवं महासभा के आध्यात्मिक प्रकोष्ठ के अध्यक्ष सत्यपाल वत्स के कार्यालय में कार्यक्रम आयोजित किया गया। ट्रस्ट के सौजन्य से प्रमुख समाजसेवी एवं विश्वकर्मा गैस एजेंसी, बहादुरगढ़ के संचालक अजीत जांगिड ने बीएससी नर्सिंग तृतीय वर्ष की छात्रा पूजा जांगिड को ₹51 हजार का चेक प्रदान किया।

अजीत जांगिड ने कहा कि समाज की बेटी की सहायता करना उनके लिए सौभाग्य की बात है। उन्होंने कहा कि ईश्वर ही सेवा की प्रेरणा देता है और हम केवल माध्यम हैं। उन्होंने भविष्य में भी जरूरतमंद विद्यार्थियों की यथासंभव सहायता जारी रखने का आश्वासन दिया। सत्यपाल वत्स ने कहा कि शिक्षा के माध्यम से समाज में जागृति आई है। बहादुरगढ़ की बेटी श्वेता जांगिड का आईएफएस तथा साक्षी जांगिड का हरियाणा सिविल सेवा और अब भारतीय राजस्व सेवा में चयन इसका प्रमाण है। उन्होंने बताया कि श्री विश्वकर्मा एजुकेशन ट्रस्ट के माध्यम से भी सैकड़ों विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति देकर सहायता करने का अवसर मिला, जिनमें अनेक विद्यार्थी आज डॉक्टर और इंजीनियर बनकर समाज का नाम रोशन कर रहे हैं।

ट्रस्ट के चेयरमैन रामेश्वर दास जांगिड ने बताया कि जांगिड विद्यार्थी चैरिटेबल ट्रस्ट की स्थापना वर्ष 2018 में समाज के गणमान्य लोगों ने आर्थिक रूप से कमजोर एवं प्रतिभावान विद्यार्थियों की शिक्षा में सहयोग के उद्देश्य से की थी। उन्होंने बताया कि अब तक ट्रस्ट द्वारा करीब 21 लाख रुपये की आर्थिक सहायता जरूरतमंद विद्यार्थियों को दी जा चुकी है। उन्होंने समाज के सक्षम लोगों से इस पुनीत कार्य में सहयोग करने की अपील करते हुए संत कबीर के प्रसिद्ध दोहे का उल्लेख किया— **"दान दिए धन ना घटे, कह गए संत कबीर।"** उन्होंने कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में किया गया सहयोग समाज के भविष्य को मजबूत करता है।

इस अवसर पर ट्रस्ट के वाइस चेयरमैन हंसराज जांगिड, सचिव रवि कुमार जांगिड, कोषाध्यक्ष हजारी लाल जांगिड, पूर्व चेयरमैन देवी शंकर जांगिड, श्रीमती गीता डरोलिया एवं धारासिंह जांगिड सहित समाज के गणमान्यजन उपस्थित रहे।

**— सत्यपाल वत्स, पूर्व अध्यक्ष, श्री विश्वकर्मा एजुकेशन ट्रस्ट**

# स्काउटिंग क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान पर हार्दिक बधाई

स्काउटिंग क्षेत्र में उत्कृष्ट एवं उल्लेखनीय सेवाओं के लिए झुंझुनू जिला **कमिश्नर स्काउट (वयस्क संसाधन) एवं लीडर ट्रेनर (स्काउट), सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य प्रहलादराय जांगिड, सोटवारा को राष्ट्रीय स्तर के सिल्वर स्टार अवार्ड से सम्मानित किया जाना अत्यंत गौरव का विषय है।**

15 अगस्त 2026 को जिला स्टेडियम में आयोजित स्वतंत्रता दिवस समारोह में जिला कलक्टर अरुण गर्ग द्वारा उन्हें सम्मानित किया गया। यह सम्मान उनके समर्पण, अनुशासन एवं स्काउटिंग के क्षेत्र में दीर्घकालीन सेवाओं की पहचान है।

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा के प्रधान रामपाल शर्मा ने प्रहलादराय जांगिड को इस गौरवपूर्ण उपलब्धि पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए कहा कि उनकी उपलब्धि समाज के लिए प्रेरणादायी है।

महासभा उनके उज्ज्वल भविष्य एवं निरंतर समाजसेवा की मंगलकामना करती है।

****

15 अगस्त 2026 को जिला स्टेडियम में आयोजित स्वतंत्रता दिवस समारोह में जिला कलक्टर अरुण गर्ग द्वारा प्रहलादराय जांगिड को सम्मानित किया गया।

# कुमारी खुशबू जांगिड की उपलब्धि ने बढ़ाया जांगिड समाज का गौरव

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा के कर्नाटक प्रदेश के अध्यक्ष श्री बाबूलाल जांगिड की सुपुत्री कुमारी खुशबू जांगिड ने अपनी प्रतिभा, मेहनत, अनुशासन और समर्पण के बल पर अपने परिवार के साथ-साथ जांगिड समाज का गौरव बढ़ाया है। एयर इंडिया द्वारा उन्हें वर्ष 2025-26 के **"Wings of Excellence Award"** से सम्मानित किया जाना उनकी उत्कृष्ट कार्यक्षमता और समर्पण का प्रमाण है। यह उपलब्धि पूरे समाज के लिए गर्व और प्रसन्नता का विषय है।

कुमारी खुशबू ने वर्ष 2018 में कक्षा 12वीं की परीक्षा सफलतापूर्वक पास की। शिक्षा पूर्ण करने के बाद उन्होंने अपने रुचि के क्षेत्र में करियर बनाने का निर्णय लिया और एयर होस्टेस के लिए आवश्यक प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रशिक्षण पूर्ण करने के बाद कुमारी खुशबू ने विमानन क्षेत्र में अपना करियर बनाया और वर्तमान में एयर इंडिया में क्रू मेंबर के रूप में अपनी सेवाएं दे रही हैं।

**कुमारी खुशबू की उपलब्धियों में वर्ष 2025-26 में एयर इंडिया द्वारा प्रदान किया गया "Wings of Excellence Award" विशेष रूप से उल्लेखनीय है।** कुमारी खुशबू को सम्मानित किया जाना निश्चित रूप से व्यक्तिगत उपलब्धि के साथ-साथ परिवार और समाज के लिए भी गौरव का क्षण है।

श्री बाबूलाल जांगिड स्वयं अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा के कर्नाटक प्रदेश के अध्यक्ष के रूप में समाज और संगठन के कार्यों में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। उनकी सुपुत्री की यह सफलता निश्चित रूप से परिवार के लिए अत्यंत गौरव का विषय है। कुमारी खुशबू ने अपनी उपलब्धि के माध्यम से यह भी सिद्ध किया है कि समाज की बेटियां आज पारंपरिक क्षेत्रों तक सीमित न रहकर विमानन जैसे आधुनिक और चुनौतीपूर्ण क्षेत्रों में भी अपनी प्रतिभा का परचम लहरा रही हैं।

महासभा प्रधान श्री रामपाल शर्मा ने कुमारी खुशबू जांगिड को इस गौरवपूर्ण उपलब्धि पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दी हैं। उन्होंने उनके उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना करते हुए आशा व्यक्त की कि वे भविष्य में भी इसी प्रकार अपनी मेहनत, प्रतिभा और कार्यकुशलता से परिवार एवं समाज का नाम रोशन करती रहेंगी।

****

# सम्मान एवं गौरव का क्षण

**स्वतंत्रता दिवस पर हांसी में आयोजित समारोह में माननीय मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी द्वारा सामाजिक क्षेत्र में सराहनीय कार्यों के लिए श्री मंगल राम को सम्मानित किए जाने पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।**

**महासभा प्रधान की ओर से आपके उज्ज्वल भविष्य एवं निरंतर समाजसेवा के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।**

****

## हरदा जिला सभा के अध्यक्ष पद पर निर्विरोध निर्वाचित होने पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा एवं प्रदेश सभा मध्यप्रदेश की ओर से हरदा जिला सभा के अध्यक्ष पद पर **श्री संतोष कुमार चोयल** के निर्विरोध निर्वाचित होने पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ। साथ ही नवनिर्वाचित कार्यकारिणी के समस्त पदाधिकारियों को भी सफल एवं यशस्वी कार्यकाल की मंगलकामनाएँ।

महासभा प्रधान रामपाल शर्मा ने हार्दिक बधाई प्रेषित हुए कहा कि यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि मध्यप्रदेश में प्रदेश सभा से लेकर जिला सभा एवं तहसील सभा तक चुनाव निरंतर निर्विरोध हो रहे हैं। यह समाज की एकता, आपसी सद्भाव, संगठन के प्रति निष्ठा और सामूहिक भावना का प्रमाण है। इसके लिए मध्यप्रदेश के सभी समाजबंधु एवं संगठन के पदाधिकारी बधाई के पात्र हैं। ******

## जिला सभा खैरथल – तिजारा अंतर्गत तहसील अध्यक्ष पद पर निर्विरोध निर्वाचित होने पर महासभा और प्रदेश सभा राजस्थान की ओर से हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं।

राजेंद्र कुमार जांगिड<br>तहसील अध्यक्ष तिजारा<br>जिला खैरथल तिजारा

बाबूलाल जांगिड<br>तहसील अध्यक्ष कोट कासिम<br>जिला खैरथल तिजारा

सुभाष चंद्र जांगिड<br>तहसील अध्यक्ष मुंडावर<br>जिला खैरथल तिजारा

## राजस्थान शिक्षा विभाग में दिव्या जांगिड बनीं व्याख्याता

प्रतिभा किसी की मोहताज नहीं होती। सफलता उन्हीं को मिलती है, जो विपरीत परिस्थितियों में भी हिम्मत नहीं हारते। इसका उदाहरण मुंडावर निवासी **दिव्या जांगिड** हैं, जिन्होंने 10 अगस्त को राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा घोषित परीक्षा परिणाम में कॉमर्स विषय में प्रथम ग्रेड लेक्चरर बनकर अपना लक्ष्य हासिल किया।

**दिव्या जांगिड** ने कहा कि नेट परीक्षा से पहले कई दिनों तक बीमारी से ग्रस्त रहने के बावजूद उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित रखा। उन्होंने कहा कि दृढ़ संकल्प, आत्मविश्वास और इच्छाशक्ति ने उन्हें आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। माता-पिता, विशेषकर उनकी मां श्रीमती संतोष देवी जांगिड ने कदम-कदम पर उनका हौसला बढ़ाया, जो उनकी सफलता का मूल मंत्र बना। दिव्या के पिता दिलीप जांगिड ने बताया कि समाज के लोग दिव्या की शादी के लिए दबाव डालते थे, लेकिन उन्हें बेटी के भविष्य की चिंता थी। इसलिए उन्होंने हमेशा दिव्या को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। दिव्या ने मेहनत, लगन और निरंतर अध्ययन के बल पर यह उपलब्धि हासिल कर परिवार, समाज एवं मुंडावर क्षेत्र का नाम रोशन किया है।

महासभा उपप्रधान उजेंद्र जांगिड, महेंद्र जांगिड, अशोक एवं राजू ने 11 अगस्त को दिव्या के घर पहुंचकर साफा एवं माला पहनाकर तथा स्मृति चिह्न देकर उनका सम्मान किया और सफलता पर बधाई देते हुए उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दीं।

महासभा प्रधान रामपाल शर्मा ने भी दिव्या जांगिड को बधाई देते हुए कहा कि उन्होंने अपनी प्रतिभा और मेहनत से सिद्ध किया है कि परिस्थितियां कितनी भी विपरीत हों, दृढ़ इच्छाशक्ति और आत्मविश्वास से सफलता हासिल की जा सकती है।

**उजेंद्र जांगिड़, मुंडावर - महासभा उपप्रधान**

# शुभकामना एवं बधाई संदेश

**प्रिय प्रतिभाशाली.... विद्यार्थियों, नीट (NEET-UG) परीक्षा में सफलता प्राप्त करने वाले समाज के सभी होनहार विद्यार्थियों को अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा की ओर से हार्दिक बधाई एवं अनंत शुभकामनाएँ।**

NEET UG - 2026 AIR -580
नवीन जांगिड सुपुत्र श्री अरविन्द कु. जांगिड

NEET UG - 2026 AIR -3567
दैविक जांगिड सुपुत्र श्री संजय जांगिड
नवलगढ जिला - झूंझनू ( राज.)

NEET UG - 2026 - AIR Rank 4035
रोहन जांगिड सुपुत्र श्री मुकेश जांगिड,
नवलगढ जिला - झूंझनू ( राज.)

NEET 2026 AIR -4380
पूजा सुपुत्री श्री कृष्ण कुमार सिलग
रिसालियाखेड़ा जिला सिरसा

NEET 2026 AIR -8081
अविका शर्मा पिता श्री घनश्याम शर्मा
किशनगढ़ जिला अजमेर

NEET UG - 2026 - AIR Rank 13395
लक्ष्मी जांगिड सुपुत्री श्री राजेश जांगिड,
मेड़ता सिटी ( राज.)

NEET UG - 2026 AIR -17510
लक्ष्मीकात जागिड पुंत्र श्री अशोक जागिड
लाड़ली का बास, दौसा राजस्थान

आपकी यह सफलता आपके अथक परिश्रम, दृढ़ संकल्प, अनुशासन तथा आपके माता-पिता, गुरुजनों और शुभचिंतकों के सहयोग का श्रेष्ठ परिणाम है। आपने अपनी प्रतिभा और मेहनत से न केवल अपने परिवार, बल्कि पूरे समाज का गौरव बढ़ाया है। हमें पूर्ण विश्वास है कि आप चिकित्सा के क्षेत्र में उत्कृष्ट सेवाएँ देकर मानवता की सेवा करेंगे तथा अपने ज्ञान, संवेदनशीलता और समर्पण से राष्ट्र एवं समाज का नाम रोशन करेंगे। आपकी उपलब्धि समाज के अन्य विद्यार्थियों के लिए भी प्रेरणा का स्रोत बनेगी। ईश्वर से प्रार्थना है कि आप निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर रहें, नई-नई सफलताओं के शिखर प्राप्त करें तथा सेवा, संस्कार और समर्पण की भावना के साथ अपने जीवन को सार्थक बनाएं।

एक बार पुनः सभी सफल विद्यार्थियों एवं उनके अभिभावकों को हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए मंगलकामनाएँ।

**रामपाल शर्मा, राष्ट्रीय प्रधान**

# सुरभि जांगिड ने पेंटिंग के माध्यम से अपनी प्रतिभा का परचम इंग्लैंड में भी फहराया

**पी. एल. शास्त्री - गुरुग्राम**

सुरभि जांगिड ने अपने नाम के अनुरूप ही इंग्लैंड में अपनी असीम प्रतिभा का परचम लहराया है। **युवा कलाकार सुरभि जांगिड की कलाकृतियों की प्रदर्शनी जून, 2026 में आलस्टर विश्वविद्यालय (बेलफास्ट यू. के.) में क्वीनस्ट्रीट आर्ट गैलरी बेलफास्ट में प्रदर्शित की गई थी और उनकी प्रतिभा को कला के एक पारखी ने पहचान कर उनके इस प्रशंसक ने, उनकी एक पेंटिंग को 90 हजार रुपए में खरीदा है।**

सुरभि का जन्म पिता डॉ राजेश जांगिड और माता डॉ गीता जांगिड के घर 3 अगस्त, 2004 को बरवाला, जिला हिसार में हुआ। सुरभि के पिता डॉ राजेश भी राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त एक कला प्राध्यापक हैं। उन्होंने बचपन से ही अपने माता-पिता को, कलाकृतियां बनाते हुए देखा है और देखते-देखते वह तुलिका पकड़कर स्वयं ही आडी-तिरछी रेखाएं खींचने लगी और यही से उसके जीवन में एक नया मोड़ आने लगा। उसने कभी सोचा भी नहीं था कि आज की यहीं आड़ी-तिरछी रेखाएं उसे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्धि दिलाने के साथ-साथ उसका करियर भी बन जाएगी। सुरभि ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा बरवाला, फतेहाबाद व हिसार से हासिल की और माता-पिता द्वारा बनाई जा रही कलाकृतियों को देखकर और उनको आत्मसात किया। स्कूल मे उसकी इस कला को सहपाठियों द्वारा भूरि-भूरि प्रशंसा मिलने के साथ ही धीरे-धीरे उनके अध्यापकों से भी प्रोत्साहन मिलने लगा। इसी के फलस्वरुप उसका मनोबल बढ़ता गया और विद्या देवी जिंदल स्कूल में पढ़ाई करते हुए अनेकों बार राज्य व राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं व प्रदर्शनियों में भाग लिया और पुरस्कार हासिल करके विद्यालय का नाम रोशन किया। सुरभि जांगिड ने चित्रकला के साथ-साथ तैराकी के क्षेत्र में भी अपनी एक विशेष पहचान बनाई है। जिला व राज्य स्तरीय प्रतियोगिताएं जीतकर स्कूल का नाम गौरवान्वित किया। **चित्रकला , क्राफ्ट , पेपर मेसी आर्ट , लीपन आर्ट, मार्बल आर्ट , एक्रेलिक पेंटिंग , ऑयल पेंटिंग , पोट्रेट पेंटिंग , क्ले मॉडलिंग , प्रिंट मेकिंग, आदि विधाओं का ज्ञान अर्जित करने व 12वीं कक्षा उत्तीर्ण करने के उपरांत उसने दादा लक्ष्मी चंद फाइन आर्ट विश्वविद्यालय, रोहतक में बी एफ.ए. ( चित्रकला) करने के लिए प्रवेश लिया।** इस कोर्स के दौरान अनेकों बार चित्र प्रदर्शनियां व प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए परिवार व समाज का नाम रोशन किया और अनेकों बार सरकारी व गैर सरकारी विभागों द्वारा उनको सम्मानित भी किया गया। सुरभि के माता-पिता ने कहा कि बी.एफ.ए. करने के उपरांत एम.एफ.ए. करने के लिए सुरभि ने एलस्टर यूनिवर्सिटी, बेलफास्ट (यू. के.) में स्कॉलरशिप अर्जित करके प्रवेश लिया। वहां भी अपनी अनूठी कला का प्रदर्शन करते हुए अपनी एक विशेष पहचान बनाई है और भारतवर्ष का नाम रोशन किया है। सुरभि जांगिड ने कहा कि मेरा यह एक छोटा सा प्रयास था, जिसने मुझे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एक विशेष पहचान दिलवाई है। इसका श्रेय मैं, अपने माता-पिता को ही देना चाहती हूँ जिन्होंने मुझे बेहतर संस्कार देने के साथ ही चित्रकला की बारिकियों के बारे में पारंगत किया है। सुरभि जांगिड ने कहा कि मैं भविष्य में स्तुत्य प्रयास करुंगी कि अपनी भावनाओं के माध्यम से अपनी परिकल्पनाओं को मूर्त रूप देकर चित्रकला के क्षेत्र में उल्लेखनीय आयाम स्थापित कर सकूं।

लन्दन प्रवासी, प्रसिद्ध उद्योगपति और जोधपुर निवासी सुखदेव जांगिड ने सुरभि जांगिड को बधाई और शुभकामना देते हुए कहा कि सुरभि जांगिड की बेलफास्ट, इंगलेंड में पहली ही पेंटिंग 90 हजार रुपए में बेची है, यह उसकी प्रतिभा का परिचायक है। उन्होंने कहा कि उसे इंगलेंड मे रहते हुए कोई भी कठिनाई आए तो मुझे सहर्ष सूचित करे, मैं उस समस्या के निराकरण के लिए हर संभव प्रयास करुंगा।

महासभा के प्रधान रामपाल शर्मा और आदमपुर के विधायक चन्द्रप्रकाश ने सुरभि जांगिड को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी कला को एक विशेष पहचान मिलने पर बधाई देते हुए कहा कि यह उसकी अथक साधना और परिश्रम का फल है। आपने भविष्य के कोहिनूर सुरभि जांगिड के उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना की है। तूलिका के माध्यम से पेंटिंग को एक नया आयाम देने वाली सुरभि जांगिड ने 21 वर्ष की आयु में जो अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर समाज का नाम गौरवान्वित किया है उसके लिए मैं हृदय के अन्तःकरण से हार्दिक बधाई देता हूँ। मैं भविष्य की इस महानतम चित्रकार के उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करता हूँ।

*********

# आर्थिक तंगी के बावजूद हिमांशी जांगिड ने जर्मनी में हुई आई.एस.एस.एफ. जूनियर वर्ल्ड चैंपियनशिप में कांस्य पदक जीता

**श्रीमती अनुसईया शर्मा शास्त्री - गुरुग्राम**

भिवानी की रहने वाली और एक चाय बेचने वाले की 17 वर्षीय शूटर बेटी हिमांशी जांगिड ने अपने संघर्ष के बल पर अपनी सफलता की कहानी लिखी है। जिसने अपने जीवन में संघर्षों का सामना करते हुए अपना लक्ष्य हासिल किया है। **हिमांशी जांगिड का जन्म 28 मई, 2009 को गांव पचौरी, जिला झुंझनू में पिता गोविंद जांगिड (चोयल) और माता श्रीमती शिखा जांगिड** के घर हुआ। हिमांशी जांगिड के पिता एक छोटी सी चाय की दुकान चलते हैं जिससे वह अपने परिवार का भरण पोषण करते हैं। समय के चक्र ने गोविंद जांगिड को राजस्थान से हरियाणा के भिवानी शहर मे पहुँचा दिया।

हिमांशी के माता- पिता ने कहा कि आर्थिक तंगी के बावजूद बच्चों की पढ़ाई मे कभी कमी महसूस नहीं होने दी। हिमांशी को तैयारी के लिए अकेडमी भेजना पड़ा और इसके लिए ऋण भी लेना पड़ा। हमारे पूरे प्रयासों के बावजूद भी हिमांशी को आर्थिक तंगी और पैसे के अभाव में दो बार अपनी प्रेक्टिस बीच में छोडनी भी पड़ी, उन्होंने बताया कि हिमांशी की शूटिंग में अभिरुचि को देखते हुए ही 10 साल की आयु में ही सन् 2019 में भिवानी की लक्ष्य शूटिंग अकादमी में दाखिला दिलवा दिया गया था। विकट आर्थिक परिस्थितियों के कारण ही पहली बार सन् 2022 में और दोबारा सन् 2024 में शूटिंग की प्रेक्टिस छूटवा दी गई थी। दिसंबर 2023 में भोपाल में, आयोजित स्कूली शुटिंग प्रतियोगिता में हिमांशी ने स्वर्ण पदक हासिल किया था। उसके बाद उसके अथक परिश्रम और लगन के कारण हिमांशी का 25 जुलाई, 2025 को सेना के गर्ल्स स्पोर्ट्स स्कूल महू, जिला इन्दौर में चयन हो गया। इस स्कूल में चयन होने के बाद हिमांशी ने सबसे पहले इन्दौर जिला स्तर पर और फिर मध्यप्रदेश राज्य स्तरीय गर्ल्स स्कूल स्पोर्ट्स में स्वर्ण पदक हासिल किया। अपनी असीम प्रतिभा के बल पर **जर्मनी में 16 जून, 2026 से 26 जून, 2026 तक आयोजित हुए आई.एस.एस.एफ. जूनियर वर्ल्ड चैंपियनशिप, महिला जूनियर 10 मीटर एयर पिस्टल शूटिंग प्रतिस्पर्धा में कांस्य पदक हासिल करके जांगिड समाज और देश का नाम गौरवान्वित किया है।**

22 जून को कांस्य पदक जीतकर भिवानी पहुंचने पर जांगिड समाज द्वारा पलक पांवड़े बिछाकर हिमांशी जांगिड का भावभीना स्वागत किया गया। महासभा उपप्रधान श्रीराम जांगिड, भिवानी के जिला अध्यक्ष राजेश जांगिड, पूर्व जिला अध्यक्ष जगदीश जांगिड, राजेन्द्र छपारिया, लालचन्द्र जांगिड , प्रधानाचार्य राजेन्द्र सिंह कालीकट, कैप्टन महावीर जांगिड, सुदेश बामलिया और शम्भू दयाल राजोतिया आदि की अगुवाई मे समाज के सैकड़ों समाज बंधुओं द्वारा हिमांशी जांगिड को भिवानी बस स्टैंड से ढोल नगाड़ों के बीच नाचते गाते हुए विजय जलूस के रूप में उसके निवास स्थान पर ले जाया गया। **कबड्डी पैरालिंपिक एसोसिएशन, हरियाणा के अध्यक्ष राजेश जांगिड ने हिमांशी को स्मृति चिह्न और शाल ओढ़ाकर सम्मानित किया।**

महासभा प्रधान रामपाल शर्मा ने हिमांशी जांगिड को अपना आशीर्वाद देते हुए कहा कि गरीबी के अंधेरे और आर्थिक विषमताओं को चीरते हुए विजय हासिल करने वाली समाज की इस होनहार बेटी पर हम सभी को गर्व है। उन्होंने कहा कि मैं हिमांशी जांगिड के उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करता हूँ और आशा करता हूँ कि वह भविष्य में नए-नए कीर्तिमान स्थापित करते हुए समाज और देश का नाम गौरवान्वित करेगी। आदमपुर के विधायक चन्द्रप्रकाश जांगिड, हरियाणा श्रमिक कल्याण बोर्ड के चेयरमैन रोहताश जांगिड, महासभा के अन्तर्राष्ट्रीय प्रकोष्ठ अध्यक्ष अमरा राम चोयल तथा गुरुग्राम के प्रसिद्ध उधोगपति और भामाशाह पी. एल. शास्त्री ने बधाई देते हुए कहा कि भिवानी छोटी काशी के साथ-साथ देशभर में एक प्रकार से खेल नगरी के रूप में भी विख्यात है जिसने देश को गीता फोगाट जैसे अनेक खिलाड़ी दिए हैं। हमें विश्वास है कि हिमांशी ने जर्मनी में आयोजित जूनियर वर्ल्ड चैंपियनशिप टूर्नामेंट में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जैसा उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है, वह भविष्य में भी उसी बहुआयामी खेल भावना का परिचय देते हुए, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेक पुरस्कार हासिल करेगी। हिमांशी भविष्य मे समाज और देश का नाम गौरवान्वित करती रहे हम ऐसी मंगल कामना करते हैं।

**( मार्मिक अपील :- हिमांशी जांगिड के पिता ने समाज के भामाशाहों से भावुक अपील की है कि वह हिमांशी के उज्ज्वल भविष्य के लिए आर्थिक सहयोग करें , क्योंकि शूटिंग की प्रेक्टिस में काफी खर्च होता है। एक दो साल की मुश्किल है फिर तो हिमांशी ही दूसरे बच्चों की सहायता करने लगेगी।) ** ****

## नीरज जांगिड ने राजस्थान प्रशासनिक सेवा में 53वां स्थान हासिल किया

राजस्थान के डूंगरपुर जिले के सीमलवाड़ा निवासी नीरज जांगिड ने **वर्ष 2024 की राजस्थान प्रशासनिक सेवा (RAS) परीक्षा में 53वीं रैंक हासिल कर उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है।** साधारण परिवार से आने वाले नीरज ने अपनी मेहनत, दृढ़ संकल्प और आत्मविश्वास के बल पर यह मुकाम हासिल किया।

9 जून 1998 को जन्मे नीरज के पिता दीपक जांगिड काष्ठकला एवं फर्नीचर निर्माण का कार्य करते हैं, जबकि माता मीना जांगिड के संस्कारों और त्याग ने उन्हें आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। प्रारंभिक शिक्षा गांव में प्राप्त करने के बाद उन्होंने मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर से बीएससी की। विज्ञान संकाय में ब्लॉक स्तर पर प्रथम आने पर 15 अगस्त को तत्कालीन एसडीएम द्वारा मिला सम्मान उनके जीवन का महत्वपूर्ण मोड़ बना और बड़े लक्ष्य की प्रेरणा मिली।

प्रतियोगी परीक्षाओं के सफर में नीरज ने दो बार पुलिस उप निरीक्षक परीक्षा उत्तीर्ण की, लेकिन अंतिम चयन नहीं हुआ। ग्राम विकास अधिकारी परीक्षा में भी वे मात्र 0.90 अंक से अंतिम चयन से चूक गए। इन असफलताओं ने उन्हें निराश करने के बजाय और अधिक मेहनत के लिए प्रेरित किया। उन्होंने एमएससी जूलॉजी की पढ़ाई के साथ 2022 से 2024 तक जयपुर की स्प्रिंगबोर्ड अकादमी से मार्गदर्शन लिया। वर्ष 2023 की RAS परीक्षा में 288वीं रैंक प्राप्त कर वे वर्तमान में राजस्थान सरकार के सहकारिता विभाग में सहायक रजिस्ट्रार के पद पर कार्यरत हैं। वर्ष 2024 में 53वीं रैंक हासिल कर उन्होंने अपनी सफलता को नई ऊंचाई दी।
नीरज अपनी सफलता का श्रेय माता-पिता, बड़े भाई और ईश्वर को देते हैं। उनका लक्ष्य भविष्य में आईएएस अधिकारी बनकर समाज और देश की सेवा करना है।

महासभा के प्रधान रामपाल शर्मा ने उन्हें बधाई देते हुए उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दीं।

****

## डॉ. श्याम जांगिड ने राजस्थान प्रशासनिक सेवा में 452 वां रैंक हासिल किया।

हनुमानगढ़ जिले के गांव परलीका निवासी डॉ. श्याम जांगिड ने **वर्ष 2024 की राजस्थान प्रशासनिक सेवा (RAS) परीक्षा में 452वीं रैंक हासिल कर सफलता प्राप्त की है।** उनकी यह उपलब्धि वर्षों के संघर्ष, धैर्य, आत्मविश्वास और निरंतर मेहनत का परिणाम है। डॉ. जांगिड ने वर्ष 2013 में पहली बार RAS परीक्षा दी थी। छह प्रयासों में तीन बार वे साक्षात्कार तक पहुंचे, जबकि कई बार अपेक्षित सफलता नहीं मिली। वर्ष 2013 में उन्हें 757वीं और वर्ष 2021 में 949वीं रैंक मिली। उन्होंने असफलताओं को कमजोरी न बनने देकर लगातार अपने प्रदर्शन में सुधार किया और अंततः 452वीं रैंक हासिल की।

उन्होंने हरिसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय, सागर से फॉरेन्सिक डीएनए टेक्नोलॉजी में पीएचडी की है और वर्तमान में फॉरेन्सिक विशेषज्ञ के रूप में सेवाएं दे रहे हैं। नौकरी की जिम्मेदारियों के साथ RAS की तैयारी करना उनके लिए चुनौतीपूर्ण रहा, लेकिन दृढ़ संकल्प, अनुशासन और सकारात्मक सोच ने उन्हें लक्ष्य तक पहुंचाया। डॉ. जांगिड अपनी सफलता का श्रेय अपने पिता शंकरलाल जांगिड, माता सावित्री देवी, धर्मपत्नी लक्ष्मी सुथार तथा परिवार और सहयोगियों को देते हैं। उनका कहना है कि स्पष्ट लक्ष्य, निरंतर प्रयास और मजबूत इच्छाशक्ति से कठिन से कठिन लक्ष्य भी हासिल किया जा सकता है।

महासभा के प्रधान रामपाल शर्मा ने डॉ. जांगिड को बधाई देते हुए उनके संघर्ष और सफलता को युवाओं के लिए प्रेरणादायक बताया तथा उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दीं।

****

## अच्छे कार्यों का सम्मान, समाजसेवा को नई प्रेरणा

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर हिसार में कानूनगो **श्री संदीप जांगड़ा** को समाजहित में किए जा रहे सराहनीय एवं प्रशंसनीय कार्यों के लिए **श्री नवीन जिंदल** द्वारा सम्मानित किया गया। यह सम्मान उनके सामाजिक सरोकारों के प्रति समर्पण को नई ऊर्जा देगा तथा अन्य लोगों को भी समाजसेवा के लिए प्रेरित करेगा।

महासभा की ओर से श्री संदीप जांगड़ा को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं। ***

## देवम जांगिड ने हरियाणा राज्य ताइक्वांण्डो प्रतियोगिता 2026 में कांस्य पदक जीता।

कैथल जिले के गांव चंदाना निवासी 15 वर्षीय देवम जांगिड ने अपनी प्रतिभा और मेहनत का परिचय देते हुए हरियाणा राज्य स्तरीय ताइक्वांडो प्रतियोगिता 2026 में कांस्य पदक जीतकर अपने माता-पिता और जांगिड समाज का नाम गौरवान्वित किया है।

**कुरुक्षेत्र में 1 से 3 अगस्त 2026 तक आयोजित तीसरी हरियाणा राज्य स्तरीय ताइक्वांडो प्रतियोगिता में देवम ने जूनियर वर्ग की अंडर-17 आयु श्रेणी में यह उपलब्धि हासिल की।**

देवम का जन्म 24 जून 2011 को सुनील जांगिड और सुनीता जांगिड के घर हुआ। उनके पिता पंचकूला के सरकारी स्कूल में अध्यापक तथा माता भी सरकारी विद्यालय में अध्यापिका हैं। देवम सतलुज पब्लिक स्कूल, पंचकूला में कक्षा दसवीं के विद्यार्थी हैं। उन्होंने नवंबर 2021 में ताइक्वांडो खेलना शुरू किया और लगभग पांच वर्षों में राज्य एवं जिला स्तरीय प्रतियोगिताओं में 20 पदक जीते हैं, जिनमें 8 स्वर्ण पदक शामिल हैं। देवम के माता-पिता ने खेल प्रतिभा को बेहतर अवसर देने के उद्देश्य से 2021 में कैथल से पंचकूला स्थानांतरण किया। पढ़ाई के साथ खेल में भी उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले देवम को अब और बेहतर प्रशिक्षण दिलाया जा रहा है।

महासभा के प्रधान रामपाल शर्मा ने देवम को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। उन्होंने विश्वास जताया कि देवम भविष्य में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी उत्कृष्ट प्रदर्शन कर समाज और देश का नाम रोशन करेंगे।****

## हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ

**अनिल कुमार जांगिड,** निवासी – ग्राम पालड़ी, जिला सीकर (राजस्थान) को चार्टर्ड अकाउंटेंट (CA) परीक्षा उत्तीर्ण कर सी.ए. बनने पर अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा की ओर से हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ।

अनिल कुमार ने अपनी मेहनत, लगन, दृढ़ संकल्प और प्रतिभा के बल पर यह महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल कर न केवल अपने माता-पिता एवं परिवार का, बल्कि समाज और अपने गांव पालड़ी का भी नाम गौरवान्वित किया है। इस सफलता के पीछे उनके पिता श्री संतोष कुमार जांगिड एवं दादाजी श्री जगदीश प्रसाद जांगिड के संस्कार, मार्गदर्शन और परिवार के सहयोग की भी महत्वपूर्ण भूमिका है।

हम आशा करते हैं कि अनिल कुमार भविष्य में अपने ज्ञान एवं प्रतिभा के माध्यम से समाज और राष्ट्र की सेवा करते हुए नई ऊँचाइयाँ प्राप्त करेंगे तथा युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणास्रोत बनेंगे।

सी.ए. के रूप में आपके उज्ज्वल, सफल एवं मंगलमय भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ।

# महासभा दिल्ली के एक लाख रूपये के प्लेटिनम सदस्य

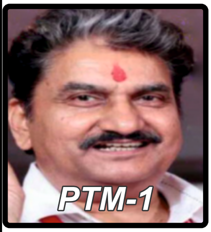

श्री कैलाश चन्द्र बरनेला, (इन्दौर)

श्री सुरेन्द्र कुमार वत्स, दिल्ली

श्री अशोक कुमार बरनेला, इन्दौर

श्री राम कुमार शर्मा,भरथल,दिल्ली

श्री पी.एल.शास्त्री, गुड़गांव

श्री देबूराम जांगिड, दिल्ली

श्री रामनिवास शर्मा, दिल्ली

श्री राजेन्द्र शर्मा, इन्दौर

श्री निर्मल कुमार जांगिड, इन्दौर

श्री लीलू राम शर्मा, दिल्ली

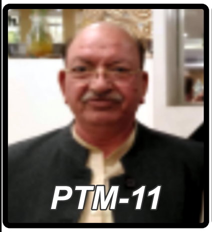

श्री रमेशचन्द शर्मा 'सरपंच', दिल्ली

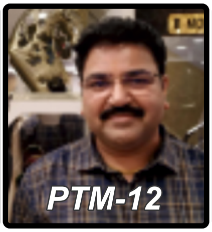

श्री सुरेन्द्र कुमार शर्मा, दिल्ली

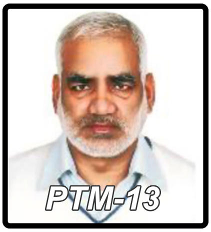

श्री जगदीश प्रसाद शर्मा, दिल्ली

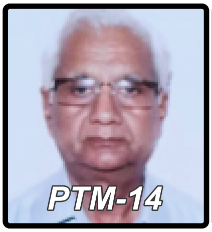

श्री पूरनचन्द शर्मा, दिल्ली

श्री पाली राम शर्मा, आनंद पर्वत दिल्ली

श्री प्रकाश शर्मा, नारायणा, दिल्ली

श्री श्रीगोपाल चोयल, अजमेर

श्री कृष्ण कुमार शर्मा, मुम्बई

श्री माला राम शर्मा, बाली नगर,दिल्ली

श्री विद्यासागर जांगिड, गुड़गांव

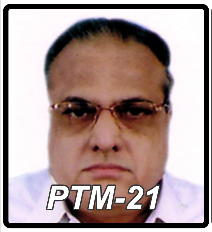

श्री सुशील कुमार शर्मा, कोलकता

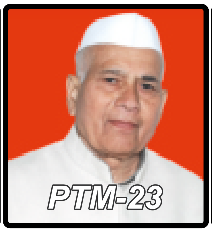

श्री रघुवीर सिंह आर्य, शामली

श्री वेदप्रकाश शर्मा, अहमदाबाद

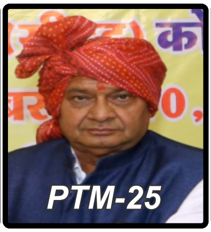

श्री प्रभुदयाल शर्मा, देवास

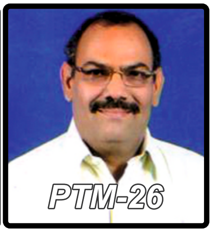

श्री प्रहलादराय शर्मा, इन्दौर

# महासभा दिल्ली के एक लाख रूपये के प्लेटिनम सदस्य

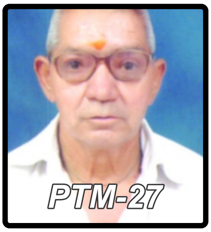

श्री मोहन लाल जांगिड, जोधपुर

श्री पूनाराम जांगिड, जोधपुर

श्री ललित जड़वाल, अजमेर

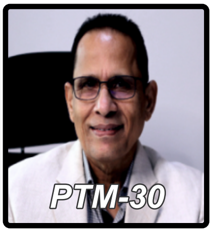

श्री मीता राम जांगिड, मुम्बई

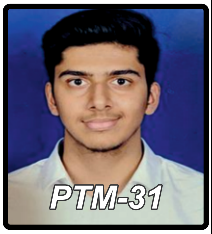

श्री यश अजय शर्मा, मुम्बई

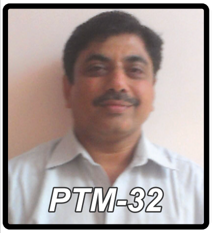

श्री रविन्द्र शर्मा, बीकानेर

श्री जवाहरलाल जांगिड, उज्जैन

श्री नरेश जांगिड, गुड़गांव

श्री भुवन जांगिड, गुड़गांव

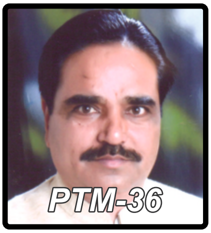

श्री कृष्ण कुमार जांगिड, गुड़गांव

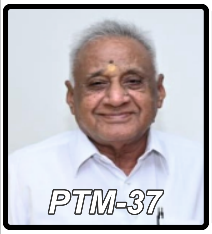

श्री किशन लाल शर्मा, नागपुर

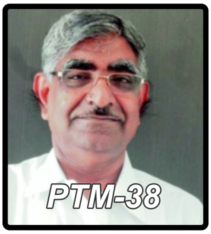

श्री गिरधारी लाल जांगिड,बेंगलुरु

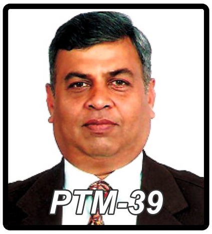

श्री किशोर जी मोखा, नागपुर

श्री बाबू लाल शर्मा, अहमदाबाद

श्री नारायण दत्त, साड़ीवाले, दिल्ली

श्री ओमप्रकाश जांगिड, दिल्ली

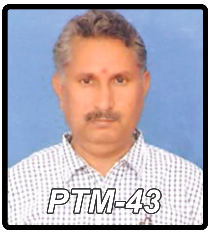

श्री धनपत शर्मा, फरीदाबाद

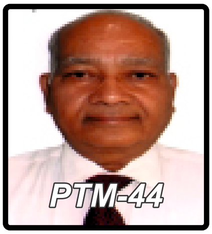

श्री सुरेन्द्र शर्मा, अहमदाबाद

फोटो उपलब्ध नहीं है

PTM-46

श्री दीपक भारद्वाज, दिल्ली

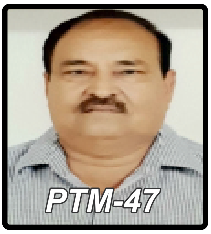

श्री सोमदत्त शर्मा, दिल्ली

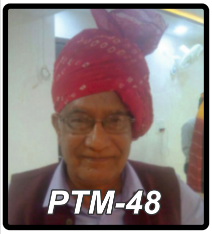

श्री बी.सी. शर्मा, जयपुर

श्री सुरेश शर्मा, नीमच

श्री नितिन शर्मा, इन्दौर

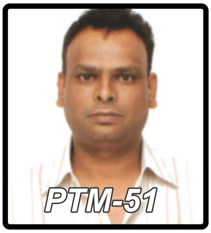

श्री प्रमोद कुमार जांगिड, सूरत

श्री हुकुमचन्द जांगिड, इन्दौर

# महासभा दिल्ली के एक लाख रूपये के प्लेटिनम सदस्य

श्री सत्यनारायण जांगिड, इन्दौर

श्री अशोक कुमार मोखा, नागपुर

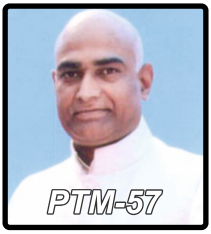

श्री देवमणि जांगिड, दिल्ली

श्री फूलकुमार शर्मा, द्वारका-दिल्ली

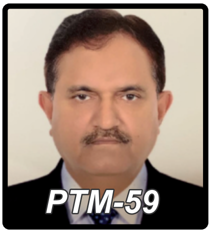

श्री अमराराम जांगिड, जोधपुर

श्री रविशंकर शर्मा, जयपुर

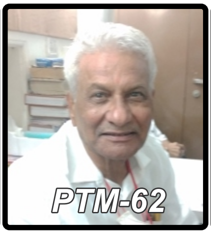

श्री कांति प्रसाद जांगिड, करौली

श्री यादराम जांगिड, दिल्ली

श्री अशोक दत्तु राम, अहमदाबाद

श्री दयानन्द शर्मा, दिल्ली

श्री यशवंत नेपालिया, अजमेर

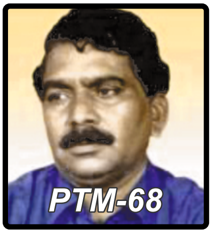

श्री राधेश्याम शर्मा, वापी

श्री जितेंद्र धामू, बीकानेर,राज.

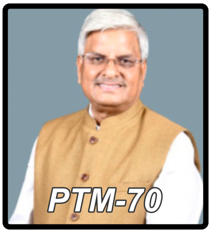

श्री रामपाल शर्मा, बैंगलुरू

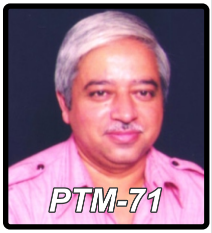

श्री दिनेश नेपालिया, अजमेर

श्री गोपाल शर्मा, कोरबा

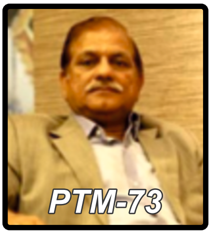

श्री भंवर लाल कुलरिया, मुम्बई

## वर्तमान प्रधान के कार्यकाल में बने हुए इक्यावन हजार रुपये के स्वर्ण सदस्य

श्री प्रेमाराम जांगिड
अहमदाबाद

श्रीमती संतोष शर्मा
धमतरी,छत्तीसगढ

श्री मनोहर लाल शर्मा (दूरदर्शन वाले)
जयपुर, राजस्थान

## वर्तमान प्रधान के कार्यकाल में बने हुए पच्चीस हजार रुपये के रजत सदस्य

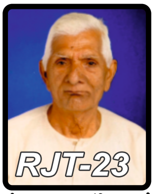

श्री रामदयाल जांगिड, दुर्ग

श्रीमती लीलावती शर्मा, नीमच

श्री निकुंज शर्मा, लखनऊ

श्रीमती निति रनसीवाल, लखनऊ

श्री राजेन्द्र कुमार जांगिड,धुले,महाराष्ट्र

# वर्तमान प्रधान के कार्यकाल में बने हुए एक लाख रुपये के प्लेटिनम सदस्य

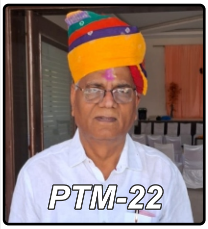

श्री सांवरमल जांगिड, सीकर

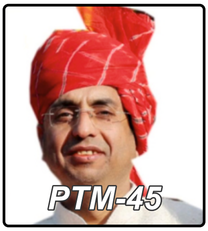

श्री सत्यनारायण शर्मा, दिल्ली

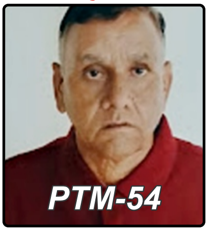

श्री गजानन जांगिड, जालना

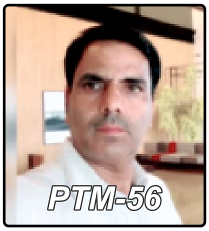

श्री घनश्याम जांगिड, बैंगलुरू

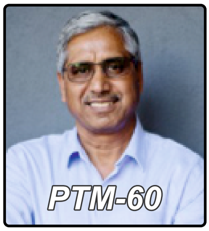

श्री रमेश शर्मा, बैंगलुरू

श्री बाबू लाल, बैंगलुरू

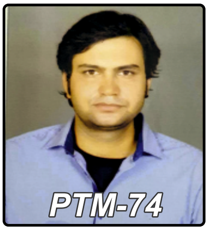

श्री अमित कुमार शर्मा, जयपुर

श्री नरेश चन्द्र शर्मा, बैंगलुरू

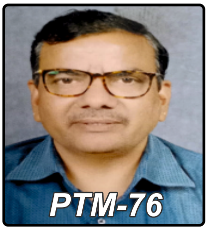

श्री भीमराज शर्मा, जयपुर

श्री रवि जांगिड, बैंगलुरू

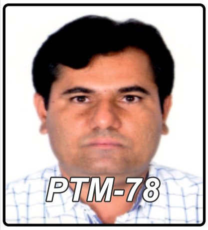

श्री भंवरलाल सुथार, गोवा

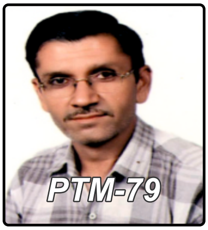

श्री रामनिवास शर्मा, भिलाई

श्री शुभम शर्मा, कोरबा

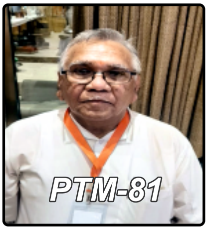

श्री नानूराम जांगिड, धुलिया

श्री प्रहलाद शर्मा, जयपुर

श्री रीछपाल शर्मा, बिलासपुर, छ.ग.

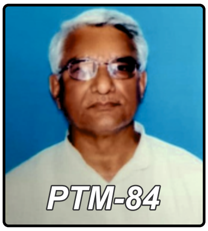

श्री धर्मचन्द शर्मा, बस्तर

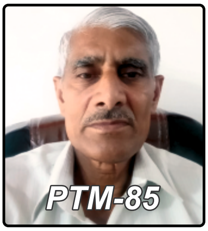

श्री राधेश्याम जांगिड, रेनवाल

श्री कन्हैया लाल खाती, अजमेर

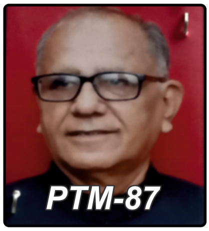

श्री कन्हैया लाल सिलक, अजमेर

श्री अनिल शर्मा, इन्दौर

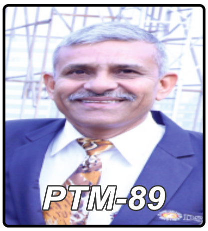

श्री धन सिंह जांगिड, फरीदाबाद

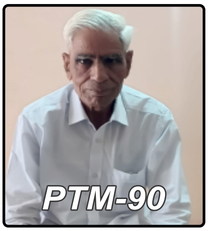

श्री लालचन्द जांगिड, नारनौल

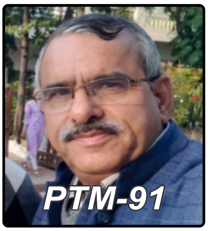

श्री रोहिताश जांगिड, औरंगाबाद

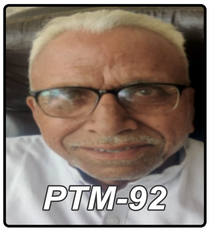

श्री सांवरमल जांगिड, बांसवाडा

# वर्तमान प्रधान के कार्यकाल में बने हुए एक लाख रुपये के प्लेटिनम सदस्य

श्री महावीर प्रसाद जांगिड,अहमदाबाद

श्री शंकरलाल जांगिड, जयपुर

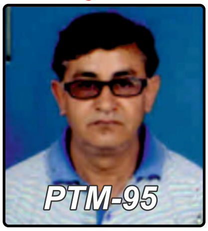

श्री संजय शर्मा, चित्तौड़गढ़

श्री जगतराम भद्रेचा, बैंगलुरु

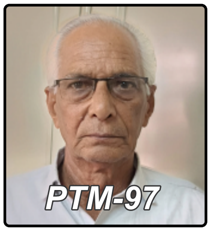

श्री पुरुषोत्तम लाल जांगिड, जयपुर

श्री अनिल शर्मा, चंडीगढ़

श्री लक्ष्मीनारायण जांगिड, गुरूग्राम

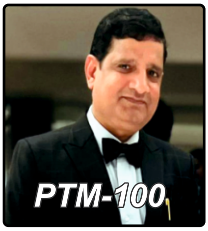

श्री नेमीचन्द जांगिड, सूरत

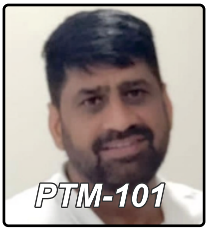

श्री चिरंजीलाल जांगिड, इन्दौर

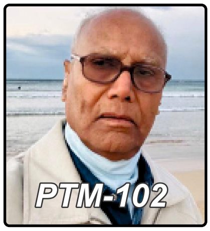

श्री राजेन्द्र कुमार शर्मा, सूरत

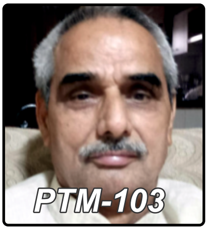

श्री सत्यपाल वत्स, बहादुरगढ़

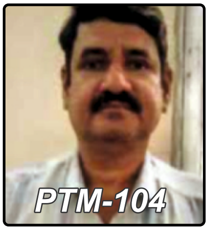

श्री सोमदत्त शर्मा, लखनऊ

श्री ओम प्रकाश जांगिड, दिल्ली

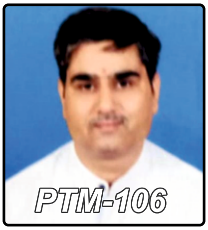

श्री अनिल शर्मा, तेलंगाना

श्री मुकेश जांगिड, तेलंगाना

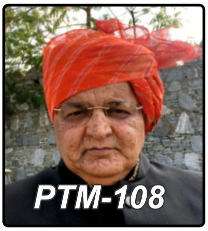

श्री भंवरलाल जांगिड, सूरत

श्री जगदीश खण्डेलवाल, दिल्ली

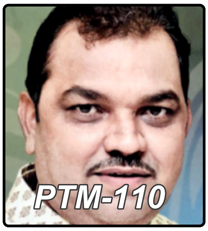

श्री भंवरलाल शर्मा, पाली,राज0

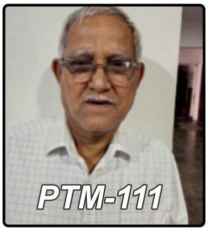

श्री प्रहलाद चन्द शर्मा, बेंगलुरू

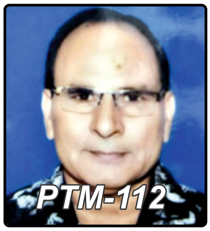

श्री नानूराम जांगिड, हिंगोली

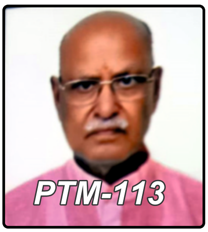

श्री रामानन्द शर्मा, सागरपुर, दिल्ली

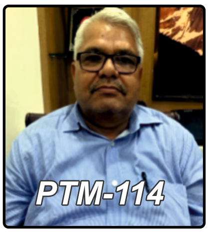

श्री जगदीश प्रसाद शर्मा, दिल्ली

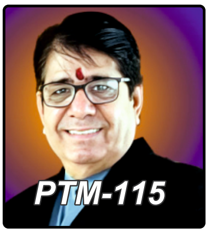

श्री कैलाश जांगिड, सूरत

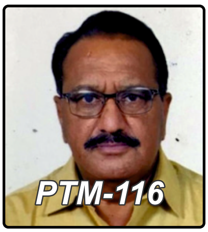

श्री मदन लाल शर्मा, वडोदरा

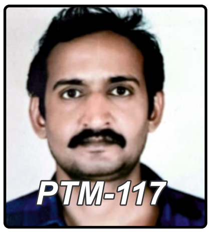

श्री गजानन्द जांगिड, सूरत

# वर्तमान प्रधान के कार्यकाल में बने हुए एक लाख रुपये के प्लेटिनम सदस्य

श्री हरिराम शर्मा, सागरपुर, दिल्ली

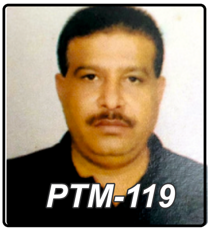

श्री सतवीर शर्मा, गुरूग्राम

श्री किशोरी लाल शर्मा, सागरपुर, दिल्ली

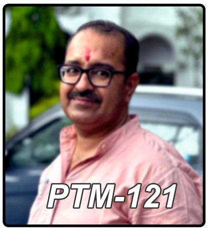

श्री सुनील सिद्धड़, चिड़ावा, झुंझुनू

श्री सुरेश कुमार जांगिड, नजफगढ़

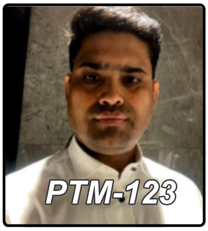

श्री मोहन पंवार, सागरपुर दिल्ली

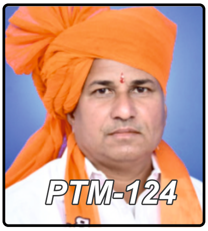

श्री रामावतार जांगिड, सरदारशहर, चूरू

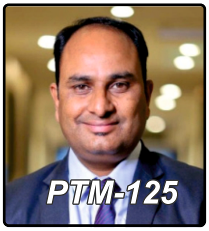

श्री राजील कुमार जांगिड, सूरत

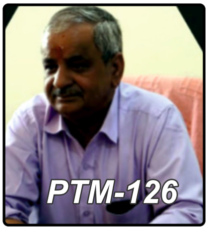

श्री सादीराम जांगिड, हनुमानगढ़,रा0

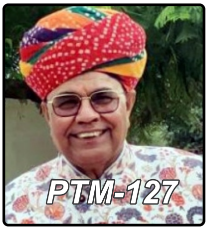

श्री मामराज मिस्त्री, सूरत

श्री सागरमल जांगिड, वडोदरा

श्री सुनील कुमार जांगिड, महाराष्ट्र

श्री महेश कुमार शर्मा, दिल्ली

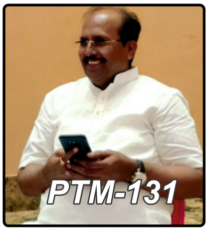

श्री किशन लाल जांगिड, जयपुर

श्री एकलिंग प्रसाद सुथार, सूरत

श्री राजेश जांगिड, हैदराबाद

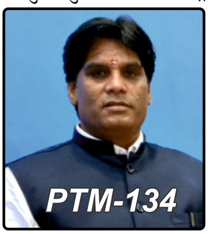

श्री सियाराम जांगिड, हैदराबाद

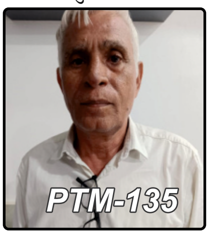

श्री रामवतार शर्मा, तिरूवल्लुर,तमिलनाडू

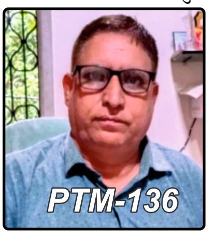

श्री सतीश कुमार जांगिड,(किशनगढ़ बास) वलसाड

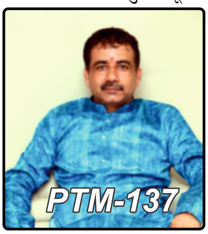

श्री शंकरलाल माकड़, हैदराबाद

श्री महेश चन्द शर्मा, साध नगर, दिल्ली

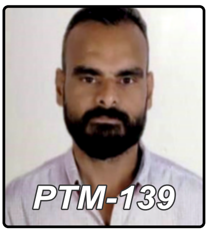

श्री राकेश जांगिड, सूरत

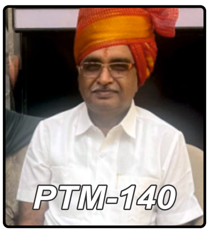

श्री देवकरण जांगिड, हैदराबाद

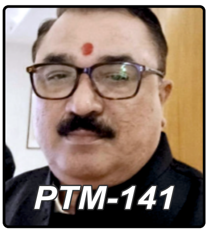

श्री सुभाष शर्मा, भरूच

श्री महेश शर्मा, बैंगलुरू

# वर्तमान प्रधान के कार्यकाल में बने हुए एक लाख रुपये के प्लेटिनम सदस्य

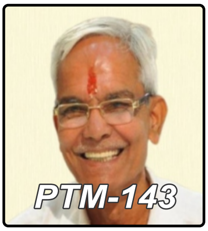

श्री चंद्र प्रकाश शर्मा, गांधीधाम,कच्छ

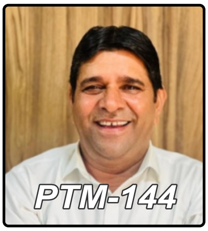

श्री सतवीर जांगिड, बैंगलुरू

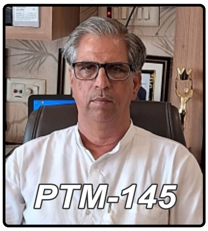

श्री महेन्द्र सिंह जांगिड, धारूहेड़ा रेवाड़ी

श्री पूरनमल जांगिड, सूरत

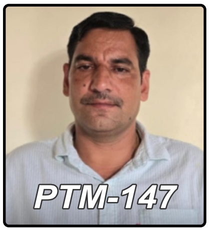

श्री नरेश शर्मा, भरूच

श्री बंशीधर जांगिड, भरूच

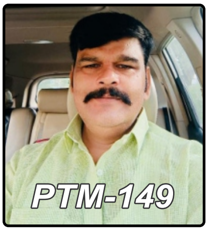

श्री मुकेश कुमार जांगिड, हिम्मतनगर

श्री गोपाल जांगिड, गांधी नगर

श्री राजेन्द्र कुमार डभाण, खेड़ा

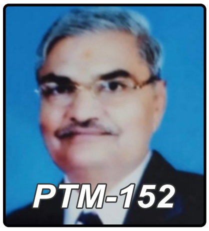

श्री ओम प्रकाश शर्मा, अहमदाबाद

श्री अरूण कुमार डभाण, खेड़ा

श्री कैलाश चंद्र शर्मा, डभाण, खेड़ा

श्री मदन लाल सुथार, भरूच

श्री महेन्द्र जांगिड, भरूच

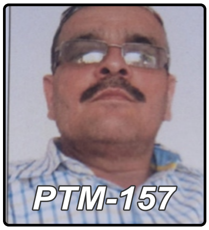

श्री कन्हैया लाल, (ओजटू वाले) बैंगलुरू

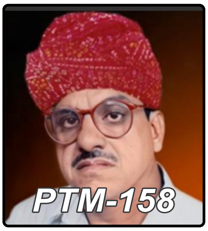

श्री शंकरलाल जांगिड, झुंझुनूं

श्रीमती उषा बरड़वा धर्मपत्नी श्री आनन्द बरड़वा, कोटा राज0

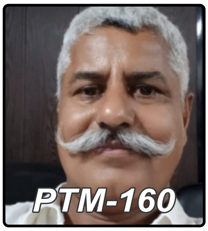

श्री देवेन्द्र शर्मा, उदयपुर, राजस्थान

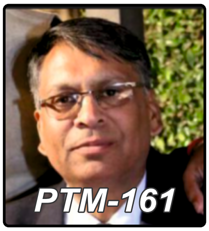

श्री नरोत्तम लाल जांगिड, फरीदाबाद, हरियाणा

श्री हजारी लाल शर्मा, जयपुर, राज0

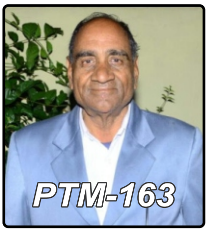

श्री भागीरथ मल जांगिड, जयपुर, राज0

श्री मदनलाल शर्मा, रायपुर छ0गढ़

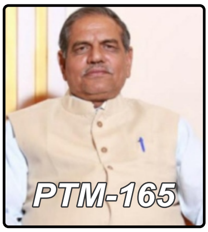

श्री पतराम शर्मा , गुरूग्राम, हरियाणा

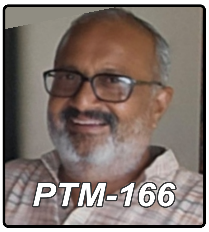

श्री बजरंग शर्मा , दुर्ग, छतीसगढ़

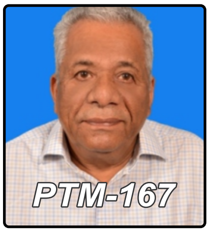

श्री विरदी चन्द शर्मा , रायपुर, छतीसगढ़

# वर्तमान प्रधान के कार्यकाल में बने हुए एक लाख रुपये के प्लेटिनम सदस्य

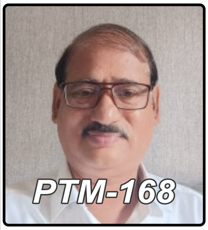

श्री ओमप्रकाश जांगिड, रायपुर, छतीसगढ़

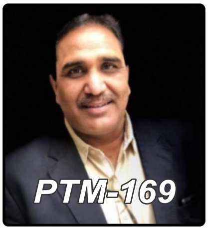

श्री संतलाल शर्मा, बैंगलुरू, कर्नाटक

श्री जगन नाथ जांगिड, रेवाड़ी, हरियाणा

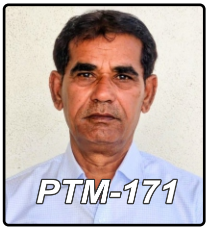

श्री राजकुमार चोयल,पोलो ग्राउंड, सीकर

श्री गोपालदास शर्मा, रायपुर, छ0गढ़

श्री विनोद कुमार शर्मा, रायपुर, छ0गढ़

श्री राधेश्याम शर्मा, जयपुर, राज0

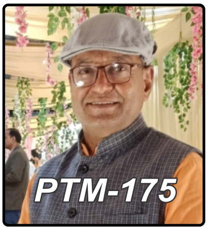

श्री प्रहलाद राय जांगिड, दूजोद, सीकर, राज0

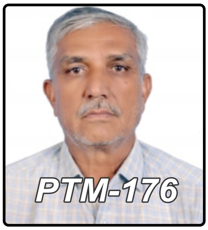

श्री भोलाराम शर्मा, दुर्ग, छतीसगढ़

श्री रमेश शर्मा, रायपुर, छतीसगढ़

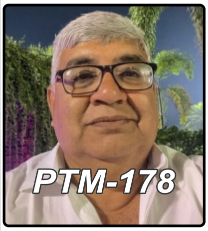

श्री सुरेन्द्र कुमार शर्मा, अहमदाबाद, गुज0

श्री नीलेश कुमार शर्मा, अहमदाबाद, गुज0

श्री अनुराग नीलेश कुमार शर्मा, अहमदाबाद, गुज0

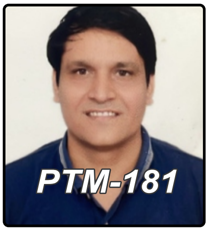

श्री ओम प्रकाश जांगिड, वापी वलसाड, गुज0

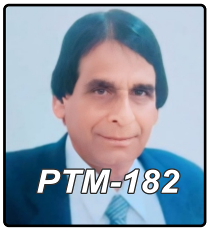

श्री शिवपाल जांगिड, बेटमा, इन्दौर, मध्य प्रदेश

श्री उमेदराम जांगिड, वापी, वलसाड, गुजरात

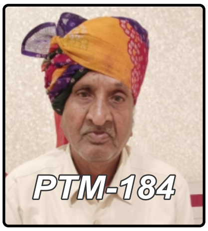

श्री द्वारका प्रसाद शर्मा, वापी, वलसाड, गुजरात

श्री अरुण कुमार, आया नगर, दिल्ली

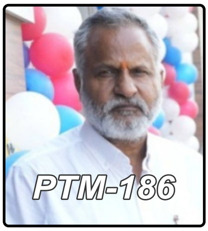

श्री सुरेश जांगिड, दक्षिणी दिल्ली

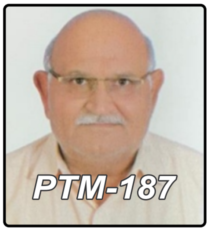

श्री श्रीराम जांगिड, बाजवा,वडोदरा, गुजरात

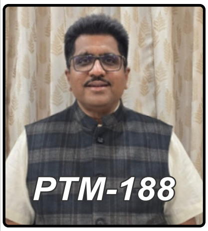

श्री जसाराम सुथार, पणजी, नॉर्थ गोवा

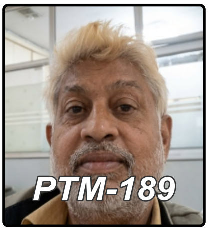

श्री देवेन्द्र कुमार शर्मा, मेरठ, उत्तर प्रदेश

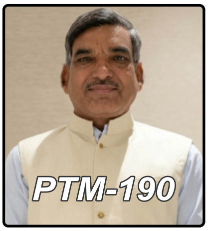

श्री रवि दत्त शर्मा, अहमदाबाद,गुजरात

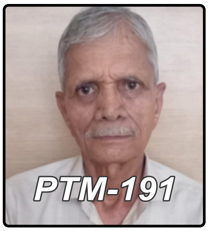

श्री रमेश चंद्र शर्मा, अंजनी नगर, इंदौर

श्री मुरारीलाल शर्मा, अहमदाबाद, गुजरात

# वर्तमान प्रधान के कार्यकाल में बने हुए एक लाख रुपये के प्लेटिनम सदस्य

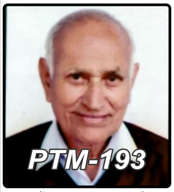

श्री वीरेंद्र कुमार, शामली, उत्तर प्रदेश

श्री महेंद्र जांगिड (पवार), कैलाशपुरी,इंदौर, म.प्र.

श्री सांवरमल शर्मा, दक्षिण गोवा,गोवा

श्री अशोक शर्मा,जवाहर नगर,देवास,म.प्र.

श्री धीरज शर्मा, सेक्टर-ई, इंदौर,म.प्र.

श्री ओम प्रकाश जांगिड, शाजापुर,म.प्र.

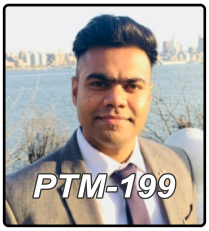

श्री विवेक शर्मा, व्यंकटेश नगर,इंदौर,म.प्र.

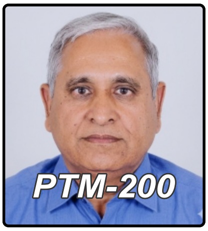

श्री जसमेंद्र शर्मा, होरामावु,बेंगलुरु,कर्नाटक

श्री गोपेश जांगिड, ढेहर का बालाजी,जयपुर

श्री विमल कुमार शर्मा, ढेहर का बालाजी,जयपुर

श्री सुरेंद्र जांगिड, सीकर रोड,जयपुर, राज.

## जहां से महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू बने थे बैरिस्टर, वहीं से जोधपुर के यश जांगिड को मिली कॉल्ड टू द बार उपाधि

जोधपुर के युवा अधिवक्ता यश जांगिड ने लंदन में एक महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय उपलब्धि हासिल करते हुए **द ऑनरेबल सोसाइटी ऑफ द इनर टेम्पल के ट्रिनिटी कॉल 2026 समारोह** में आधिकारिक रूप से **बैरिस्टर के रूप में कॉल्ड टू द बार की उपाधि प्राप्त की।** इनर टेम्पल विश्व की सबसे प्रतिष्ठित विधिक संस्थाओं में से एक है। यह वही ऐतिहासिक संस्था है, जहां से राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने भी बैरिस्टर के रूप में अपनी विधिक यात्रा प्रारंभ की थी। इंग्लैंड एवं वेल्स के बार में शामिल होना विश्व की सबसे सम्मानित कानूनी उपलब्धियों में माना जाता है। यश जांगिड़ की यह उपलब्धि न केवल उनकी व्यक्तिगत सफलता है, बल्कि जोधपुर और राजस्थान के लिए भी गौरव का विषय है। उनकी इस सफलता से जांगिड समाज सहित पूरे राजस्थान में हर्ष और गौरव का वातावरण है।

यश के पिताजी धर्मेन्द्र जांगिड और माताजी श्रीमती किरण जांगिड ने बताया कि यश बचपन से ही पढ़ाई मे बहुत रूचि रखता है। यश जांगिड ने हाल ही में चार्टर्ड इंस्टीट्यूट ऑफ आर्बिट्रेटर्स (CIArb), लंदन की मॉड्यूल-1 परीक्षा भी सफलतापूर्वक उत्तीर्ण की है। यह योग्यता अंतरराष्ट्रीय वाणिज्यिक मध्यस्थता के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण पेशेवर मान्यता मानी जाती है। वर्ष 2026 में राजस्थान उच्च न्यायालय द्वारा उन्हें सर्जन एट लाइटम के रूप में भी अनुशंसित किया गया है। इसके अतिरिक्त, वे वर्तमान में इंटरनेशनल बार एसोसिएशन (IBA) के एशिया पैसिफिक रीजनल फोरम की अकादमिक एवं प्रोफेशनल डेवलपमेंट कमेटी में लायजन ऑफिसर के रूप में कार्यरत हैं। इस भूमिका में वे एशिया-प्रशांत क्षेत्र के विधि विशेषज्ञों और विभिन्न विधिक संस्थानों के साथ कार्य कर रहे हैं। यश जांगिड़ की यह उपलब्धि उनकी प्रतिभा, मेहनत, लगन और विधि के क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आगे बढ़ने की प्रतिबद्धता का प्रमाण है। एक युवा भारतीय अधिवक्ता के रूप में उन्होंने वैश्विक विधिक मंच पर अपनी पहचान स्थापित कर जोधपुर, राजस्थान और जांगिड समाज का नाम गौरवान्वित किया है।

महासभा के प्रधान रामपाल शर्मा ने यश जांगिड की इस ऐतिहासिक एवं गौरवपूर्ण उपलब्धि पर उन्हें हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं प्रेषित की हैं। महासभा प्रधान ने यश जांगिड के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए कहा कि वे आने वाले समय में विधि के क्षेत्र में और भी ऊंचे मुकाम हासिल करें तथा अपनी प्रतिभा और ज्ञान के माध्यम से देश, समाज और परिवार का नाम रोशन करते रहें।

*****

# वर चाहिए

1. Wanted a suitable match for healthy & pleasant personality Jangid Brahmin girl, DOB: 13.07.2000, Birth Time & Place: 3:14 PM New Delhi, residence in New Delhi, Education: Dr. B.A.M.S, Priority:- B.A.M.S. MBBS and lived in Delhi, . Father Retired from Army as a Subedar Mechinical Engg Diploma, Shasan/Gotras: Self: Rajotiya, Mother: Vats, Grandmother: Dhamu , Contact No: Rajender Prasad - 7011296729 / 9968072716,

**भूल सुधार -** जुलाई माह के पृष्ठ संख्या 60 पर वधू चाहिए वैवाहिक विज्ञापन में दूरभाष नंबर - **9099335885** की जगह, संपर्क: पिता- सुरेश जांगिड **(8852018704, 9099335385) पढ़ा जाए, त्रुटि के लिए खेद है।**

# वधू चाहिए

1.Wanted a suitable match for Jangid Brahmin boy, DOB: 07.08.1995, Height – 5'11", Permanent address: Village - Kheri Safa, PO - Kharak Bhura, Tehsil - Uchana Distt. - Jind (Haryana) – 126115, Academic Qualifications: Bachelor of Arts with Diploma in Firemen, Job / Profession: Supervisor in SIS Group, New Delhi Family Details: Father's profession: Farmer, Mother's profession: Anganwadi Worker, Sister's profession: Home Maker & married Gotras: Self: Bhere, Mother: Siddhar, Grandmother: Selwal , Contact No: Father - 8810683753

2. Wanted a suitable match for vegetarian Jangid Brahmin boy of DLF Gurgaon, D.O.B. 4th October 1996, height 5'10". Educational Qualification:-B. Tech in computer science, MBA (IIM Bangalore) and giving service as a senior software Engineer in Google. Gotra Khudania (Father), Dahiya (Mother), Jhuljulia ( Paternal Grandmother), Mariyan (Material Grand mother) Father: Vijay Sharm a (Own Business) Mother: Suman (Homemaker) Sibling: younger sister, B. Tech computer science & MBA Contact: 9810340014 (Father)

# गुरु पूर्णिमा : भारतीय ज्ञान परम्परा का अमर उत्सव

## "गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः॥"

भारतीय संस्कृति का मूल आधार यदि किसी एक तत्व पर टिका हुआ है, तो वह है -- गुरु परम्परा। विश्व की अनेक सभ्यताओं ने शिक्षा को ज्ञान प्राप्ति का माध्यम माना, किन्तु भारत ने शिक्षा को आत्मोन्नति, चरित्र निर्माण और मोक्ष का मार्ग बताया। इसीलिए भारतीय मनीषा ने गुरु को केवल शिक्षक नहीं, बल्कि अज्ञान के अंधकार से ज्ञान के प्रकाश की ओर ले जाने वाला दिव्य पथप्रदर्शक माना है। भारतीय संस्कृति में गुरु का स्थान माता-पिता से भी ऊपर बताया गया है, क्योंकि माता-पिता जन्म देते हैं, जबकि गुरु जीवन का उद्देश्य बताते हैं। गुरु मनुष्य को केवल अक्षरज्ञान नहीं देता, बल्कि उसके व्यक्तित्व का निर्माण करता है, जीवन के आदर्शों का संस्कार देता है और आत्मा को परम सत्य से जोड़ने का मार्ग प्रशस्त करता है।

श्रावण मास की पूर्णिमा को मनाया जाने वाला गुरु पूर्णिमा पर्व इसी सनातन गुरु-शिष्य परम्परा का महोत्सव है। यह केवल श्रद्धा व्यक्त करने का दिन नहीं, बल्कि भारतीय ज्ञान परम्परा, ऋषि संस्कृति और आध्यात्मिक चेतना का राष्ट्रीय उत्सव है। संस्कृत में "गुरु" शब्द की अनेक व्याख्याएँ मिलती हैं। प्राचीन ग्रन्थों में कहा गया है— "गु" का अर्थ है अंधकार तथा "रु" का अर्थ है उसका नाश करने वाला। अर्थात् जो अज्ञान रूपी अंधकार का नाश कर ज्ञान का प्रकाश फैलाए, वही गुरु है। स्कन्द पुराण में गुरु को ब्रह्मज्ञान का द्वार बताया गया है, जबकि उपनिषदों में गुरु के बिना आत्मज्ञान को असंभव माना गया है। भारतीय दर्शन में गुरु केवल विद्वान नहीं होता, बल्कि वह स्वयं अपने जीवन में सत्य, संयम, तप, करुणा और सदाचार का आदर्श प्रस्तुत करता है।

गुरु पूर्णिमा का संबंध महर्षि वेदव्यास से माना जाता है। इसी कारण इसे व्यास पूर्णिमा भी कहा जाता है। महर्षि कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास ने भारतीय ज्ञान परम्परा को व्यवस्थित स्वरूप प्रदान किया। उन्होंने— चारों वेदों का विभाजन किया। महाभारत जैसे विश्व के सबसे बड़े महाकाव्य की रचना की। अठारह महापुराणों का संकलन किया। ब्रह्मसूत्र की रचना की। श्रीमद्भागवत महापुराण का प्रणयन किया। यदि वेदव्यास न होते तो संभवतः वैदिक ज्ञान की विशाल परम्परा व्यवस्थित रूप में आज उपलब्ध नहीं होती। इसलिए सम्पूर्ण भारत उन्हें आदि गुरु के रूप में श्रद्धापूर्वक स्मरण करता है।

वैदिक युग में शिक्षा गुरुकुलों में दी जाती थी। छात्र गुरु के आश्रम में रहकर केवल वेदों का अध्ययन नहीं करते थे, बल्कि—आत्मानुशासन, श्रम, सेवा, संयम, प्रकृति संरक्षण, सामाजिक उत्तरदायित्व, राष्ट्रधर्म का भी अभ्यास करते थे। गुरुकुल शिक्षा

का उद्देश्य केवल विद्वान बनाना नहीं, बल्कि आदर्श नागरिक और श्रेष्ठ मनुष्य तैयार करना था। राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न ने महर्षि वशिष्ठ से शिक्षा प्राप्त की। भगवान श्रीकृष्ण और बलराम ने महर्षि सांदीपनि के आश्रम में अध्ययन किया। पाण्डवों और कौरवों ने गुरु द्रोणाचार्य से शस्त्र एवं शास्त्र दोनों की शिक्षा प्राप्त की।

उपनिषदों में बार-बार यह निर्देश मिलता है कि ज्ञान प्राप्त करने के लिए योग्य गुरु की शरण में जाना आवश्यक है। मुण्डक उपनिषद् कहता है—**"तद्विज्ञानार्थं स गुरुमेवाभिगच्छेत्।"** अर्थात् ब्रह्मज्ञान प्राप्त करने के लिए गुरु के पास जाना चाहिए। इसी प्रकार तैत्तिरीय उपनिषद् में कहा गया है—**"मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। आचार्यदेवो भव।"** यहाँ आचार्य को देवतुल्य मानकर उनके प्रति श्रद्धा रखने का उपदेश दिया गया है।

यदि भारतीय इतिहास का अध्ययन किया जाए तो स्पष्ट होता है कि प्रत्येक युग के निर्माण में किसी न किसी गुरु की निर्णायक भूमिका रही है। महर्षि वशिष्ठ ने श्रीराम को आदर्श शासन का मार्ग दिखाया। विश्वामित्र ने राम और लक्ष्मण को शस्त्रविद्या प्रदान की। द्रोणाचार्य ने अर्जुन को महान धनुर्धर बनाया। भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को भगवद्गीता का अमर ज्ञान दिया। आचार्य चाणक्य ने चन्द्रगुप्त मौर्य को तैयार कर अखण्ड भारत की नींव रखी। आदि शंकराचार्य ने सनातन वैदिक धर्म का पुनर्जागरण किया। स्वामी रामानुज, रामानन्द, कबीर, गुरु नानक, तुलसीदास, स्वामी विवेकानन्द, महर्षि दयानन्द सरस्वती और अनेक संतों ने समाज को नई दिशा प्रदान की। स्पष्ट है कि भारत का इतिहास केवल राजाओं का इतिहास नहीं, बल्कि गुरु-परम्परा का इतिहास भी है।

वर्तमान समय में शिक्षा का स्वरूप अत्यधिक तकनीकी और व्यावसायिक हो गया है। सूचना (Information) की उपलब्धता पहले की तुलना में कहीं अधिक है, किन्तु ज्ञान (Knowledge) और विवेक (Wisdom) का संकट भी उतना ही गहरा है। इंटरनेट, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और डिजिटल माध्यम ज्ञान के साधन हो सकते हैं, परन्तु वे गुरु का स्थान नहीं ले सकते। मशीनें जानकारी दे सकती हैं, परन्तु जीवन-मूल्य, नैतिकता, संवेदनशीलता और चरित्र निर्माण का कार्य आज भी गुरु ही करता है।यही कारण है कि गुरु पूर्णिमा आज के युग में भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी वैदिक काल में थी। ************

## श्रद्धांजलि सुमन

अत्यंत दुःख के साथ सूचित किया जाता है कि **डॉ. दिनेश जांगिड 'सारंग' (IRS) के पिता श्री राधाकिशन जांगिड सुपुत्र स्व. श्री गोपाराम जांगिड**, नि. फरड़ौद, नागौर का स्वर्गवास दिनांक 23-07-2026, गुरूवार को हो गया है। **स्वर्गीय श्री राधाकिशन जांगिड** एक सरल स्वभाव, मिलनसार, हंसमुख एवं धर्मपरायण व्यक्तित्व के धनी थे। वे अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़ कर गये है।

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा तथा समस्त कार्यकारिणी परम पिता परमेश्वर से प्रार्थना करती है कि वह दिवंगत पुण्यात्मा को अपने श्री चरणों मे उचित स्थान प्रदान करे और शोकाकुल परिवार को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे। हम सभी आपके समस्त परिवार के प्रति गहरी संवेदना प्रकट करते हुए दिवंगत पुण्यात्मा के श्री चरणों मे श्रद्धासुमन और भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

॥ ॐ शांति ॐ शांति ॐ शांति ॥

****

अत्यंत दुःख के साथ सूचित किया जाता है कि महासभा के संगठन मंत्री एवं कर्मठ कार्यकर्ता **श्री केदारमल जांगिड,** निवासी खाटू श्यामजी, जिला सीकर (राजस्थान) का आकस्मिक स्वर्गवास दिनांक 5 अगस्त, 2026 को हो गया है। **स्वर्गीय श्री केदारमल जांगिड** सरल स्वभाव, मिलनसार व्यक्तित्व एवं समाज के प्रति समर्पित कर्मठ कार्यकर्ता थे। महासभा के संगठन को मजबूत बनाने में उनका योगदान सदैव स्मरणीय रहेगा।

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा तथा समस्त कार्यकारिणी परम पिता परमेश्वर से प्रार्थना करती है कि वह दिवंगत पुण्यात्मा को अपने श्री चरणों मे उचित स्थान प्रदान करे और शोकाकुल परिवार को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे। हम सभी आपके समस्त परिवार के प्रति गहरी संवेदना प्रकट करते हुए दिवंगत पुण्यात्मा के श्री चरणों मे श्रद्धासुमन और भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

॥ ॐ शांति ॐ शांति ॐ शांति ॥ ****

## देश के 80वें स्वतंत्रता दिवस पर महासभा प्रधान रामपाल शर्मा द्वारा भगवान विश्वकर्मा मंदिर, कनका नगर, बैंगलूरू मे झण्डारोहण समारोह की कुछ झलकियां

## देश के 80वें स्वतंत्रता दिवस पर महासभा महामंत्री सांवरमल जांगिड द्वारा महासभा मुंडका भवन, दिल्ली मे झण्डारोहण समारोह की कुछ झलकियां

# BHARAT WHEEL

Manufacturer of Rims for Tractor,
Motor Vehicle, Earthmoving Machine.

*Our valued customers*

VECTRA MANITOU GROUP JCB ESCORTS

Bharat Wheel Private Limited
Muzaffarnagar Road, Shamli - 247776, UP, India
Email : info@bharatwheel.com
www.bharatwheel.com

**SHARMA**
Group of companies

25 YEARS OF DRIVEN EXCELLENCE
SHARMA HYUNDAI
SINCE 1998

LATE SHREE
**KANHAIYALAL SHARMA**
(CHOYAL)

**HYUNDAI**

AUTHORISED HYUNDAI DEALER
**SHARMA HYUNDAI**
Since 1998

| Ashram Road<br>Call : 9099978327 | Satellite<br>Call : 9099978334 |
|---|---|
| **Parimal Garden**<br>Call : 9099978328 | **Naroda**<br>Call : 9099938777 |

**TOYOTA**

Authorised Toyota Dealer : **NARMADA TOYOTA**
VADODARA : 9099916601 I ANAND : 9099916631/32

MORRIS GARAGES
Since 1924

Authorised MG Dealer :
**Kayakalp Cars Pvt. Ltd.**
Zorba Complex, Akshar chowk, OP Road, Vadodara.
Ph : 6358800230/31

Posted at:L.P.C. DELHI
R.M.S., Delhi-06



Registered With The Registrar of News Papers For INDIA, Under Regd. No. 25512/72

D.L.(DG-11)/8009/2024-26
Posted Under Licence No. U(DN)39/2024-26 of Post without prepayment of postage

Mahindra Rise

महिन्द्रा का अधिकृत शोरूम एवं वर्कशॉप

# भागीरथ मोटर्स (इं) प्रा.लि.

पर्सनल वाहनों के लिए सम्पर्क करें मो. 9109154144, 9109154152
कमर्शियल वाहनों के लिए सम्पर्क करें मो. 9109154153

शोरूम : सर्वे नं. 379/2,ग्राम-डाबला, रेवाड़ी, आगरा रोड, आर.डी. गार्डी कॉलेज के पास, उज्जैन (म.प्र.)

# Bhagirth & Brothers

**Bus & Truck Body Manufacture Since 1960**

**Organization :**

Audi Automobiles, Pithampur
Bhagirath Coach & Metal Fabricators Pvt. Ltd., Pithampur
B & B Body Builders, A.B. Road, Indore
Rohan Coach Builders, 29Nehru park, Indore

**Adm. Office**
29, Nehru Park Road, Indore-1(M.P.)
Phone : 0731-2431921, Fax" 0731-2538841

**Works:**
Plot No. 199-b, Sector-1
Pithampur Dist. Dhar (M.P.) 454775
Phone : 07292-426150 to 70

Website : www.bhagirathbrothers.com

सेवा में

Posting Date: 22-27 Each Month
Publication Date: 15 August 2026
Weight: 100 gms. Cost: Rs. 240 Yearly

प्रेषक
अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा
440, हवेली हैदर कुली,
चाँदनी चौक, दिल्ली-110006

Printed, Published by Sh. J.P. Sharma, K-29, Ward-1, Desu Road, Mehrauli, New Delhi-30, on behalf of (Owner) Akhil Bhartiya Jangid Brahmin Mahasabha, 440, Haveli Haider Quli, Chandni Chowk, Delhi-06, Printed at M/s. Kamal Printers, Anand Parbat, N.D.-05, Ph.:9810622239, Published at Delhi, Editor Sh. Ram Bhagat Sharma, 1741 Sector - 23 B Chandigarh (UT)